जौनपुर नगर में आवासीय पर्यावरण
(HOUSEHOLD ENVIRONMENT IN JAUNPUR CITY)
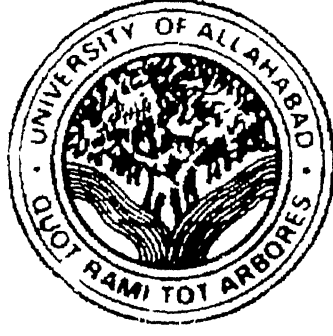
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ०प्र०)

के

भूगोल विषय

में

डी० फिल्० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2002

निर्देशक

प्रो० सविन्द्र सिंह

अध्यक्ष, भूगोल विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

शोधकर्त्री

कु० अमृता श्रीवास्तव

नामांकन संख्या 98AU/1191

प्राक्कथन

मनुष्य के जीवन को प्राथमिक रूप से उनके घरो का पर्यावरण ही प्रभावित करता है। विश्व के अनेक नगरो के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किये जा चुके है परन्तु भारत मे इस दिशा मे बहुत कम ध्यान दिया गया है। विशेष रूप से छोटे–छोटे शहरो के आवासीय पर्यावरण पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है क्योकि सम्पूर्ण जनसख्या का लगभग एक तिहाई भाग नगरो या उपनगरो मे निवास करता है। यदि छोट–छोटे सभी नगरो के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया जाय तो सम्पूर्ण भारत की एक तस्वीर उभर कर सामने आयेगी और समस्याओ के निराकरण की दिशा मे योजनाबद्ध तरीके से ठोस कदम उठाये जा सकते है। इसी उद्‌देश्य को ध्यान मे रख कर जौनपुर नगर के आवासीय पर्यावरण पर मैने शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किया हैं जौनपुर नगर मेरी जन्म भूमि है एंव मेरी सम्पूर्ण शिक्षा यही पर हुयी हैं उपरोक्त शोध कार्य के लिए के लिए इस नगर का चयन मेरे लिये हर दृष्टि से उपयुक्त समझकर निर्देशक महोदय द्वारा किया गया क्योकि किसी दूसरे अनजान नगर मे घर–घर जाकर व्यक्तिगत सर्वेक्षण कर के आकडे एकत्रित करना किसी महिला के लिए अपेक्षाकृत कठिन कार्य होता। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मे विभिन्न आय वर्गो के लोगो के आवास का व्यक्गित सर्वेक्षण कर के आकडे एकत्रित किये गये है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तीन भागों एव पाच अध्यायो मे आबद्ध हैं। भाग एक मे सभी वर्गो का सामान्य विवरण एव चयनित आवासो के सम्बन्ध मे उल्लेख किया गया है यह सब अध्याय एक में समाहित है इस अध्याय मे प्रत्येक वार्ड की जनसख्या, परिवार के औसत सदस्यों की संख्या, एक मकान मे ओसत परिवारो की सख्या, साक्षरता स्तर एव आय का विवरण। भाग दो मे जौनपुर शहर के मकानो की

पर्यावरणीय स्थिति का विवरण है। यह भाग द्वितीय तृतीय, चतुर्थ एव पचम चार अध्याओ मे विभक्त है। द्वितीय अध्याय मे जौनपुर नगर के घरो की पर्यावरणीय स्थिति का वर्णन है। तृतीय अध्याय मे जौनपुर नगर मे जलापूर्ति एव अपवाह की स्थिति का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय मे जौनपुर नगर मे स्थित आवासो मे ठोस अपशिष्ट एव अनुपयोगी वस्तुओ के विसर्जन एव खाद्य पदार्थो के रख–रखाव की स्थिति का वर्णन है। अध्याय पाच मे जौनपुर नगर के घरो मे वायु प्रदुषण एव ध्वनि प्रदुषण की स्थिति का वर्णन है। भाग तीन मे जौनपुर नगर का पर्यावरण व स्वास्थ्य का सम्बन्ध तथा निष्कर्ष एव सुझाव दिया गया है।

आभारोक्ति

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मै सर्वप्रथम अपने निर्देशक आदरणीय प्रो0 सविन्द्र सिह के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हू जिन्होने मेरी मातृभूमि जौनपुर नगर को ही मेरी सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए चयनित किया और समय–समय पर कुशलतापूर्वक इस कार्य को सम्पन्न करने मे मार्गदशन किया। जौनपुर नगर जैसे मुस्लिम बहुल क्षेत्र वाले मुहल्लो मे शोध से सम्बन्धित सर्वेक्षण कार्य के लिए घर–घर मे जाकर जानकारी प्राप्त करना एक महिला के लिए अत्यन्त जटिल कार्य है, जिसे सुचारू रूप से सम्पन्न करानें मे मेरे पिताजी का बहुमूल्य योगदान रहा, जो सर्वेक्षण कार्य मे सदैव मेरे साथ गये। उनके सहयोग के बिना मेरे लिये यह कार्य सम्पन्न कर पाना सभव नही था। इसके लिये मै अपने पूज्य पिताजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हू।

मै नगर परिषद जौनपुर की तत्कालीन अध्यक्ष श्रीमती सध्यारानी श्रीवास्तव की आभारी हू जिन्होने अपने कर्मचारियो के माध्यम से जौनपुर नगर से सम्बन्धित जानकारी को उपलब्ध कराया तथा अभिलेखीय विवरण प्राप्त करने मे सहयोग प्रदान किया। तत्कालीन जिलाधिकारी श्री नवनीत सहगल (आई ए एस.) ने अपने प्रभाव का उपयोग करके सचिवालय लखनऊ से जौनपुर नगर के वार्डो के विभाजन युक्त मानचित्र की फोटो कापी दिलाने मे सहयोग प्रदान किया इसके लिए मै उनकी आभारी हू मैं अपरजिलाधिकारी वित्त एव राजस्व श्री भास्कर उपाध्याय के प्रति भी आभार प्रकट करती हू जिन्होने जौनपुर नगर के सभी वार्डो के मतदाता सूची की जानकारी प्राप्त करने मे सहयोग प्रदान किया।

मै तिलकधारी महाविद्यालय के भूगोल विभाग मे रीडर परम पूज्य डॉ0 देवी

प्रसाद उपाध्याय जी के प्रति विशेष रूप से आभारी हू जिन्होने शोध कार्य मे आने वाली समस्याओ का निराकरण किया एव बहुमूल्य सुझाव प्रदान किया।

प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न करने मे जिन ग्रन्थो से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहायता मिली है उनके रचनाकारो के प्रति मै अपना विनम्र आभार प्रकट करती हू साथ ही सेन्ट्रल लाइब्रेरी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे कार्यरत पदाधिकारी व कर्मचारियो के प्रति भी आभारी हू जिन्होने सम्बन्धित पुस्तको को पढने का अवसर प्रदान किया।

अन्त मे मै अपनी पूज्य माता जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हू जिन्होने शोध कार्य के लिए सदैव मेरा उत्साह वर्धन किया और अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया।

दिनाक– 25 12 2002

अमृता श्रीवास्तव
अमृता श्रीवास्तव

विषय सूची

भाग दो

जौनपुर नगर मे घरो की पर्यावरणीय स्थिति

अध्याय दो

अध्याय तीन

जौनपुर नगर में पेय जलापूर्ति एव अफवाह की स्थिति

अध्याय चार

जौनपुर नगर मे स्थित आवासों में ठोस अपशिष्ट व अनुपयोगी वस्तुओ विसर्जन एवं खाद्य पदार्थो के रख रखाव की स्थित

भाग तीन

जौनपुर नगर मे आवासीय पर्यावरण व स्वास्थ्य एव निष्कर्ष

सारणी - सूची

पृष्ठ संख्या

प्लेट्स की सूची

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द का शब्दकोषीय अर्थ होता है आस–पास या पास पडोस, मानव जन्तुओ या पौधो की वृद्धि एव विकास को प्रभावित करने वाली वाह्य दशाये, कार्य प्रणाली तथा जीवन यापन की दशाये आदि। किसी स्थान विशेष मे मनुष्य के आस–पास भौतिक वस्तुओ (स्थल, जल, मृदा, वायु) का आवरण, जिसके द्वारा मनुष्य घिरा होता है, का पर्यावरण कहा जा सकता है। पर्यावरण को प्रभावित करने मे मनुष्य एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यावरण की परिभाषा हमारे हित अभिरूचि एव प्राथमिकताओ द्वारा निश्चित होते है। हमारा हित, स्थानो–जिस पर हम रहते है, वायु जिससे हम सास लेते है आहार जिसे हम खाते है, जल जिसे हम पीते है तथा ससाधन जिसे हम अपनी अर्थव्यवस्था को पुष्ट बनाने के लिए पर्यावरण से प्राप्त करते है, की गुणवत्ता मे है।

आजकल विश्व स्तर पर पर्यावरणीय ह्रास एक गभीर चिन्ता का विषय बना हुआ है, किन्तु मनुष्य अपने घरो की पर्यावरणीय समस्याओ के प्रति चिन्तित नही है। विश्व स्तर पर पर्यावरणीय ह्रास, ओजोन क्षरण, एसिड वर्षा आदि विषयो पर तो बहुत चर्चा होती रहती है परन्तु लोग इन बातो पर कम ध्यान देते है कि यह उनके घरो का पर्यावरण ही है जो मनुष्य के जीवन को प्राथमिक रूप से प्रभावित करता है और अन्तत. सम्मिलित पर्यावरण को जन्म देता है।

हमारे भारत देश मे लोग लगभग सोलह घण्टे अपने घरो मे ही समय व्यतीत करते है। यदि घरो में हवादार कमरो का अभाव हो, पानी की निकासी का समुचित साधन नही है, घर से निकलने वाले कूडे कचरे को घर से दूर उचित स्थान पर विसर्जित करने की सुविधा नही है, स्वच्छ पीने का पानी और उपयुक्त सफाई की व्यवस्था नही है, खाने पीने की चीजो को सुरक्षित ढंग से रखने की व्यवस्था नही है तो मनुष्य का जीवन वैश्विक पर्यावरणीय ह्रास की तुलना में इनसे ही अधिक प्रभावित होता है। इसलिए घरो के और उसके आसपास के पर्यावरण के सम्बन्ध मे अध्ययन एवं उसमें सुधार किये जाने की आवश्यकता है, और इस सम्बन्ध मे लोगो को जागरूक किये जाने की आवश्यकता है। यद्यपि भारत गावो का देश है, सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 27 प्रतिशत भाग नगरो या उपनगरों मे निवास करता है। ग्राम्यांचलो से हटकर बडी तेजी से लोग नगरो एव उपनगरो मे निवास के लिए आने लगे हैं

जिससे नगरो मे आबादी का दबाव दिनोदिन बढता जा रहा है। बढती हुई आबादी भी नगरो एव उपनगरो मे पर्यावरणीय समस्या का कारण बनती जा रही है। प्रत्येक वर्ष लगभग 18 मिलियन लोग गावो से शहर की ओर रोजगार की तलाश मे या अन्य कई कारणो से आते है। इस बढी हुयी अतिरिक्त जनसख्या का दबाव नगरीय ससाधनो पर पडता है जो पर्यावरण प्रदूषण को बढाता है। प्रदूषण, विशेष रूप से घरो का, इसलिए प्रभावित होता है क्योकि स्वच्छ जल की आपूर्ति, आवागमन के साधन व आवश्यकतानुसार विद्युत आपूर्ति का अभाव हो जाता है। आबादी का 1/8 भाग झुग्गी झोपडी मे रहने के लिए विवश है। आबादी के लगभग आधे भाग के लोगो को 20 वर्ग मीटर से कम आवासीय स्थल उपलब्ध है। आबादी का 1/3 भाग अस्वच्छ स्थानो पर रहने के लिए विवश है और लगभग इतने ही लोग स्वच्छ पेयजल भी नही प्राप्त कर पाते है।

इस प्रकार नगरो मे रहने वाले करोडो लोगो के समक्ष स्वच्छ पेयजल एव स्वच्छ आवास की समस्या है। आर्थिक दृष्टि से पिछडे गरीब व्यक्तियो के पडोस मे निवास करने के कारण भी समृद्ध व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है, कारण गरीब व्यक्ति स्वय सफाई से नही रह पाता और उनके परिवार से चेचक मलेरिया डिफ्थीरिया आदि सक्रामक रोग फैलते रहते है। ऐसी स्थिति मे आवासीय पर्यावरण का अध्ययन और उसमे सुधार के उपयो का महत्व बढ जाता है। प्रस्तुत प्रयास विभिन्न आय वर्गो के व्यक्तियो के आवासीय पर्यावरण के अध्ययन एव उनमे अपेक्षित सुधार को ध्यान मे रखकर व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर किया गया है। यह अति आवश्यक हो गया है कि नगरो मे घर–घर जाकर सर्वेक्षण करके घरो के पर्यावरणीय समस्या पर शोध कार्य किया जाय और जनमानस में उन समस्याओ के निराकरण के लिए जागरूकता पैदा की जाय। घरो–घरो मे जाकर किये गये सर्वेक्षण से पर्यावरणीय समस्याओ के निराकरण के न केवल विभिन्न उपाय एवं रास्ते सामने आयेगे बल्कि जनसामान्य हेतु गृहो के पर्यावरणीय समस्या के प्रति जागरूकता पैदा करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों मे आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर उल्लेखनीय अध्ययन किये गये हैं जिनमें Mc Granahan, (1991); Kin IK Ki (1991); Hardoy et. al. (1992); Songsore (1992); Songsore and Mc Granahan (1993);

Izeougu (1989); Cairnerves (1990); Benneh et. al. (1993) के कार्य महत्वपूर्ण है।

Songsore (1992) ने घाना के महानगर अक्रा के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया था जिसमे उपरोक्त नगर के पेयजल, सफाई, वायुप्रदूषण, घर क अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट अपशिष्ट के विसर्जन, घरो मे कीटाणु, मच्छर आदि के प्रकोप सम्बन्धी पर्यावरणीय समस्या का अध्ययन किया था। इन्होने पाया कि इस तरह की समस्याये सभी आय वर्ग के परिवारो में पायी जा सकती है विशेषकर निम्न आय वर्ग के व्यक्तियो के आवासो मे व उसके आसपास निवास करने वाले पडोसियो के आवासो मे ऐसी समस्या प्रबल रूप से पायी जाती है। गरीबी पर्यावरणीय समस्या का विशेष कारक होती है। बाद मे 1993 मे Songsore और Mc Grahanan ने ग्रेटर महानगर अक्रा के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया जिसमे घरो के जल के अपवाह, सफाई, आवासीय समस्या, घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव, घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण, भोज्य पदार्थों के रख रखाव आदि से सम्बन्धित पर्यावरणीय समस्या और उसके स्वास्थ्य से सम्बन्ध का अध्ययन किया था। इनका शोध कार्य स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि घरो मे निवास करने वाले लोगो के स्वास्थ्य में सुधार लाना स्थायी रूप से तभी सभव हो सकेगा जब उनके आवासो की पर्यावरणीय समस्या मे सुधार लाया जाय।

हाल ही मे अलीगढ नगर के आवासीय पर्यावरण पर श्री अतुकुर रहमान द्वारा 1995 मे शोध कार्य किया गया। वर्तमान मे इलाहाबाद नगर के आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर श्री अनुपम पाण्डेय द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है।

उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध कार्य मे जौनपुर शहर के आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर अध्ययन का प्रयास किया गया है। यह शहर पर्यावरणीय समस्या के शोध कार्य के लिए इसलिए चुना गया क्योंकि पूर्व में बडे-बडे महानगरों में प्रदूषण के विभिन्न आयामो पर शोध कार्य किये जा चुके है परन्तु छोटे-छोटे शहरो पर इस दिशा मे होने वाले शोध कार्य पर कम ध्यान दिया

गया है। शहरो मे रहने वाली कुल आबादी का 70 प्रतिशत भाग छोटे शहरो मे निवास करता है। छोटे शहरो मे रहने वाले लोग बडे शहरो मे रहने वाले लोगो की अपेक्षा पर्यावरणीय समस्या से ज्यादा प्रभावित रहते है। वर्तमान अध्ययन मे विशेष रूप से निम्नलिखित बातो पर ध्यान दिया गया है–

(1) जौनपुर नगर के २६ वार्डों का एव उनमें सम्मिलित मुहल्लो का सामान्य अध्ययन-

जनसख्या का घनत्व, प्रत्येक घरो मे निवास करने वाले औसत व्यक्तियो की सख्या, प्रत्येक मकान मे रहने वाले औसत परिवारो की सख्या, शैक्षिक स्तर, एव आय।

(2) चयनित मकानों का सामान्य अध्ययन-

आय की दृष्टि से वर्गीकरण, पारिवारिक स्तर, शैक्षिक, व्यवसायिक एव प्रवजन का अध्ययन।

(3) घरों व घरों के स्नान घर प्रसाधन एवं उनकी सफाई की स्थिति का आंकलन-

मकान के प्रथम तल के प्रयोग मे आने वाले क्षेत्र का अध्ययन, कमरो की कुल सख्या और उनका क्षेत्रफल, प्रतिव्यक्ति औसत प्रयोग मे आने वाला विभाग, वातायन की स्थिति स्नान घर एव शौचालय की सुविधा, शौचालयो के प्रकार, घरो मे कूडो के एकत्रित करने एव उन्हे विसर्जित करने के तौर तरीके, एक शौचालय को प्रयोग मे लाने वाले व्यक्तियो की सख्या।

(4) घरों में पेयजल आपूर्ति का स्रोत पानी की निकासी का उपाय-

पेयजल आपूर्ति की गुणवत्ता, जलापूर्ति की मात्रा, पानी सग्रह के तरीके, अनुपयोगी पानी के विसर्जन का तरीका, मकान के चारो ओर पानी निकासी के लिए बनी नालियों की स्थिति नालियो के प्रकार आदि।

(5) घरों के कूड़ा करकट, अनुपयोगी ठोस पदार्थ एवं जूठन के विसर्जन के तरीके एवं भोज्य पदार्थ के रख-रखाव के तरीकों का अध्ययन-

कूड़ा करकट, एकत्रित करने वाले स्थान से उसे हटाये जाने की बारम्बारता,

मकान मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर एव उनसे बचाव के लिए अपनाये गये तरीके, भोजन ग्रहण करने का समय एव उन्हे रखने के तरीके, भोजन पकाने के लिए प्रयोग मे लाने वाले ससाधन।

(6) घरों में ध्वनि प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण का आकलन-

भोजन बनाने का स्थान, प्रयोग मे आने वाला ईंधन, घर मे बाहर से आने वाले धूए तथा घर के अन्दर से निकलने वाले धूये की स्थिति, ध्वनि प्रदूषण का स्रोत एव तीव्रता।

(7) घरों की आय से स्वास्थ्य एवं पर्यावरण में सम्बन्ध का परीक्षण—

विभिन्न आय वर्गों के चयनित घरो मे रोगग्रस्त व्यक्तियो की स्थिति, घरो मे सफाई, पेयजलापूर्ति की गुणवत्ता और हैजा पेचिश से प्रभावित परिवार के सदस्य, घरो के अन्दर वायु प्रदूषण की स्थिति एव उससे होने वाली बीमारिया, घरो के कूडा करकट के कारण एव पानी की समुचित निकासी न होने के कारण मलेरिया से प्रभावित लोग, गन्दे पानी के प्रयोग से होने वाला पीलिया रोग से प्रभावित घर के सदस्य।

(8) चयनित घरो के विभिन्न आय वर्गों वाले गृह स्वामियो से घरों के पर्यावरण को ठीक रखने के लिए सुझाये गये उपायो का अध्ययन।

आंकड़ों का आधार :-

प्रस्तुत शोध कार्य मे आकडो का सग्रह प्राथमिक एव द्वितीयक दोनो आधार पर किया गया है। यह शोध कार्य मुख्य रूप से घर घर जाकर किये गये व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर अर्थात प्राथमिक आकडों पर आधारित है। उदाहरण स्वरूप—

1— नगर का सर्वेक्षण

2— गृहस्वामियों से लिये गये साक्षात्कार

3– सरकारी अधिकारियो एव विभिन्न मुहल्ले मे रहने वाले गृहस्वामियो के साथ बातचीत का आधार।

ठीक–ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिए वार्डों मे बार–बार भ्रमण करके जनसम्पर्क किया गया। शोधकर्त्री द्वारा नगर के सर्वेक्षण का कार्य वर्ष 1999, 2000, एव 2001 मे किया गया। जानकारी प्राप्त करने हेतु मुख्य रूप से महिलाओ को चुना गया क्योकि घरो मे प्राय वही उपलब्ध रहती है और अपने घरो के अन्दर की सारी परिस्थितिया से अपेक्षाकृत ठीक ढग से अवगत कराने मे सक्षम रहती है।

आंकडों के द्वितीयक स्रोत के आधार :-

1– सिटी बोर्ड कार्यालय जौनपुर

2– जिला सूचना कार्यालय कचहरी जौनपुर

3– जल निगम कार्यालय

4– आवास विकास कार्यालय जौनपुर

शोध कार्य की विधिः-

वर्तमान शोध कार्य मे निम्नलिखित तरीके अपनाये गये है। प्राथमिक आकडे घरो की स्थिति, उसमे स्नानघर एव शौचालय की सुविधा, घरो मे जलापूर्ति, जल की निकासी की व्यवस्था, कूड़े करकट के विसर्जन की स्थिति, भोज्य पदार्थ के रखने की व्यवस्था, घर के अन्दर वायु एवं ध्वनि प्रदूषण की स्थिति आदि बातो की जानकारी प्रश्नोत्तरी के माध्यम से प्राप्त किये गये। (प्रश्नोत्तरी का प्रारूप शोध–प्रबन्ध के अन्त मे दिया गया है) एक गृह का तात्पर्य उसमें रहने वाले व्यक्तियो की सख्या और उनके द्वारा प्रयुक्त होने वाली आवश्यक आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु सग्रहित ससाधन एव मनोरजन के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरण है।

प्रस्तुत शोध कार्य मे प्रत्येक वार्ड से 20 से लेकर 113 चयनित मकानो का सर्वेक्षण किया गया। चयनित मकानों मे अन्तर वार्डो मे मकानो की सख्या के आधार पर किया गया है। घरों का चयन इस बात को ध्यान मे रखकर किया गया है कि वार्डो के अन्तर्गत अत्यन्त

गरीब न्यूनतम आय वाले व्यक्तियो के घरो की पर्यावरणीय स्थिति क्या है? इसी प्रकार मध्यम आय वर्ग वाले, उच्च आय वर्ग वाले एव अति उच्च आय वर्ग वाले व्यक्तियो के घरो की पर्यावरणीय स्थिति कैसी है, इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा कुल 1580 मकानो का चयन किया गया (8 53 प्रतिशत मकान अध्ययन के क्षेत्र बने)। आय की दृष्टि से चयनित मकानो को पाच वर्गो मे विभक्त किया गया है जिसे नीचे लिखित तालिका मे दर्शाया गया है।

सारणी .1 आय के आधार पर मकानों का वर्गीकरण :

आय समूह	आय प्रतिमाह रू0 मे	चयनित मकानो की सख्या	प्रतिशत
अत्यतिधिक कम	< 1,500 रू0	318	20 13
कम	1,500 – 2,999	283	17 91
मध्यम	3,000 – 4,999	412	26 07
उच्च	5,000 – 9,000	365	23 10
अति उच्च	> 9,000	202	12.79
कुल		1580	100 00

परीक्षण का आधारः-

इस शोध कार्य मे निम्नलिखित बिन्दुओ पर परीक्षण किया गया है।

1– गरीबी प्रदूषण का सबसे बडा कारण है।

2– घरों का वातावरण, घर की स्थिति, स्नानघर एव शौचालय की स्थिति, घरो मे पेयजल की आपूर्ति, घरो से पानी की निकासी एव घरो मे नाली की स्थिति, घरो के अन्दर कूडे करकट एव अनुपयोगी ठोस पदार्थों के एकत्रित करने एव विसर्जित करने की स्थिति, भोज्य पदार्थों के रख–रखाव की स्थिति एव घरों के अन्दर वायु एव ध्वनि प्रदूषण जो मनुष्य के जीवन एव उसके स्वास्थ्य को अत्यधिक प्रभावित करते है।

3– घरो में रहने वाले व्यक्तियो के स्वास्थ्य का सम्बन्ध उनकी आय एवं घर के पर्यावरण पर आधारित रहता है।

4– अत्यधिक न्यून आय वर्ग के गरीब व्यक्ति के घरो मे रहने वाले सदस्यो मे निम्नलिखित प्रकार की बीमारी पायी गयी– पेचिश, अतिसार, पीलिया, चेचक, निमोनिया, विभिन्न प्रकार के चर्मरोग, टाइफाइड, तपेदिक एव खासी जुकाम। उच्च आय वर्ग के व्यक्तियो के घरो मे अपेक्षाकृत पर्यावरणीय स्थिति अच्छी है और उनके परिवार के सदस्यो मे गरीब परिवार के सदस्यो को होने वाली बीमारिया आम तौर पर नही होती है। उच्च आय वर्ग के सदस्यो मे मानसिक तनाव हृदय रोग रक्त चाप एव मधुमेह जैसी बीमारिया पायी गयी।

अध्ययन का क्षेत्र :-

जौनपुर शहर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल मे स्थित है। यह वाराणसी से सुल्तानपुर, लखनऊ एव वाराणसी, फैजाबाद, लखनऊ रेलवे लाइनो के मध्य मे है। जौनपुर वाराणसी से 58 किमी उत्तर पश्चिम एव इलाहाबाद से 98 से उत्तर पूर्व, लखनऊ से 261 किमी दक्षिण पूर्व एव गोरखपुर से 178 किलोमीटर दक्षिण मे स्थित है। जौनपुर वाराणसी मण्डल मे आता है। इसका भूभाग $25^0 45'$ उत्तरी अक्षाश और $82^0 41'$ पूर्वी देशान्तीर रेखाओ पर स्थित है। यह समुद्र सतह से 261–290 फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। जौनपुर शहर जनपद जौनपुर के लगभग मध्य मे स्थित है। यह शहर जनपद जौनपुर का मुख्यालय है। जौनपुर का न्युनतम तापक्रम 5 8 से0ग्रेड तथा उच्चतम तापमान 46 5 से0ग्रेड के मध्य रहता है। शिक्षा की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के जिलो मे इसका उल्लेखनीय स्थान है।

जौनपुर नगर का भौतिक पर्यावरण :-

जौनपुर शहर गोमती नदी के किनारे उत्तम प्राकृतिक सुरक्षा की दृष्टि से बसा है। प्रशासनिक एव विकास की दृष्टि से जौनपुर को 26 वार्डों मे विभक्त किया गया है। वर्तमान मे नगर पालिका का क्षेत्रफल 1667 75 हेक्टेयर है जिसका 27 04 प्रतिशत विकसित क्षेत्र है तथा 14 66 प्रतिशत भाग आवासीय क्षेत्र के रूप मे है। जौनपुर नगर को तीन भागो मे विभाजित किया गया है।

1– नगर का केन्द्रीय क्षेत्र
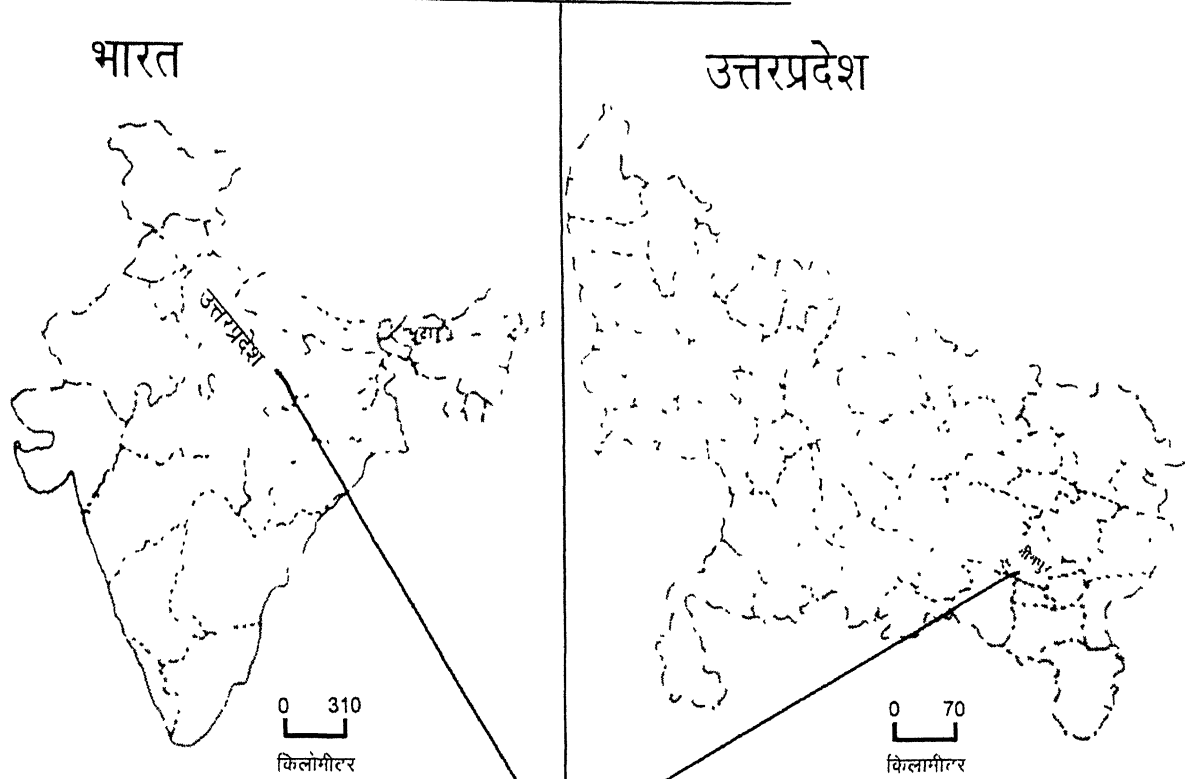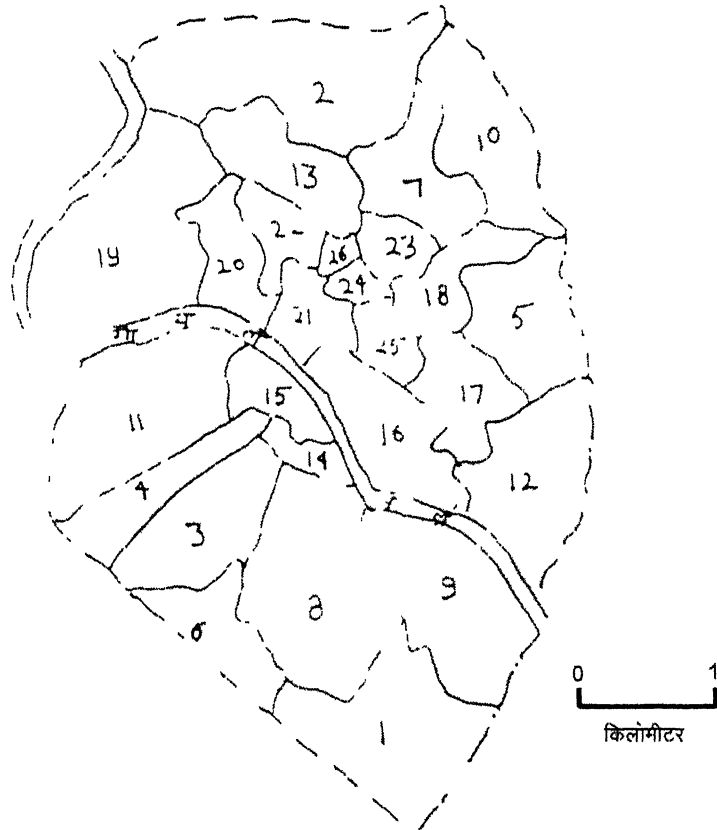
अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति
भारत
उत्तरप्रदेश
0 310
किलोमीटर
0 70
किलोमीटर
अध्ययन क्षेत्र
जौनपुर नगर
0 1
किलोमीटर
प्लेट .1

2– मध्य नगरीय क्षेत्र

3– वाह्य नगरीय क्षेत्र

1– केन्द्रीय क्षेत्र सबसे सघन जनसख्या के घनत्व वाला है इस क्षेत्र का लगभग 88 12 प्रतिशत भाग विकसित है। 90 प्रतिशत वाणिज्य एव व्यापार इसी क्षेत्र मे केन्द्रित है। इसी जोन के आवासीय क्षेत्र मे 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत घरेलू कुटीर उद्योग है।

2– नगर का मध्य क्षेत्र केन्द्रीय जोन के चारो तरफ फैला है। इसी जोन मे 40 40 प्रतिशत भूमि कृषि प्रयोग मे आती है।

3- वाह्य क्षेत्र गे अनेको गाव बसे है इसी कारण इरा जोन की 71 24 प्रतिशत भूमि कृषि के अन्तर्गत आती है। जौनपुर नगर का भूमि प्रयोग क्षेत्रफल हेक्टेयर मे निम्नलिखित सारणी मे दर्शाया गया है।

सारणी - .2

क्रम	भूमि प्रयोग	क्षेत्रफल	प्रतिशत	विकसित क्षेत्र	
				क्षेत्रफल	प्रतिशत
1	आवासीय	244 43	14 66	244 43	54 22
2	वाणिज्य	14 97	0 90	14 97	3 32
3	औद्योगिक	7 28	0 44	7 38	1 61
4	सार्वजनिक सुविधाए	64 95	3 89	64 95	14 41
5.	सरकारी प्रशासन	24.28	1.46	24.28	5.38
6	पार्क, खेल का मैदान	7 69	0 46	9 69	1 72
7	परिवहन	87 17	5 23	87.77	19 34
8	जलक्षेत्र	93 89	5.63	—	—
9	कृषि	903.31	54.16	—	—
10	विपणि उद्यान	128 89	7 12	—	—
11	बाग	90 89	6 05	—	—
योग		1667 75	100.00	453 47	100 00

भूमि उपयोग सर्वेक्षण जौनपुर सर्वेक्षण खण्ड से प्राप्त आकडा

जौनपुर नगर का सम्पूर्ण भूभाग प्राय समतल है, केवल नदी की घाटी का

भूभाग असमतल है। खनिज पदार्थों का अभाव है। खुदाई करने पर कही–कही ककड उपलब्ध होता है जिसे जलाकर चूना बनाया जाता है। बालू एव ककड से प्राप्त चूना भवन निर्माण के काम मे आता है। जौनपुर जनपद का न्यूनतम तापक्रम 5 8 एव उच्चतम तापक्रम 46 5 से0 ग्रेड के मध्य रहता है। औसत सामान्य वर्षा 987 मि मी है। जनपद का आर्थिक विकास मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। इसका मुख्य कारण जनपद मे भारी उद्योग का न होना है। वर्तमान मे वाराणसी जौनपुर मार्ग पर कई उद्योग खुल रहे है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद की कानून व्यवस्था बनाये रखने तथा विकास कार्यों को ठीक ढग से लागू करने के लिए जनपद को छह तहसीलो, सदर, मडियाहू, मछलीशहर, केराकत, शाहगज तथा बदलापुर मे बाटा गया है।

जौनपुर नगर की कुल भूमि का 27 प्रतिशत भाग विकसित है, जो विभिन्न भूप्रयोगो के अन्तर्गत आता है। अनेक दिशाओ मे नगर विकास को प्रतिबन्धित करने वाली नगर मे भौतिक रूकावटे भी है। विकास के लिए उपयुक्त भूमि पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण, यातायात के मुख्य भागों के साथ उपलब्ध है। जहा भविष्य मे नियोजित विकास सम्भव है। जौनपुर जनपद का सबसे बडा नगर है। नगर की जनसख्या 1981 की जनगणनानुसार 80,737 थी। नगर पालिका के आकडो के विश्लेषण से पाया गया कि चिकित्सा सुविधा मे विकास के कारण मृत्युदर मे ह्रास तथा परिवार नियोजन पद्धति आदि से जन्मदर धीरे–धीरे कम हो रही है तथापि जौनपुर नगर में जनसख्या की प्रवित्ति 1921 से निरन्तर वृद्धि पर रही है। नगर मे कार्यकर्ताओ के अनुपात मे कमी के साथ–साथ कार्य रहित लोगोमे समानुपालिक वृद्धि हुयी जिसके परिणाम स्वरूप यहा की आर्थिक उन्नति के लिए समुचित रोजगार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत स्त्रियो का आर्थिक क्रिया कलापो मे बहुत अल्प भाग लेना ही नगर की जनसख्या मे कार्यरत लोगो के अनुपात मे कमी का मुख्य कारण है। श्रम शक्ति पर आश्रित सदस्यों के अनुपात का दबाव अधिक है। जिसका प्रभाव नगर के भावी विकास पर पडना स्वाभाविक है।

जौनपुर नगर के व्यावसायिक ढाचे को तीन प्रमुख श्रेणी मे बाटा गया है। 1– कृषि, 2– घरेलू उद्योग धन्धे निर्माण तथा 3 वाणिज्य, व्यापार, यातायात, संचार साधन तथा

अन्य सेवाये। प्रथम श्रेणी मे श्रम शक्ति का प्रतिशत अधिक है। जौनपुर नगर का औद्योगिक आधार सुदृढ नही है, निर्माण क्रियाओ मे लोगो का इतना कम प्रतिशत यहा की विकास–रहित अर्थव्यवस्था का द्योतक है। जौनपुर नगर के आर्थिक विकास मे वाणिज्य तथा व्यापार मे लगे लोगो का प्रतिशत उच्च है। जौनपुर नगर की आय सम्पूर्ण कमाने वले सदस्यो तथा पारिवारिक कर्ताओ की आमदनी को मिलाकर एक सामूहिक आय है। प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 28,800 है। जौनपुर नगर के 10 व्यक्तियो मे से 8 से भी अधिक लोगो का स्तर निर्धनता के स्तर से भी निम्न है। जौनपुर नगर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र है। जौनपुर नगर के विकसित क्षेत्रफल का 3 32 प्रतिशत (14 91 हेक्टेयर) वाणिज्य एव व्यापार भूप्रयोग मे है। नगर मे 2000 से अधिक पजीकृत एव अपजीकृत थोक व फूटकर दुकाने है। केवल 0 22 प्रतिष्ठानो मे थोक व्यापार होता है तथा 99 4 प्रतिशत दुकाने फुटकर एव 0 4 प्रतिशत फुटकर एव थोक मिश्रित व्यापार करती है। नगर का थोक व्यापार केन्द्र स्टेशन रोड पर स्थित सुतहट्टी मे है। यहा की मुख्य थोक व्यापार की वस्तुए अनाज एव सब्जी है। 1– कचहरी वाणिज्य केन्द्र, 2– लाइन बाजार वाणिज्य केन्द्र, 3– मिर्जापुर मार्ग चौराहा वाणिज्य केन्द्र, 4– नईगज वाणिज्य केन्द्र, 5– खण्ड वाणिज्य केन्द्र सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानदारों मे से अधिकतम 67 6 प्रतिशत दुकानदार 1000 रू से 4999 रू. प्रति वर्ष आय समूह के अन्तर्गत आते है।। नगर की दुकाने अत्यधिक छोटे स्तर की है तथा इनमे क्रय विक्रय बहुत कम मात्रा मे प्रतीत होता है। सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानो मे 75 प्रतिशत दुकानो पर 1 से 2 कार्यकर्ता ही कार्य करते है। सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानो में केवल 24 प्रतिशत का स्वामित्व स्वय दुकानदारो का है। शेष दुकाने किराये की है।। नगर मे वाणिज्य इकाइयो का विकास मुख्यतया मुख्य मार्गों के किनारे हुआ है। नगर मे थोक वाणिज्य केन्द्रो की मुख्य समस्या समान उतारने एव चढाने के लिए स्थान की कमी तथा आधुनिक सग्रहागारो और गोदामो के अभाव की है। नगर मे नियोजित एव व्यवस्थित वाणिज्य केन्द्र के अभाव के कारण दुकाने आवासीय क्षेत्रो मे ही मुख्य सडको के दोनो ओर विकसित हो रही है।

जौनपुर नगर औद्योगिक दृष्टिकोण से पिछडा हुआ नगर है। जौनपुर मे केवल 7.28 हेक्टेयर भूमि उद्योग के अन्तर्गत है। जो नगर की कुल भूमि का केवल 0 44 प्रतिशत है। नगर का वर्तमान औद्योगिक स्वरूप असगठित एव तितर बितर है। प्राय सभी इकाइयो का

स्वामित्व व्यक्तिगत है। जौनपुर नगर मे उद्योगो मे कार्यरत श्रमिको का प्रतिशत 23 15 प्रतिशात है जो उत्तर प्रदेश (नगरीय) औसत (26 13) की तुलना मे कम है। नगर के उद्योगो मे पूजी की लागत की मात्रा बहुत कम है जो कि 8 4 लाख तथा 8 013 रू प्रति श्रमिक है। उद्योगो के विस्तार के लिए जौनपुर मे पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। नगर के लघु स्तर के उद्योगो की क्षेत्रीय स्थिति उपयुक्त होने के बावजूद उद्योग विकसित नही हो सके है। नगर मे कुटीर उद्योगो के अन्तर्गत खाद्य एव पेय पदार्थों का उत्पादन प्रधान है।

नगर में आवासीय स्थिति :-

जौनपुर नगर में आवासीय समस्यायें बहुत जटिल है। नगर मे 244 43 हेक्टेयर भूमि जो कि सम्पूर्ण नगर पालिका सीमा का 14 66 प्रतिशत है और सम्पूर्ण विकसित क्षेत्र का 54 22 प्रतिशत आवासीय प्रयोग मे है। नगर मे सामान्यत बहुसख्यक परिवार अधिक है। जौनपुर नगर का स्वरूप अभी भी ग्रामीण तथा सयुक्त परिवार प्रकृति का है। नगर मे आवासीय भवनो की बहुत कमी है। 11 6 प्रतिशत परिवार किराये के भवनो मे रहते है। पिछले दशको मे जौनपुर नगर मे भवनो के निर्माण की गति तीव्र हुई है। 1981—91 की अवधि मे नगर की जनसख्या में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा भवनो की सख्या मे 16 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। प्रति व्यक्ति उच्चतम आवासीय क्षेत्र 101 वर्गफीट तथा न्यूनतम 53 वर्गफीट है। सम्पूर्ण नगर के भवनों में 9 प्रतिशत कमरे 401 वर्गफीट या उससे अधिक क्षेत्रफल के है तथा 47 प्रतिशत कमरे 100 वर्गफीट के है जौनपुर नगर मे प्रत्येक वार्ड के लगभग 50 प्रतिशत परिवारो की आय 500 रू0 प्रतिमाह से कम है। यह आय इस नगर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से विकास के मार्ग में बाधा कही जा सकती है। नगर के वर्तमान आवासीय क्षेत्र मे जल तथा मल निष्कासन की व्यवस्था उपयुक्त नही है। इसी से इस नगर मे प्रदूषण किस सीमा तक व्याप्त है इसकी परिकल्पना सहज ही की जा सकती है। जल निकासी, शौचालय की सुविधा न होने के कारण नगर का अधिकांश भाग मलिन बस्ती के रूप मे परिणत हो गया है। नगर में सम्पूर्ण भवनों का 89 प्रतिशत आवासीय प्रयोग तथा 8 प्रतिशत आवासीय व व्यापारिक दोनो प्रयोग में हैं। जौनपुर नगर के अधिकांश वार्डों में जलापूर्ति विद्युत, विशुद्ध वायु एव प्रकाश, रसोईघर,

शौचालय, स्नानगृह तथा एकान्तता आदि की सुविधाये न्यूनतम है। नगर के 58 प्रतिशत परिवार नल द्वारा पेयजल प्राप्त करते है तथा 41 7 प्रतिशत परिवार हैण्डपम्प, कुए एव नदी द्वारा जल लेते है। 43 7 परिवार विद्युत का उपयोग करते है। शेष परिवार मिट्टी का तेल जलाते है। नगर के लगभग 50 प्रतिशत परिवारो मे निजी शौचालय नही है इसके लिए वे खुले भूभाग को शौचालय के काम मे लाते है। जौनपुर नगर के 55 5 प्रतिशत परिवारो मे पृथक रसोईगृह नही है। 808 प्रतिशत परिवार मे पृथक स्नानगृह उपलब्ध नही है। सम्पूर्ण जौनपुर नगर मे जल निस्तारण प्रणाली असतोषजनक है। नगर मे 32 3 भवनो मे रोशनदान नही है। जौनपुर नगर मे गन्दे वातावरण से 45 5 प्रतिशत परिवार कुप्रभावित है। नगर मे लगभग 10 प्रतिशत भवन पूर्णतया आवासीय योग्य नही है। नगर मे अधिकाश भवन एक मजिल के है। नगर के 37 प्रतिशत भवन ईंट से बने है जो काफी पुराने है। नगर के लगभग 54 प्रतिशत भवन निवास के लिए उपयुक्त है।

जौनपुर नगर में प्रदूषण का मुख्य कारण :-

जौनपुर नगर मे भूमिगत मल–प्रवाह प्रणाली नही है। अग्रेजो के शासनकाल मे मात्र रेलवे स्टेशन की ओर से एक भूमिगत मल प्रवाह प्रणाली बनी थी जो स्वतत्रता के पूर्व से ही बेकार होकर वन्ध थी जो 2002 में साफ करायी गयी। उचित जल निकासी की सुविधा के अभाव के कारण सम्पूर्ण नगर का वातावरण दूषित जल तथा कूडाकरकट की गन्दगी से गंधयुक्त बना रहता है। मात्र 56.8 प्रतिशत परिवारो मे जल निकासी की सुविधा प्राप्त है। शेष के लिए कोई प्रावधान नही है। सम्पूर्ण शहर मे खुली नाली सडक के दोनो किनारो पर देखने को मिलती है। कही कही गन्दा पानी वर्षभर टिका रहता है और वर्षाकाल मे सम्पूर्ण क्षेत्र गन्दे पानी की दुर्गन्ध से भर उठता है। वर्ष 1997–98 मे जिलाधिकारी नवनीत सहगल ने नगर में सुलभ शौचालयो का निर्माण तथा जिन क्षेत्रो मे पानी निकासी हेतु नालिया बिलकुल नही थी नालिया बनवाकर उस क्षेत्र को प्रदूषण से थोडा बहुत छुटकारा दिलाने मे सहयोग प्रदान किया। वर्ष 1998 से गोमती एक्शन प्लान के तहत सीवर लाइन बनाने के लिए राज्य सरकार की स्वीकृति मिली है और इस दिशा में कार्य किया जा रहा है। नगर मे पेयजल समस्या का समाध

ान मात्र नगर की 50 प्रतिशत आवश्यकता के लिए नगर पालिका द्वारा उपलब्ध है, शेष 50 प्रतिशत निजी हैण्डपम्प से बाहर से कूप द्वारा तथा नदी द्वारा सीधे पानी लेते है।

सामुदायिक सुविधाएँ :-

जौनपुर नगर मे विभिन्न स्तर की 66 शिक्षण सस्थाये है जिनमे 20,000 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते है। नगर मे शिक्षण सस्थाओ का वितरण असन्तोषजनक है। अधिकाश विद्यालयो के भवन शिक्षण कार्य के योग्य नही है। 66 शिक्षण सस्थाओ मे से सर्वेक्षित 46 सस्थाओ मे लगभग 50 प्रतिशत किराये के भवनो मे स्थित है जिनमे 33 भवन पक्के है। सर्वेक्षित विद्यालयो के भवनो मे से 20 भवन उपयुक्त है बाकी 26 भवन अनुपयुक्त है।। नगर के 96 4 प्रतिशत परिवारो के लिए प्राइमरी स्कूल की दूरी 0 8 किमी की परिधि मे है। प्राइमरी स्कूल की दूरी के सम्बन्ध मे स्थिति सतोषप्रद है। जौनपुर नगर मे 15 चिकित्सालय है। इन चिकित्सालयो मे एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा होती है इन अस्पतालो मे प्रतिदिन 1000 के लगभग रोगी चिकित्सा हेतु आते है। ऑपरेशन की सुविधा जनपद अस्पताल, महिला अस्पताल, टी.वी अस्पताल तथा आख के अस्पताल मे उपलब्ध है।

जौनपुर नगर की सेवा के लिए 8 डाक व तारघर है। डाकघरो का वितरण नगर में संतोषप्रद है। नगर मे टेलीफोन की स्थानीय तथा ट्रककाल की सुविधा उपलब्ध है। नगर मे कई थाने है। पुलिस विभाग द्वारा ही नगर मे यातायात का नियत्रण किया जाता है। नगर मे मनोरजन स्थलो की अत्यधिक कमी है। नगर में केवल एक पार्क सुतहट्टी बाजार के समीप स्टेशन रोड पर है। जौनपुर नगर तथा इसके आसपास बहुत से प्राकृतिक सौदर्य स्थल है परन्तु कोई भी स्थल विकसित नही किया गया है। नगर मे 7 क्लब तथा 3 पुस्तकालय है। नगर की जनसख्या के अनुपात मे पुस्तकालय की सख्या अति न्यून है। नगर मे 7 सिनेमा हाल है। नगर मे 2 महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल–मैहर देवी का मदिर हिन्दुओ के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, मुसलमानों के लिए लाल दरवाजा मस्जिद स्थित इमामबाडा महत्वपूर्ण है। उपरोक्त के अतिरिक्त नगर मे अन्य स्थल भी हैं जो धार्मिक एवं सामाजिक महत्व के है।

नगर में सार्वजनिक उपयोगितायें तथा सेवायें :-

जौनपुर नगर गोमती नदी के दोनो किनारे पर स्थित होने के कारण पर्याप्त जलपूर्ति करने की दिशामे उपयुक्त है। नगर के वाह्य क्षेत्रो मे जलपूर्ति की कमी है। गोमती के किनारे स्थित पम्पिग स्टेशन से प्रतिवर्ष 234 करोड लीटर पानी पम्प किया जाता है। वर्तमान जलापूर्ति व्यवस्था नगर पालिका के लगभग 50 प्रतिशत भाग मे ही उपलब्ध है। नगर की जलापूर्ति असन्तोषप्रद है।

यातायात एवं परिवहन :-

जौनपुर नगर प्रान्तीय राजमार्गों द्वारा प्रदेश के महत्वपूर्ण नगरो से जुडा है। नगर के बाहरी भागो मे स्थित बस्तिया कच्ची सडको द्वारा जुडी हुयी है, जिनकी दशा बडी ही दयनीय है। जौनपुर नगर के कुल क्षेत्र का केवल 2 23 प्रतिशत भाग ही यातायात एव परिवहन के अन्तर्गत प्रयोग मे आता है। बस सेवा का लाभ मुख्य मार्गों तक ही सीमित है क्योकि सडको की चौडाई अपर्याप्त है। नगर मे रिक्शा ही यातायात के सामान्य साधन है तथा साइकिल यात्रा का प्रमुख साधन है। मोटर साइकिल तथा स्कूटर अन्य भारी वाहनो की तुलना मे अधिक है। जौनपुर मे अधिकांश बस सेवा उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम द्वारा सचालित होती है। जौनपुर मे क्षेत्रीय स्तर पर यात्रा की सुविधाये, राजकीय बसो, टेम्पो तथा टैक्सी द्वारा उपलब्ध है। नगर मे आने वाली वस्तुओ की तुलना मे जाने वाली वस्तुओं की मात्रा अत्यन्त कम है। सडकों पर वाहनो की वृद्धि, अनियोजित चौराहो अपर्याप्त चौडे मार्ग एव अतिक्रमण के फलस्वरूप दुर्घटनाये होती है। जौनपुर उत्तर रेलवे के फैजाबाद वाराणसी सभाग पर स्थित है। जौनपुर स्टेशन उत्तरी भारत के महत्वपूर्ण नगरो से सुसम्बद्ध है जौनपुर जक्शन तथा कचहरी रेलवे स्टेश ही ऐसे स्टेशन है जो नगर पालिका सीमान्तर्गत आते है। जौनपुर जक्शन स्टेशन पर प्रतिदिन अधिकतम यात्रियों का आवागमन होता है। वर्तमान मे सडको तथा रेलवे के विकास के बाद नदी यातायात का महत्व नगण्य हो गया है। नदी यातायात की सेवाये मियापुर तथा पानदरीबा में उपलब्ध है। जौनपुर नगर मे मुख्य रूप से यातायात की समस्याओ के निम्नलिखित कारण है।– 1– तीव्र एवं मदगामी वाहनो की सख्या मे वृद्धि। 2– सामान उतारने एव चढाने

जौनपुर नगर के वार्डों का विभाजन

स्रोत - कार्यालय नगर परिषद् जौनपुर

प्लेट–2
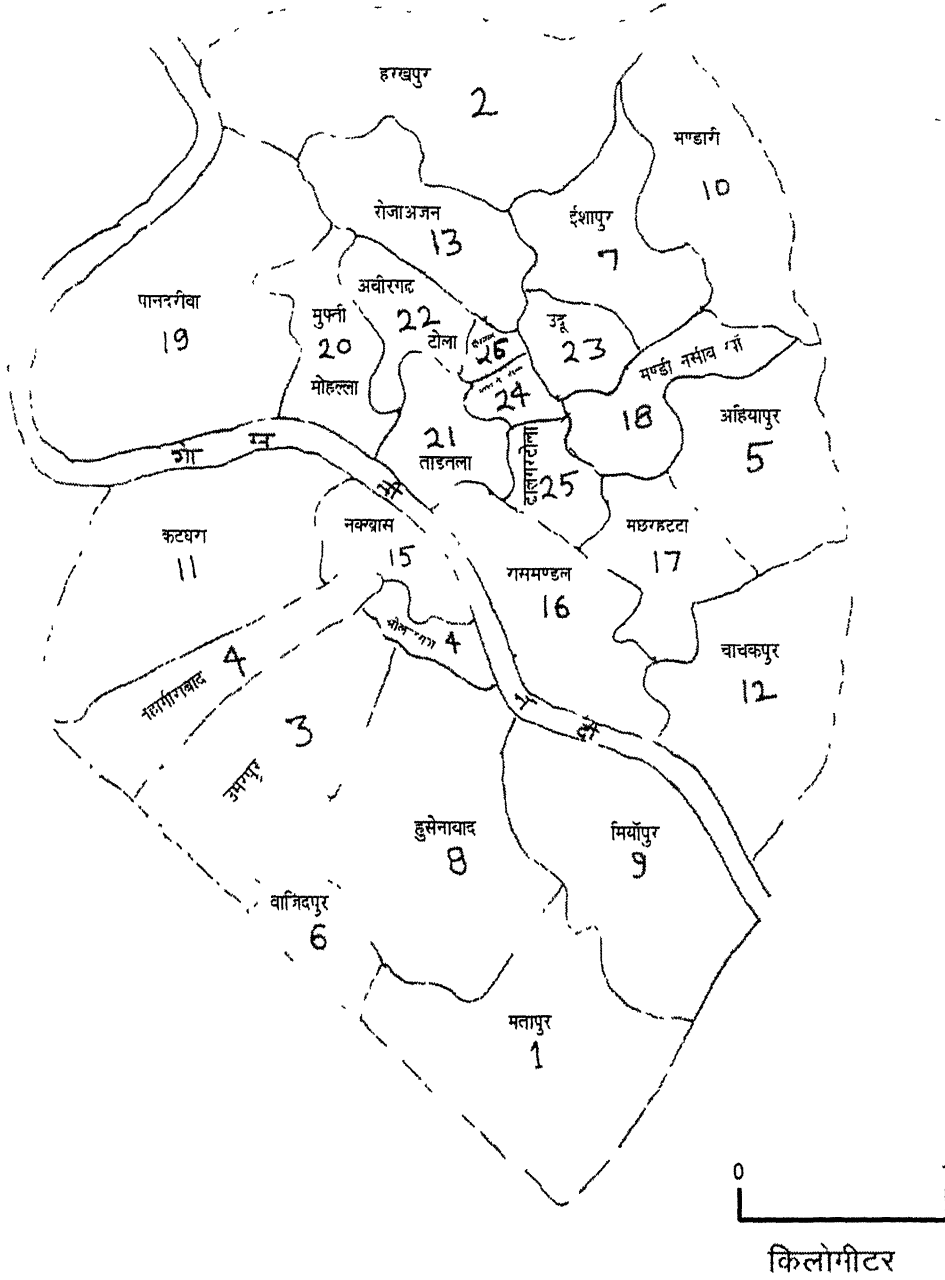
के लिए अपर्याप्त स्थान, 3– अनाधिकृत रूप से वाहन खडा करना, 4 सडको की कम चौडाई, 5– जटिल एव दयनीय चौराहो का विकास, 6– बाढ, 7– मिश्रित वाहन, 8– क्षेत्रीय यातायात, 9–अतिक्रमण, 10– अनुपयुक्त मार्गों की प्रणाली का विकास, 11 पार्किंग सुविधा का पूर्णतया अभाव।

जौनपुर नगर का सांस्कृतिक पर्यावरण :-

नगर का इतिहास :-

अपने अतीत एव विद्या वैभव के लिए सुविख्यात जौनपुर अपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक सामाजिक एव राजनैतिक अस्तित्व रखता है। पौराणिक कथानको शिलालेखो ध्वासावशेषो एव अन्य उपलब्ध तथ्यो के आधार पर अतीत का अध्ययन करने पर जौनपुर का वास्तविक स्वरूप किसी न किसी रूप मे उत्तर वैदिक काल तक दिखायी पडता है। आदि गगा गोमती नगर का गौरव एव इसका शातिमय तट तपस्वी ऋषियो एव महाऋषियो के चिन्तन मनन का एक प्रमुख पुण्य स्थल था जहा से वेदमत्रो के स्वर प्रस्फुटित होते थे। आज भी गोमती नगर के तटवर्ती मदिरो से देववाणिया गूज रही है।

शिक्षा के क्षेत्र मे इस जनपद का महत्वपूर्ण स्थान रहा है यहॉ दूसरे देशो से अरबी व फारसी की शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्र आते रहे है। शेरशाह सूरी की शिक्षा दीक्षा भी यहा हुई थी यही पर सूफीमत भी पल्लवित और पुष्पित हुआ। शर्की काल मे हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा दिग्दर्शन रहा और जो विरासत मे आज भी विद्यमान है।

1194 ई0 मे कुतुबुद्दीन एबक ने मनदेय (वर्तमान में जफराबाद) पर आक्रमण कर दिया तत्कालीन राजा उदयपाल को पराजित किया और दीवानजीत सिंह को सत्ता सौप कर बनारस की ओर चल दिया। 1389 ई0 मे फिरोजशाह का पुत्र महमूद शाह गद्दी पर बैठा। उसने मलिक सरवर को मंत्री बनाया और बाद मे 1393 मे मलिक उस शर्क की उपाधि देकर कन्नौज से बिहार तक का क्षेत्र उसे सौप दिया। मलिक उसशर्क ने जौनपुर को राजधानी बनाया और अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। शर्की वश के सस्थापक मलिक उसशर्क

की मृत्यु 1396 ई0 मे हो गयी। जौनपुर की गद्दी पर उसका दत्तक पुत्र सैयद मुबारकशाह बैठा उसके बाद उसका छोटा भाई इब्राहिम शाह गद्दी पर बैठा। इब्राहिम शाह निपुण व कुशल शासक रहा। उसने हिन्दुओ के साथ सद्भाव की नीति पर कार्य किया। शर्कीकाल मे जौनपुर मे अनेको भव्य भवनो, मस्जिदो व मकबरो का निर्माण हुआ। फिरोजशाह ने 1393 ई मे अटाला मस्जिद की नीव डाली थी, लेकिन 1408 मे इसे इब्राहिम शाह ने पूरा किया, इब्राहिम शाह ने जामा मस्जिद एव बडी मस्जिद का निर्माण प्रारम्भ कराया इसे हुसेनशाह ने पूरा किया। शिक्षा, सस्कृति, सगीतकाल और साहित्य के क्षेत्र ने अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले जनपद जौनपुर मे हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव का जो अनूठा स्वरूप शर्कीकाल मे विद्यमान रहा है, उसकी गध आज भी विद्यमान है।

शोध का विवरण :-

वर्तमान शोध कार्य तीन भागो एव पाच अध्यायो मे विभाजित है। भाग एक मे सभी वार्डों का सामान्य विवरण एव चयनित आवासो के सम्बन्ध मे उल्लेख किया गया है। यह सब अध्याय एक मे समाहित है। इस अध्याय मे वार्डों का सामान्य विवरण, प्रत्येक वार्ड की जनसख्या, प्रत्येक परिवार मे औसत सदस्यों की सख्या, प्रत्येक मकान मे औसत परिवारो की सख्या, साक्षरता स्तर एव आय का विवरण आदि बातों का अध्ययन कर उसका उल्लेख करने का प्रयास किया गया है चयनित मकानो की सामान्य विशेषताये– जैसे उत्तरदाता की सामान्य विशेषता, आय के आधार पर वर्गीकरण, परिवारो की मौलिक स्थिति, परिवार का शैक्षिक व्यावसायिक एव स्थानान्तरण करने की स्थिति का वर्णन किया गया है। भाग दो मे जौनपुर शहर में स्थित मकानो की पर्यावरणीय स्थिति का विवरण है। यह भाग क्रमश द्वितीय तृतीय चतुर्थ एव पचम, चार अध्यायो मे विभक्त है। द्वितीय अध्याय मे मकानो का स्नानगृह एव सफाई की स्थिति, मकानो की श्रेणी, मकान के फर्श का आकार, मकान मे कमरो की संख्या, कमरो का औसत आकार, शयनकक्ष मे प्रतिव्यक्ति के लिए फर्श पर मिलने वाला हिस्सा, कमरों मे वातायन की सुविधा, शौचालय की सुविधा, शौचालय का प्रकार जैसे निजी (मकान के अन्दर) अथवा बाहर खुले स्थान मे, अनुपयोगी वस्तुओ को एकत्रित करने एवं उसे विसर्जित करने की स्थिति,

बाहर खुले स्थान मे, अनुपयोगी वस्तुओ को एकत्रित करने एव उसे विसर्जित करने की स्थिति, एव एक शौचालय को उपयोग मे लाने वाले व्यक्तियो की सख्या आदि का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय मे मकानो मे जलापूर्ति का बिवरण, जल निकासी की स्थिति, जलापूर्ति का स्रोत पेयजल की गुणपवत्ता, जलापूर्ति की मात्रा, पेयजल के सग्रह का तरीका, मकानो के अनुपयोगी जल की निकासी, मकान के चारो ओर नाली की स्थिति, नालियो के प्रकार, जल जमाव की स्थिति एव प्रकार का वर्णन है।

चौथे अध्याय मे मकानो मे कूडा करकट रखने एव विसर्जन की स्थिति घरो मे भोज्य पदार्थों को रखने की स्थिति, औद्योगिक अपशिष्ट कूडे के ढेर को सिटी बोर्ड द्वारा उठाने की बारम्बारता, मकान मे कीडे मकोडे एव कीटाणु के होने की स्थिति आदि का विवरण है। अध्याय पाच मे जौनपुर नगर के घरो मे वायु प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति का वर्णन है। भाग तीन मे जौनपुर नगर का पर्यावरण व स्वास्थ्य का सम्बन्ध तथा निष्कर्ष एव सूझाव दिया गया है।

भाग - एक

सामान्य विवरण

अध्याय - एक

वार्डों का सामान्य अध्ययन एवं चयनित मकानों का सामान्य अध्ययन
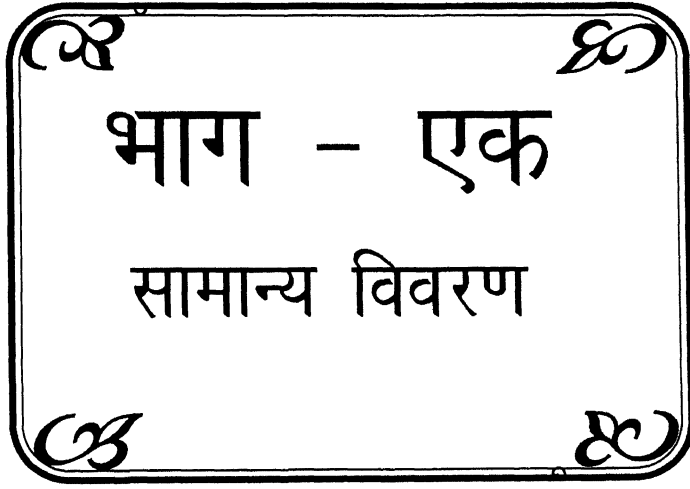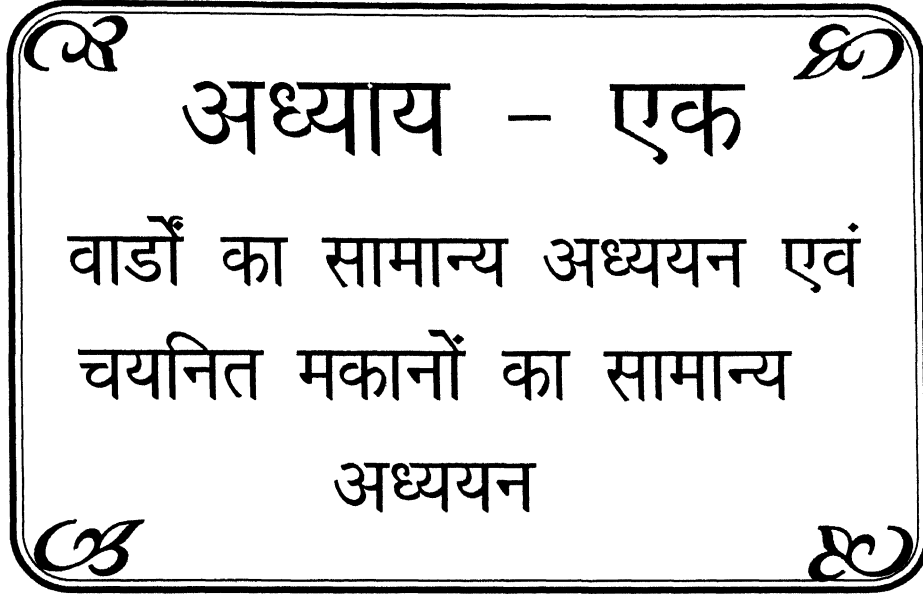
जौनपुर नगर की जनसख्या मे दिनोदिन हो रही वृद्धि का कारण ग्राम्याचलो से शहरो मे निवास करने का फैशन, बेरोजगारी के कारण छोट–मोटे कारोबार के सिलसिले मे नगर मे रहने की विवशता एव अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए अभिभावको द्वारा नगर मे स्थायी निवास बना लेने की योजना है। जौनपुर नगर की जनसख्या, 1961 मे 61,851 थी जो 1971 मे बढकर 80,737 हो गयी, 1981 मे जनसख्या बढकर 1,05,140 हो गयी व 1991 मे जनसख्या बढकर 1,36,062 हो गयी है। सर्वेक्षण से यह पता चला है कि शहर की आबादी मुख्य रूप से गॉव से शहर मे आकर बसने वाले लोगो के कारण ही बढी। 30 वर्ष पूर्व नगर की जनसख्या 80,737 थी जो वर्तमान मे लगभग दोगुनी हो चुकी है नगर की आबादी मे प्रत्येक वर्ष 1,500 व्यक्ति, अतिरिक्त खाने की आवश्यकता, कपडे व मकान की आवश्यकता, यातायात, साफ–सफाई व स्वास्थ्य सुविधाओ की आवश्यकता को लेकर जुड रहे है।

सारणी 1 1 जौनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या का वितरण (1999)

वार्ड न0	वार्ड का नाम	जनसख्या	श्रेणी
1	मतापुर	3000	26
2	हरखपुर	7210	2
3.	उमरपुर	3878	22
4	जहॉगीराबाद	5894	10
5.	अहियापुर	3000	25
6	वाजिदपुर	6936	3
7	ईशापुर	5288	13
8	हुसेनाबाद	7882	1
9	मियॉपुर	5903	9
10	भण्डारी	5000	17
11	कटघरा	4227	21
12.	चाचकपुर	5294	12
13.	रौजाअर्जन	5940	8
14.	ओलन्दगंज	3058	24
15.	नखास	5322	11

16	रासमण्डल	5246	14
17	मछरहट्टा	6171	5
18	मण्डी नसीब खॉ	5159	15
19	पानदरीबा	4819	18
20	मुफ्तीमुहल्ला	4717	20
21	ताडतला	6131	6
22	अबीरगढटोला	6845	4
23	उर्दू	6015	7
24	ख्वाजीगी टोला	4744	19
25	ढालगर टोला	5133	16
26	मीरमस्त	3250	23

स्रोत – कार्यालय नगर परिषद् जौनपुर

सारणी 1 1 जौनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या वितरण (1999) को दर्शाती है। सारणी के अनुसार वार्ड न0 8 हुसेनाबाद की जनसख्या सबसे अधिक है यह वार्ड वह स्थान है जहा पहले अधिवास विकसित हुआ। यह वार्ड नगर का सबसे पुराना भाग है इस वार्ड के कुछ भाग को लेकार नया वार्ड मतापुर बना। वार्ड न0 1 की जनसंख्या सबसे कम है। यह वार्ड नया विकसित भूभाग है।

सारणी 1.2 जौनपुर नगर के वार्डों का वर्गीकरण जनसख्या के आधार पर

जनसख्या वितरण	वार्ड नम्बर	कुल वार्ड
3000 – 4000	1,5, 3, 14, 26	5
4000 – 5000	11, 19, 20, 24	4
5000 – 6000	4, 7, 9, 10, 12, 13, 15, 16,18, 25	10
6000 – 7000	6, 17, 21, 22, 23,	5
> 7000	2, 8	2

जौनपुर नगर के वार्डों में जनसंख्या वितरण
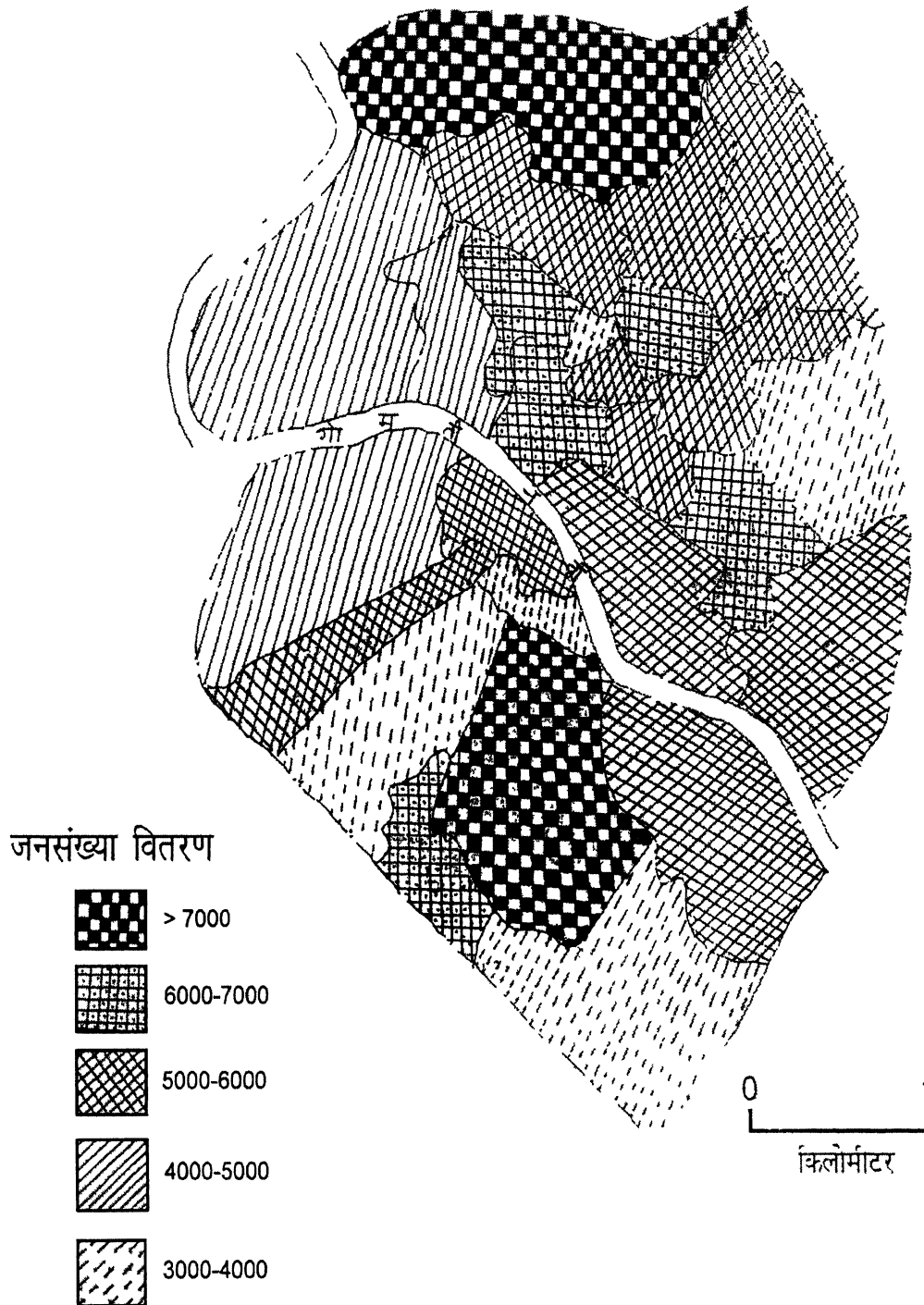
प्लेट 11

सारणी 1 2 और प्लेट 1 1 मे प्रत्येक वार्ड मे जनसख्या का वितरण पॉच विभागो मे, सबसे कम, 3000–4000 तथा सबसे अधिक 7000 से अधिक जनसख्या के आधार पर दर्शाया गया है। कुल पॉच वार्ड ऐसे है जहा जनसख्या का वितरण 3000–4000 तक है। ये वार्ड है मतापुर, अहियापुर, उमरपुर, ओलन्दगज व मीरमस्त। इनमे से मतापुर, मीरमस्त व अहियापुर नये विकसित क्षेत्र है इन वार्डो मे हिन्दु धर्मावाल्मबी परिवार ही अधिक ही रहते है। चार वार्ड ऐसे है जहा 4000–5000 व्यक्ति निवास करते है ये वार्ड है कटघरा, पानदरीबा, मुफ्ती मुहल्ला व ख्वाजगी टोला, इन वार्डो मे हिन्दू, मुसलमान की मिली–जुली आबादी है। यहॉ मध्यम जनसख्या का घनत्व पाया जाता है क्योकि बडे परिवार की मुसलमान आबादी हिन्दू और सिक्ख आबादी से समायोजन कर लेती है। कुल दस वार्ड ऐसे है जहॉ जनसख्या 5000–6000 के बीच है इनमे अधिकतर मुस्लिम बाहुल्य आबादी वाले वार्ड है जैसे मियॉपुर, रौजाअर्जन, मण्डी नसीब खॉ, ढालगर टोला आदि इनमे से अधिकाश वार्ड नगर के मध्य भाग मे घने आबाद है दो वार्ड ऐसे हैं जहॉ की जनसख्या 7000 से भी अधिक है ये वार्ड है हुसेनाबाद और हरखपुर। इनमे हिन्दू और मुसलमान मिश्रित जनसख्या पाई जाती है। हुसेनाबाद नगर के मध्य भाग मे है जबकि हरखपुर नगर के बाहरी सीमा पर अवस्थित है।

सारणी 1.3 जौनपुर नगर के प्रत्येक वार्ड में मकानों की संख्या, परिवारों की संख्या एवं औसत परिवारो की संख्या का विवरण

वार्ड नं0	मकानों की संख्या	परिवारों की संख्या	प्रतिमकान औसत परिवार
1	425	637	1 49
2.	1001	1033	1 03
3	902	951	1 05
4	772	844	1 09
5.	400	300	0 75
6.	1322	1384	1 04
7.	722	778	1 00
8	1031	1006	0 97

9	821	865	1 05
10	960	969	1 00
11	606	623	1 02
12	699	743	1 06
13	707	738	1 04
14	416	436	1 04
15	778	786	1 01
16	752	782	1 03
17	809	823	1 01
18	489	600	1 22
19	602	658	1 09
20	498	504	1 01
21	834	863	1 03
22	581	491	0 84
23	771	773	1 00
24	625	638	1 02
25	687	695	1 01
26	300	400	1 33

स्रोत – कार्यालय नगर परिषद् जौनपुर

मकान मे रहने वाले परिवारो की सख्या, मकान मे जनसख्या घन्तव के साथ लोगो के जीवन यापन के स्तर को भी दर्शाती है। जौनपुर नगर मे कुल 18 510 मकानो में 19,320 परिवार निवास करते है। प्रति मकान 1 04 औसत परिवार निवास करते है।

चयनित घरों की सामान्य विशेषतायें :-

अध्याय का यह भाग मुख्यत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित है।कुल चयनित 1 580 घरो की सामान्य विशेषताओ मे आयु लिग व धर्म का वर्गीकरण किया गया व आय समूहो का वर्गीकरण किया गया, सामान्य परिवार की विशेषताओ मे परिवार का मुखिया तथा परिवार के कुल सदस्यो की सख्या परिवार का स्तर वाहनो व सुविधाओ के स्वामित्व, शैक्षिक, व्यावसायिक स्तर व स्थानान्तरण आदि के बारे मे सर्वेक्षण किया गया। अध्याय का यह भाग मुख्यत सर्वेक्षण पर आधारित है। आकडे प्रश्नावली के आधार पर बनाये गये है जो जौनपुर नगर के 26 वार्डो के 1580 मकानो के सर्वेक्षण पर आधारित है। प्रत्येक मकान मे एक घर है एक घर का मुखिया है और अगर परिवार के लोग अलग रहना चाहते है तो उनके पास कम से कम एक कमरे का फ्लैट है, ऐसे फ्लैट की भी गणना एक मकान के रूप मे की गयी है। जौनपुर नगर के कुल 18,510 मकानो मे से 1,580 मकान (8 53 प्रतिशत) इस अध्ययन के लिए चुने गये।

उत्तरदाताओं की सामान्य विशेषतायें :-

उत्तरदाताओ का चयन करने मे इस बात को ध्यान मे रखा गया कि महिलाओ का ही चयन किया जाय क्योकि महिलाये अधिकतर घरो मे उपलब्ध रहती है और घर की व्यवस्था के बारे मे अधिक जानती है। महिलाये अपना 16 घण्टे से अधिक समय घर के काम मे व्यतीत करती है।

सारणी 1 4 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे स्त्री पुरूष का वर्गीकरण (1999)

लिग	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
स्त्री	988	62 53	1
पुरूष	592	37 47	2
योग	1580	100 00	

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनुपर नगर
उत्तरदाताओं की सामान्य विशेषतायें 1999
स्त्री-पुरूष का वर्गीकरण
प्रतिशत
100
80
60
40
20
0
स्त्री
पुरूष
आयु का वर्गीकरण
प्रतिशत
15—25
25—35
35—45
> 45
धर्म का वर्गीकरण
प्रतिशत
मुसलमान
हिन्दू
सिक्ख
क्रिश्चियन
अन्य
चयनित घरों का वर्गीकरण
प्रतिशत
अत्यधिक कम
कम
मध्यग
उच्च
अतिउच्च
आय समूह
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
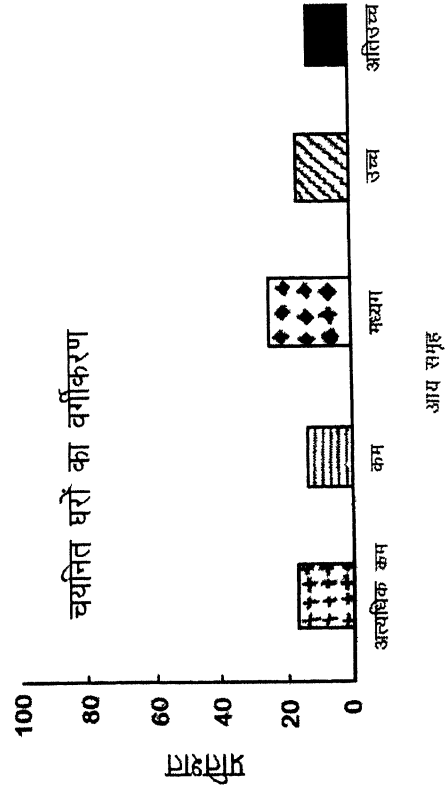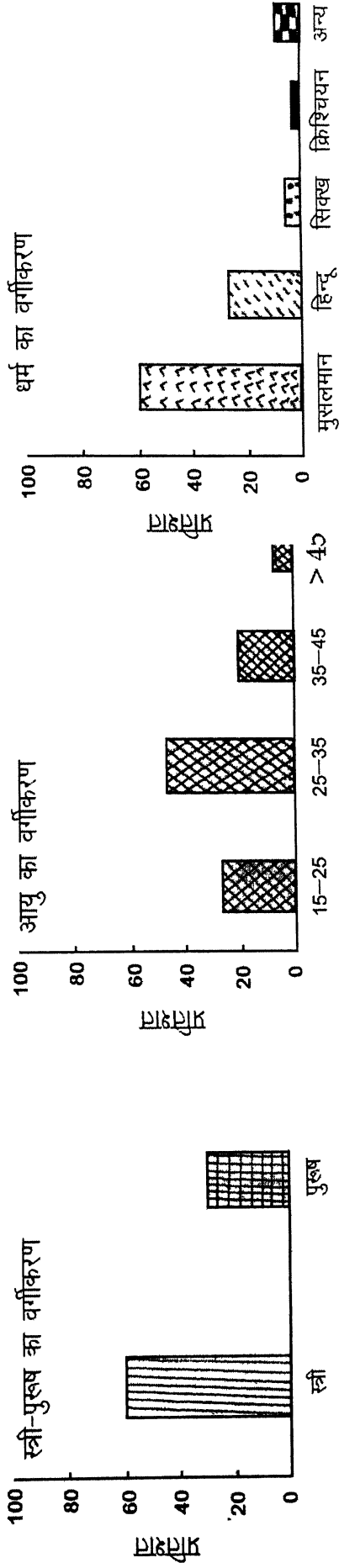
सारणी 1 4 और प्लेट 1 2 उत्तरदाताओ को स्त्री पुरूष मे वर्गीकृत करके दिखाता है। लगभग 62 53 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाये थी और 37 47 प्रतिशत उत्तरदाता पुरूष थे। महिलाओ की अधिक सख्या उन आकडो के सत्यापन मे सार्थक थी जिन्हे सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित किया गया क्योकि महिलाये अधिक समय घरो मे व्यतीत करती है।

सारणी 1 5 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ की आयु का वर्गीकरण (1999)

आयु समूह	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
15–25	382	24 18	2
25–35	697	44 11	1
35–45	345	21 84	3
45 से ऊपर	156	9 87	4
योग	1580	100 00	

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

उत्तरदाताओ का आयु समूहो मे वर्गीकरण सारणी 1 5 और प्लेट 1 2 मे दिखाया गया है। यह पाया गया कि कुल 1580 उत्तरदाताओ में से लगभग आधे (44 11 प्रतिशत) 25 से 35 वर्ष के बीच मे थे और बहुत कम उत्तरदाता (9 87 प्रतिशत) 45 वर्ष से ऊपर थे। यह दिखाता है कि जिन परिवारो मे सर्वेक्षण किया गया वे अधिकतर युवा थे। सारणी 1 6 और प्लेट 1.2 उत्तरदाताओ के धर्म का वर्गीकरण दिखाता है। घर के अन्दर की एवं बाहर की हालत का अदाजा धर्म के आधार पर भी लगाया जा सकता है। यदि घर की व्यवस्था ठीक नही है एव सम्बन्धित मुहल्ला कूडा करकट एव पानी की निकासी न होने के कारण गन्दा है तो यह पाया गया कि इन क्षेत्रो मे अधिकतर मुसलमान रहते है। यदि कोई क्षेत्र या मुहल्ला अपेक्षाकृत साफ पाया गया है तो वे हिन्दुओ से सम्बन्धित है। भारत के लगभग सभी शहरो मे यह स्थिति देखी जा सकती है। सर्वेक्षण करते समय इस बात को ध्यान मे रखा गया कि सभी धर्मों से लोग लिये जायें। इसलिए विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित मकान ही चयनित किये गये। यह पाया गया कि 60 38 प्रतिशत उत्तरदाता मुसलमान है और 28 17 प्रतिशत हिन्दू है। 2 48 प्रतिशत सिख, 0 89

प्रतिशत क्रिश्चियन पाये गये है एव 8 16 प्रतिशत अन्य धर्मो से जैसे बौद्ध, जैन एव पारसी से सम्बन्धित है।

सारणी 1 6 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे धर्म का वर्गीकरण (1999)

धर्म	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
मुसलमान	954	60 38	1
हिन्दू	445	28 17	2
सिक्ख	38	2 40	4
क्रिश्चियन	14	0 89	5
अन्य	129	8 16	3
योग	1580	100 00	

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 7 चयनित घरो का आय के अनुसार वर्गीकरण (1999)

आय समूह	आय प्रतिमाह रू0 मे	चयनित मकानों की सख्या	प्रतिशत
अत्यधिक कम	< 1500	318	20 13
कम	1500 – 2999	283	17.91
मध्यम	3000 – 4999	412	26 07
उच्च	5000 – 9000	365	23 10
अति उच्च	> 9000	202	12.79
	योग	1580	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

जैसा कि सारणी 1 7 और प्लेट 1 2 में दर्शाया गया है 26 07 प्रतिशत घर मध्यम आय वर्ग समूह के अन्तर्गत आते हैं, 23 10 प्रतिशत घर उच्च आय वर्ग समूह के अन्तर्गत और 12 79 प्रतिशत

अत्यधिक उच्च आय वर्ग समूह के अन्तर्गत आते है। उत्तरदाताओ से उनके मासिक आय के बारे मे पूछा गया था और इस अध्ययन के लिए पाच विभाग बनाये गये। कुछ घरो मे उत्तरदाताओ ने अपनी आय के बारे मे ठीक–ठीक जानकारी नही दी। इन लोगो ने उससे कम आय बतायी जितना कि वे कमाते है। ये लोग आयकर से बचने के लिए अपनी आय छुपाते है। ऐसे उदाहरणो मे इन घरो मे पायी जाने वाली सुविधाओ से वाहनो आदि का स्वामित्व देखकर आय का अनुमान लगा लिया गया।

परिवार की मूल विशेषतायें :-

परिवार की मूल विशेषताओ मे इस बात पर विचार किया गया कि परिवार के मुखिया को लिया जाय, एक मकान मे कितने परिवार रहते है, एक परिवार मे कितने सदस्य है आदि का सर्वेक्षण किया गया।

सारणी 1 8 जौनपुर नगर के चयनित घरों मे मुखिया का वर्गीकरण (1999)

आय समूह	पिता	माता	पुरूष कमाने वाला सदस्य	अन्य	योग
अत्यधिक कम	55.66	18.24	18 55	7.55	100 00
कम	50.89	28 27	14.13	6.71	100 00
मध्यम	47 81	20 87	26.95	4.37	100 00
उच्च	30 42	17.80	45.20	6 58	100 00
अति उच्च	28 71	17.82	46 04	7.43	100 00
योग	42 70	20 60	30 17	6 53	100 00

स्रोंत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 8 और प्लेट 1 3 चयनित घरो मे मुखिया का वर्गीकरण दर्शा रहा है। लगभग 60 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग समूह मे एव 51 प्रतिशत कम आय वर्ग समूह मे, 47 प्रतिशत

जौनपुर नगर

चयनित घरों की सामान्य विशेषतायें 1999
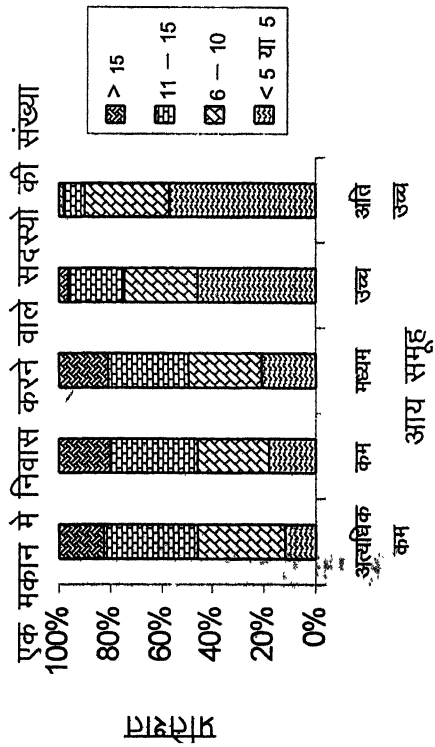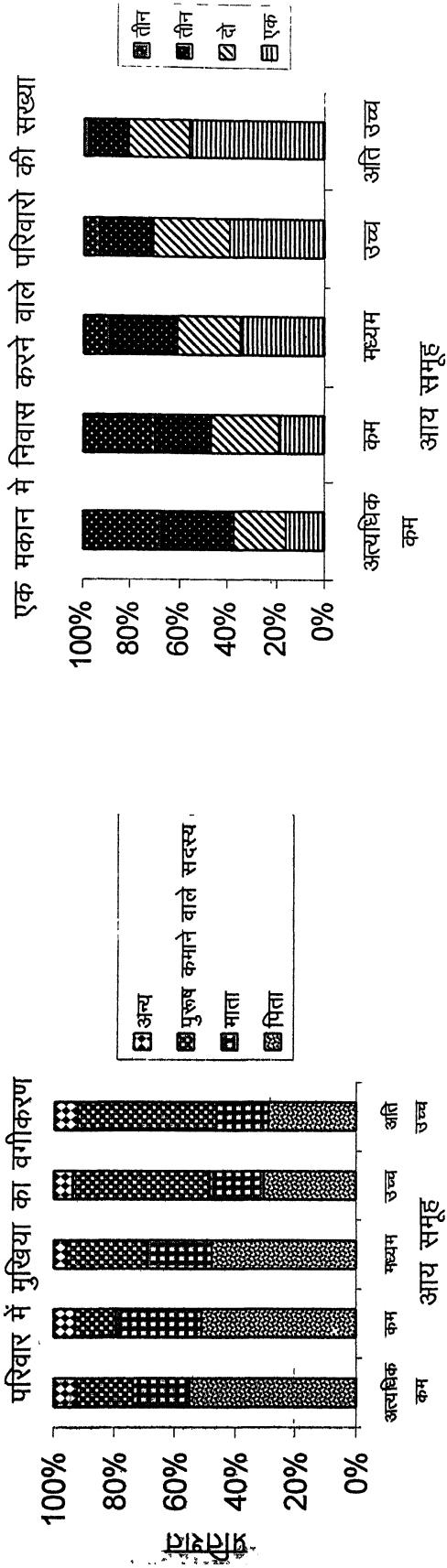
स्रोतः— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 13

मध्यम आय वर्ग समूह मे परिवार का मुखिया पिता है ऐसा इसलिए है क्योकि ये अपेक्षाकृत निम्न आय वर्ग के परिवार है जो जीवन के पारम्परिक रास्ते को अपनाते है जहा पिता ही परिवार का मुखिया हो सकता है और वह ही परिवार के सभी निर्णय लेता है जबकि उच्च आय वर्ग समूह मे 45 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग समूह मे 46 प्रतिशत अन्य पुरूष कमाने वाला सदस्य परिवार का मुखिया है। अधिकतर उदाहरणो मे वह मुखिया परिवार का बडा पुत्र होता है या साक्षात्कार किये जाने वाले परिवार का बडा सदस्य।

लगभग 19 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग समूहो मे एक 28 प्रतिशत कम आय वर्ग समूह मे परिवार मे महिलाये मुखिया है क्योकि इन परिवारो मे पुरूष सदस्य कमाते नही है। इन परिवारो के पुरूष सदस्य घर पर ही रहते है। सारा दिन, और इनकी महिलाये दूसरे घरो मे सहायक या नौकरानी का काम कुछ रूपयो के लिए करती है क्योकि परिवार चलता रहे। एक बडी सख्या मे परिवार मे अन्य सदस्य मुखिया के रूप मे पाये गये जैसे चाचा, ससुर, चचेरा, ममेरा भाई।

सारणी 1 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले परिवारो की सख्या (प्रतिशत मे)

आय समूह	एक	दो	तीन	> तीन	योग
अत्यधिक कम	15 72	22 01	29 88	32 39	100 00
कम	18.73	27.91	23 68	29 68	100 00
मध्यम	34 22	26.22	28.16	11.40	100 00
उच्च	38 90	31 78	22.74	6.58	100.00
अति उच्च	56 44	24 75	16 83	1.98	100 00
योग	32.80	26.54	24 26	16 40	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 9 और प्लेट 1 3 चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले परिवारो की सख्या को दिखा रहा है। यहा सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 32 प्रतिशत अत्यधिक कम आय

वर्ग समूहो मे, 29 प्रतिशत कम आय वर्ग सनूह मे एव लगभग 12 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग समूहो मे, एक मकान मे तीन से अधिक परिवार निवास करते है। उनके घर छोटे एव पुराने है। इनके घरो मे अधिक सदस्य होने के कारण सभी व्यवस्थाये गडबड पायी जाती है एव प्रति सदस्य को घर मे कम स्थान मिलता है, भोजन पर दबाव पडता है एव साफ–सफाई भी ठीक नही रहती है। लेकिन अत्यधिक उच्च आय वर्ग मे सदस्य अधिक भी होते है तो व्यवस्था ठीक ही रहती है। लगभग 39 प्रतिशत उच्च आय वर्ग मे एव 56 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के परिवार मे केवल एक परिवार ही निवास करता है। इनके घर बडे भी है एव वैभवशाली भी है इसलिए इन मकानो मे सभी व्यवस्थाये ठीक पायी जाती है।

सारणी 1 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले सदस्यो की सख्या (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 5 या 5	6 – 10	11 – 15	> 15	योग
अत्यधिक कम	12 27	33.96	36 16	17.61	100 00
कम	18.38	27.92	33.21	20.41	100 00
मध्यम	21.12	28 64	31.31	18.93	100 00
उच्च	45 48	29 05	21 37	4.10	100 00
अति उच्च	56 93	32.67	8.91	1.49	100 00
योग	30 83	30 45	26.20	12 52	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 10 और प्लेट 1 3 चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले सदस्यो की संख्या को दिखा रहा है। यह देखा गया कि अधिकतर अत्यधिक न्यून आय वर्ग के (36 प्रतिशत मे) परिवारो मे एव 33 प्रतिशत कम आय वर्ग व 31 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवारो मे एक मकान मे 11 से 15 सदस्य रहते है। जबकि उच्च (45 परिवारो मे) एव अति उच्च (57 प्रतिशत परिवारों में) आय वर्ग के घरो मे 5 से कम सदस्य या पाच सदस्य निवास करते है। उच्च आय वर्ग के बहुत कम परिवार ऐसे हैं जहां 15 सदस्य तक निवास करते है आकडा

दिखाता है कि कम आय वर्ग के परिवारो मे अधिक से अधिक सदस्य रहते है इसका परिणाम यह होता है कि घर मे भीड सी लगी रहती है व स्नान घर व शौचालय गन्दे रहते है। अधिक सदस्यो के होने से घर के बाहर कूडा करकट भी अधिक मात्रा मे एकत्रित होता है जो प्रदूषण का मुख्य कारण बनता है। इन लोगो को अतिरिक्त ईंधन की आवश्यकता भोजन पकाने के लिए पडती है जो घरो मे बढे हुए वायु प्रदूषण का कारण बनता है।

पारिवारिक स्थिति :-

घरो की स्थिति का अदाजा आय या धन से लगाया जा सकता है और सभी उदाहरणो मे पर्यावरणीय स्थिति भी इसी पर निर्भर रहती है। पारिवारिक स्थिति का पता संसाधनो का स्वामित्व जैसे पखा, प्रेस, रसोई गैस, फ्रिज, बीसीआर, वीसीपी, जनरेटर, धुलाई की मशीन, वातानुकूलित कमरे एव वाहनो जैसे साइकिल, मोपेड, मोटर साइकिल और कार, जीप आदि को देखकर लगाया जा सकता है।

सारणी 1 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे उपयोग मे आने वाले उपकरणो का विवरण (प्रतिशत में)

आय समूह	पखा	प्रेस	गैस	फ्रीज	श्याम श्वेत टी.वी.	कूलर	रगीन टी.वी
अत्यधिक कम	28.62	9.89	—	—	19.78	—	—
कम	69.61	61 92	8.12	—	80 20	9.13	1.01
मध्यम	90.53	97 05	58.71	32.17	41.01	21 98	45.84
उच्च	100 00	100 00	90.13	88 50	56.98	70.13	68 76
अति उच्च	100 00	100 00	100 00	100 00	14 35	95 54	78.71

आय समूह	फोन	VCR/VCP	जनरेटर	वाशिंगमशीन	गीजर	एयरकडीशनर	कुछ नही
अत्यधिक कम	—	—	—	—	—	—	71.38
कम	—	—	—	—	—	—	30.39
मध्यम	—	11·52	-		-	-	9 47
उच्च	40 54	50 13	32 60	15 61	7 67	—	—
अति उच्च	99·0	72 27	75 24	75 24	52 47	13.36	—

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

नगर मे वाहनो के स्वामित्व मे विभिन्न आय वर्ग मे वैभिन्य है। जैसा कि सारणी 1 11 और प्लेट 1 4 मे दिखाया गया है कि पखा उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी परिवारो मे है जबकि अत्यधिक कम आय वर्ग के 28 प्रतिशत परिवारो मे ही पखा पाया गया। एयर कडीशनर जैसी महगी सुविधा केवल अति उच्च आय वर्ग के 13 प्रतिशत घरो मे ही पायी गयी। अन्य बिजली से चलने वाले उपकरण जैसे रंगीन टेलीविजन, वीसीआर, वीसीपी, फ्रिज, गीजर और धुलाई की मशीन धनी परिवारो मे ही देखे गये। घरो मे आमतौर पर कम देखे जाने वाले उपकरण जैसे टेलीफोन, जनरेटर वातानुकूलित कमरे आदि महगे उपकरण अत्यधिक उच्च आय वर्ग मे ही देखे गये। उच्च आय वर्ग मे लगभग सभी उपकरण देखे गये। उच्च आय वर्ग मे केवल 14 प्रतिशत परिवारो मे श्याम श्वेत टेलीविजन पाया गया जबकि अधिकतर के पास रगी टेलीविजन भी था। श्याम श्वेत टेलीविजन उनके घर के बच्चो के शयनकक्ष मे रहते है। दूसरी तरफ अत्यधिक कम और कम आय वर्ग मे पखा, प्रेस जैसे उपकरण ही अधिकतम पाये गये। अत्यधिक कम आय वर्ग एव कम आय वर्ग मे लोकल कम्पनी का बना हुआ छोटा वाला श्याम श्वेत टेलीविजन ही देखा गया जो बाजार मे बहुत सस्ता मिल जाता है।

यह पाया गया कि रिक्शा खीचकर जीवन निर्वाह करने वाले लोगो के घरो मे भी छोटा वाला टेलीविजन पाया जाता है। क्योकि इन निम्न आय वर्ग में भी यह चलन है कि घर में टेलीविजन हो। दूसरी तरफ 71.[illegible] प्रतिशत अधिक कम आय वर्ग के, 30 प्रतिशत कम
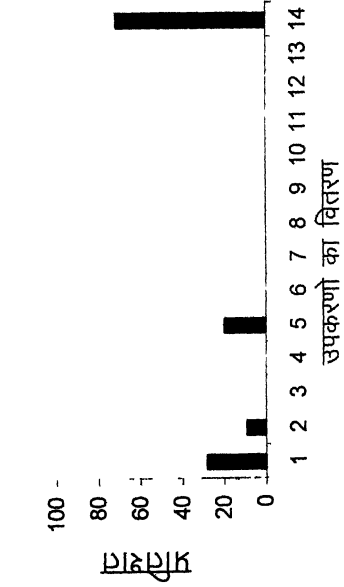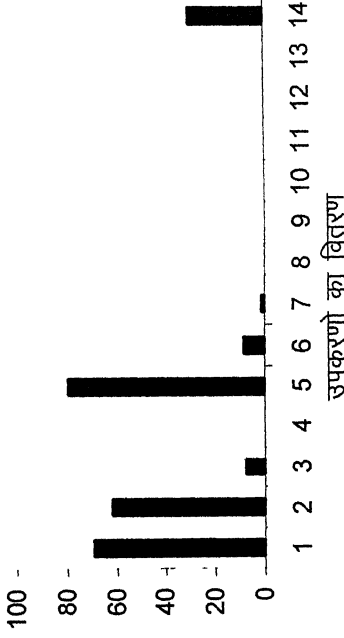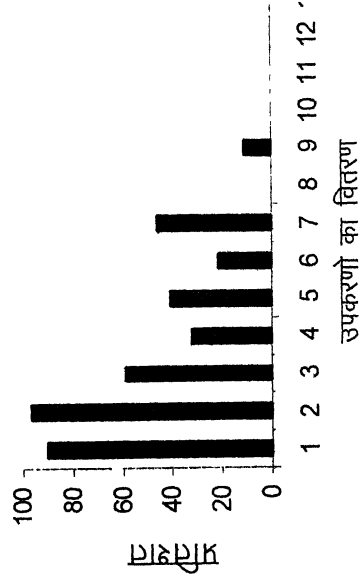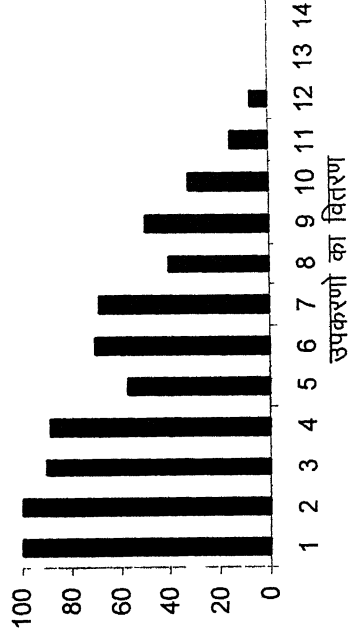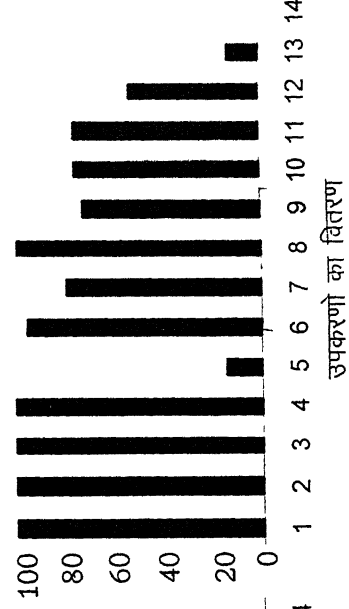
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 14

आय वर्ग मे व 9 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवारो मे कोई भी उपकरण नही पाया क्योकि यो लोग उपकरणो व ससाधनो पर पैसे खर्च करना, फिजूल खर्च मानते है।

सारणी 1 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वाहनो का स्वामित्व (प्रतिशत मे)

आय समूह	साइकिल	मोपेड	मोटर साइकिल	कार/जीप	कुछ नही
अत्यधिक कम	69.50	5.42	2 26	—	30 50
कम	80 57	11.40	5.26	—	19.43
मध्यम	94.17	32.47	12 11	—	5.83
उच्च	48.21	65 00	75.61	32 05	—
अति उच्च	28.71	23 26	80 20	60.69	—

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

वाहनो का स्वामित्व सारणी 1 12 व प्लेट 1 5 मे दर्शाया गया है। यहा यह देखा गया कि वाहनो के स्वामित्व मे विभिन्न आय वर्ग मे बहुत वैभिन्य पाया जाता है। लगभग 66 प्रतिशत परिवारो के पास अपनी साइकिल है। अत्यधिक कम आय वर्ग कम व मध्यम आय वर्ग के अधिकतर परिवारो मे कही आने–जाने के लिए साइकिल का प्रयोग करते है। कुछ एक उदाहरणो मे मोपेड व मोटर साइकिल का भी प्रयोग होता है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के लगभग तीन चौथाई परिवारो के पास मोटर साइकिल है और 32 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के पास एव 60 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के पास अपनी कार या जीप है। कुछ परिवारो के पास अत्यन्त महगी कार है व कुछ के पास एक से अधिक कार है। चार पहिये वाले वाहन अमीर या उच्च आय वर्ग के पास ही हैं।

जौनपुर नगर

वाहनों का स्वामित्व 1999

अत्यधिक कम आय वर्ग

प्रतिशत
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5

कम आय वर्ग

100
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5

मध्यम आय वर्ग

100
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5

उच्च आय वर्ग

प्रतिशत
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5

अति उच्च आय वर्ग

100
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5

1 साइकिल
2 मोपेड
3 मोटरसाइकिल
4 कार / जीप
5 कुछ नही

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 15

चयनित घरों का शैक्षिक व्यावसायिक व स्थानान्तरण का स्तर :-

अध्याय के इस भाग मे शैक्षिक व्यावसायिक व स्थानान्तरण के स्तर पर विस्तृत वर्णन किया गया है।

सारणी 1 13 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे शिक्षा का स्तर (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	शिक्षित	अशिक्षित	प्रतिशत
अत्यधिक कम	22 24	77 76	100 00
कम	33.84	66 16	100.00
मध्यम	62 30	37.70	100 00
उच्च	85 44	14 56	100 00
अति उच्च	95 18	4 82	100 00
योग	59 8	40 20	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1.14 शिक्षित लोगों का विभाजन (प्रतिशत में)

आय समूह	प्राइमरी	हास्कूल/इन्टर	स्नातक	स्नातकोत्तर	डाक्टरेक्ट	अन्य
अत्यधिक कम	13 84	4.57	—	—	—	3.83
कम	15.55	12 63	—	—	—	5 66
मध्यम	16 48	21 00	10 28	5 37	2 07	7 1
उच्च	7.51	20 53	26 23	18 28	7 13	5 76
अति उच्च	5 93	7.93	34 72	35.28	8 32	3.00
योग	11 86	13 33	14 24	11 79	3 50	5 07

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर
चयनित घरों का शैक्षिक स्तर 1999
अत्यधिक कम आय वर्ग
2 कम आय वर्ग
मध्यम आय वर्ग
उच्च आय वर्ग
अति उच्च आय वर्ग
प्रतिशत
100
80
60
40
20
0
1 2 3 4 5 6 7 8
शिक्षित
अशिक्षित
प्राइमरी
हाईस्कूल / इण्टर
स्नातक
स्नातकोत्तर
डाक्टरेट
अन्य
स्रोत.— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
प्लेट 16
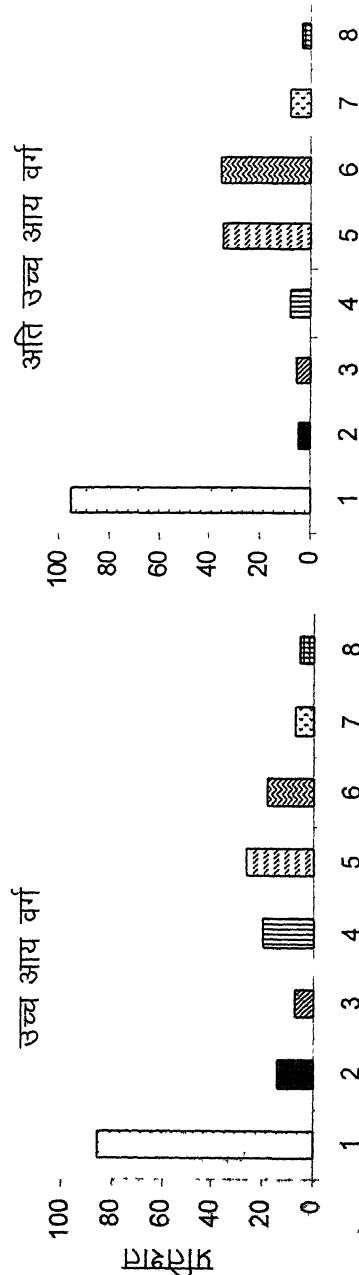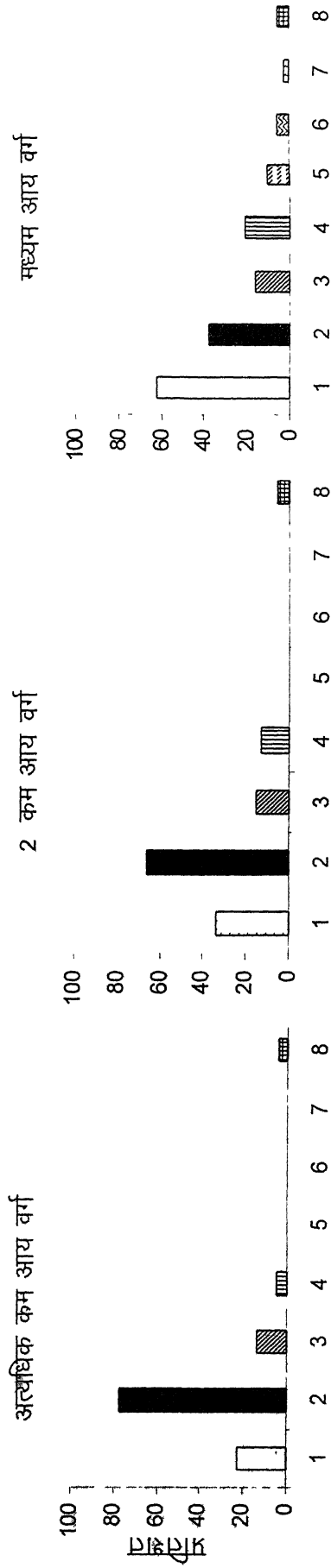
सारणी 1 13 व 1 14 और प्लेट 1 6 मे चयनित घरो के शैक्षिक स्तर को दिखाया गया है। चयनित घरो के कुल लगभग 60 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित है बाकी अशिक्षित है। यह देखा गया 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 66 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 37 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग पूर्णत अशिक्षित है। इसका मुख्य कारण उनकी अधिक कम आय है। बचपन से ही ये लोग स्कूल जाने की बजाय छोटी–मोटी फैक्ट्री- मे या चाय की दुकान व होटलो मे अपने घर की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ ही रूपयो के लिए काम करते है। उच्च आय वर्ग मे 14 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग मे 4 प्रतिशत लोग भी अशिक्षित है। इनमे सर्वेक्षित परिवार के दादा–दादी या नाना–नानी या अन्य बूढे सदस्य ही सम्मिलित है। अधिक सख्या मे स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध उपाधि धारक अत्यधिक उच्च आय वर्ग के परिवारो मे ही पाये गये। यह भी देखा गया कि कम व मध्यम आय वर्ग मे लोगो के पढाई छोडने का समय हाईस्कूल या इण्टर पास करने के बाद और निम्न आय वर्ग मे कक्षा पाच या आठ पास करने तक है। इसका मुख्य कारण इनके बडे परिवार आकार है। ये लोग उच्च शिक्षा में लगने वाली फीस का भार वहन नही कर सकते इसलिए इन परिवारो के बच्चे छोटे–मोटे काम में लगना बेहतर समझते है जहा से ये लोग प्रतिमाह मुश्किल से 100 या 200 रूपये पाते है।

व्यवसाय लोगो के पारिवारिक वातावरण पर असर डालते है। यदि कोई व्यक्ति मैकेनिक है, मजदूर है या किसी फैक्ट्री मे काम करता है तो उसका काम करने का वातावरण प्रदूषण से भरा होगा उसका स्वास्थ्य और व्यवहार उन लोगो से पूर्णत भिन्न होता है जो सरकारी नौकरी करतें या अधिकारी है। इसलिए हम कह सकते है कि घर के वातावरण की स्थिति मे व्यवसाय की बहुत मुख्य भूमिका होती है चयनित घरो के बहुत से परिवारों के पास मकान निचले हिस्से मे छोटा मोटा कारोबार (उद्योग या दुकान) खुला हुआ है और ये लोग मकान के पहले मजिल या दूसरे मजिल पर रहते है।

सारणी 1 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो के व्यवसाय (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	मजदूर	व्यापारी	छात्र	लिपिक	इन्जीनियर	विद्यालय अध्यापक	डाक्टर	अन्य
अत्यधिक कम	55 06	—	7 47	15 87	—	—	—	21 6
कम	40 0 0	5 58	8 46	17.5	—	—	—	28 46
मध्यम	4 32	18 67	29 89	14 40	3 60	16 90	2 16	10 06
उच्च	—	30 90	10 20	7 41	22 42	8 45	13 43	7 19
अति उच्च	—	32 50	14 18	—	23 82	12 92	14.93	1 65
योग	19 88	17 53	14 04	11 03	9 97	7 65	6.10	13.8

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 15 और प्लेट 1 7 के अनुसार अत्यधिक कम व कम आय वर्ग के लोग अधिकाश मैकेनिक, मजदूर है या फैक्टरी और दुकान, गैरेज मे काम करते है। ये लोग इस तरह का और काम भी करते है जैसे सिलाई करना, मिठाई बनाना, रिक्शा खीचना, नाईगीरी या चपरासी का काम। मध्यम आय वर्ग मुख्यत व्यापार करने के व्यवसाय मे (18 प्रतिशत) या विद्यालय से सम्बन्धित किसी पद पर (16 प्रतिशत) है। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग को लोगो मे अधिकतर इजीनियर , डाक्टर, डिग्री कालेज अध्यापक है या उनका वृहद स्तर का कोई व्यवसाय है।

घरो की पर्यावरणीय समस्या जिसे नगर के निवासी झेलते है वह ग्रामीण निवासियो से पूर्णत भिन्न होती है। किन्ही उदाहरणो मे यह देखा जाता है कि ग्रामीण लोग शहर मे बस कर समस्या को और बढाते हैं क्योकि ये लोग शहरी वातावरण मे ढल नही पाते हैं ओर शहर मे भी गांव की तरह का ही रहन सहन रखते है।
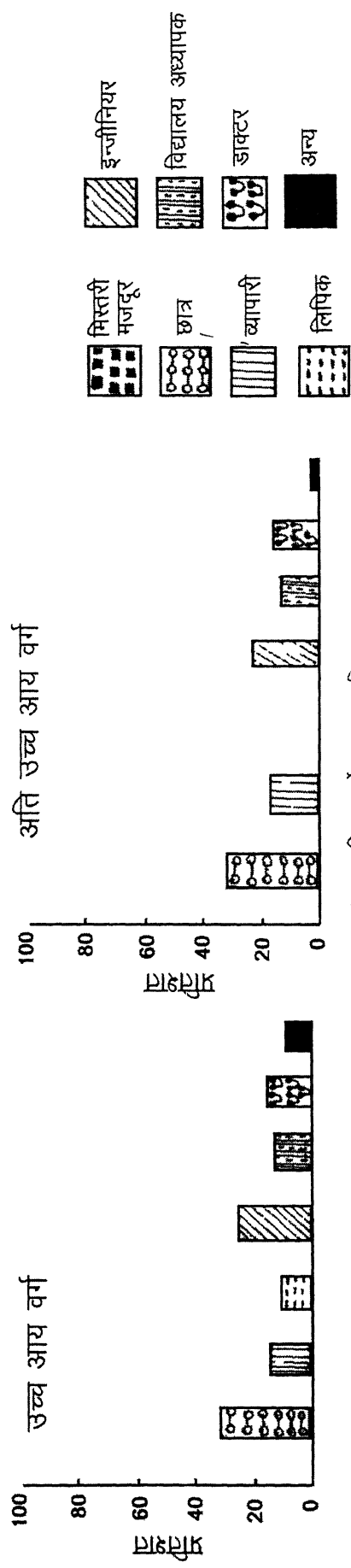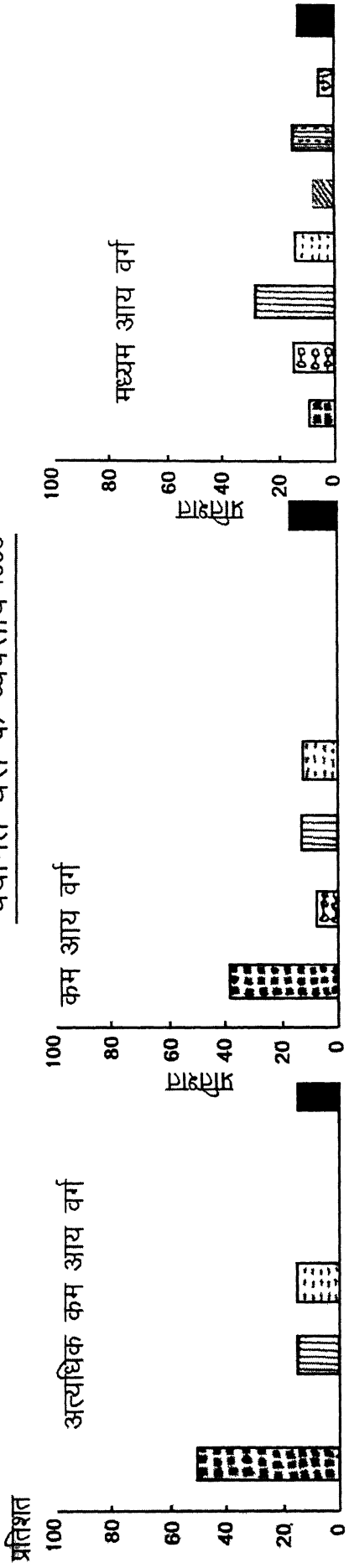
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 17

सारणी 1 16 जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रवजन पर आधारित विवरण (1999)

प्रतिशत मे

आय समूह	स्थानान्तरण का स्तर		स्थानान्तरण के कारण				
	स्थानान्तरण करते है	स्थानान्तरण नही करते	अच्छे आवास हेतु	अच्छे पर्यावरण हेतु	रोजगार हेतु	धार्मिक कारण	अन्य कारण
अत्यधिक कम	30.19	69.81	---	---	52.08	4.17	43.75
कम	38.16	61.84	---	---	64.81	5.56	29 63
मध्यम	45 39	54 61	10.16	14.97	42.76	15.00	17 11
उच्च	60.82	39.18	41.44	19.37	12 62	17.57	9.00
अति उच्च	72.27	27.73	49 32	31.50	6.17	9.59	3.42
योग	49 34	50 66	20.19	13 16	35 69	10 38	20 58

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 16 और प्लेट 1 8 मे नगर के लोगो के स्थानान्तरण का स्तर दिखाया गया है। जैसा कि सारणी मे दिखाया गया है चयनित घरो के लगभग आधे किसी न किसी कारण से स्थानन्तरण करते हैं बाकी लोग अपना निवास कभी नही छोडते। लगभग 69 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 61 प्रतिशत कम आय वर्ग व 54 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग स्थानन्तरण नही करते है क्योकि उनके काम करने का स्थान घर से अधिक दूरी पर नही होता। इस प्रकार की स्थिति मुख्यत. नगर के पुराने भाग मे देखी गयी। लगभग 30 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 38 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 45 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग रोजगार हेतु नगर से स्थानान्तरण कर चुके है। अत्यधिक कम आय वर्ग के घरो मे अधिकतर रिक्शा खीचने वाले है जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो से आते है या दूसरे जिले से आते है। ये लोग नगर मे केवल दो या तीन महीनो के लिए काम पर आते है उसके बाद कुछ दिनो के लिए अपने आवास पर चले जाते है लेकिन कुछ लो ग नगर मे ही हमेशा के लिए कोई नौकरी करना चाहते है और घूम फिर कर नगर में ही रहते है। ये लोग नगर मे अतिरिक्त भार के रूप मे रहते हैं व ससाधनो पर अधिक दबाव डालते हैं। दूसरी तरफ 60 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 72 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग नगर मे बाहरी छोर तक स्थानन्तरण करते

जौनपुर नगर

प्रवजन स्तर 1999
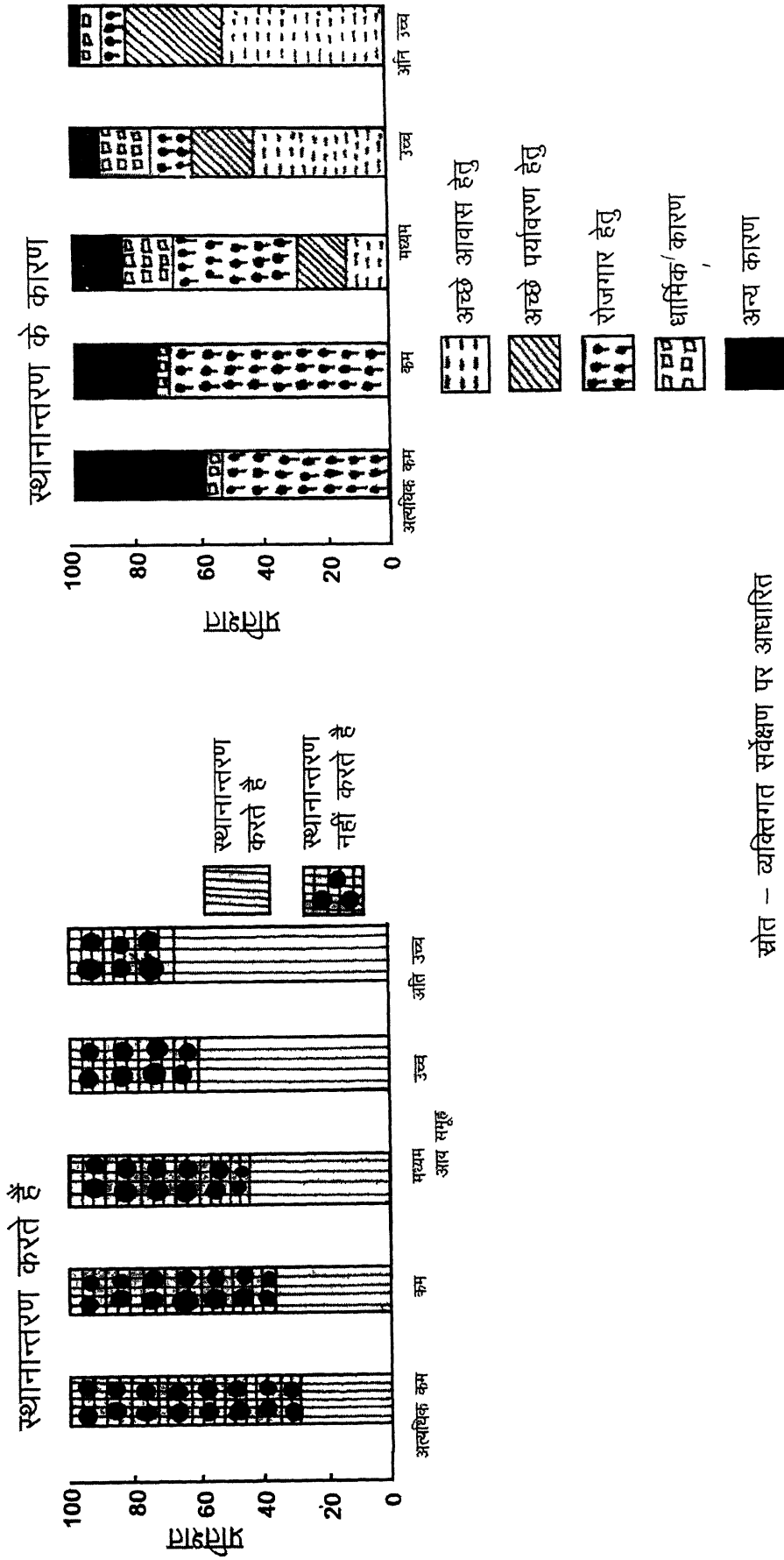
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 1.8

है। इनके पास दो–दो, तीन–तीन आवास रखने हेतु पर्याप्त धन होता है।

सारणी 1 16 और प्लेट 1 8 मे नगर के लोगो के स्थानान्तरण (एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले मे) के विभिन्न कारण दिखाये गये है परिवारो ने स्थानान्तरण मुख्य रूप से बेहतर आवास की तलाश मे रोजगार हेतु धार्मिक कारण से व अन्य कारण से जैसे विवाह, साम्प्रदायिक दगे आदि के कारण किये गये। यह देखा गया कि 52 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 64 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 42 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग रोजगार के लिए उस क्षेत्र के लिए स्थानान्तरण कर जाते है जहॉ वे मजदूर के रूप मे काम करते है, विभिन्न फैक्ट्री मे काम करते है जैसे मकान बनाने के सामान की फैक्ट्री, मशीन के पुर्जे की फैक्ट्री आदि। कुछ निम्न आय वर्ग के लोग साम्प्रदायिक दगो के भय से भी स्थानान्तरित हो जाते है जो अधिकतर मुसलमानी क्षेत्रो मे होते है। लगभग 41 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 49 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग केवल बेहतर आवास के कारण स्थानान्तरण कर गये। एक बडी संख्या मे उच्च आय वर्ग के लोग बेहतर पडोस, पर्यावरण हेतु भी स्थानान्तरण करते हैं। लगभग 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 17 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोग धार्मिक कारणो से स्थानान्तरित होते है। प्राचीन समय से ही जौनपुर नगर मे मुसलमान अधिक सख्या में रहते है। उन क्षेत्रों मे जहॉ मुसलमान व हिन्दू दोनो रहते है कभी–कभी दगे भडक जाते है। इसलिए अधिकाश मुसलमान मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे व हिन्दू हिन्दू बहुल क्षेत्र मे ही जाकर बसना चाहते है।

भाग - दो

जौनपुर नगर में घरों की पर्यावरणीय स्थिति

अध्याय - दो

जौनपुर नगर में घरों के स्नानगृह एवं सफाई की स्थिति
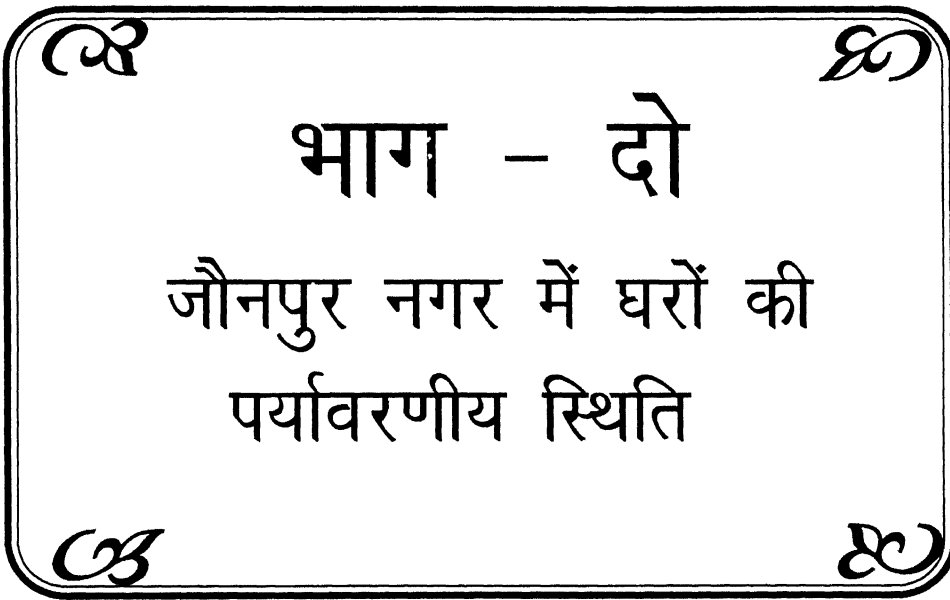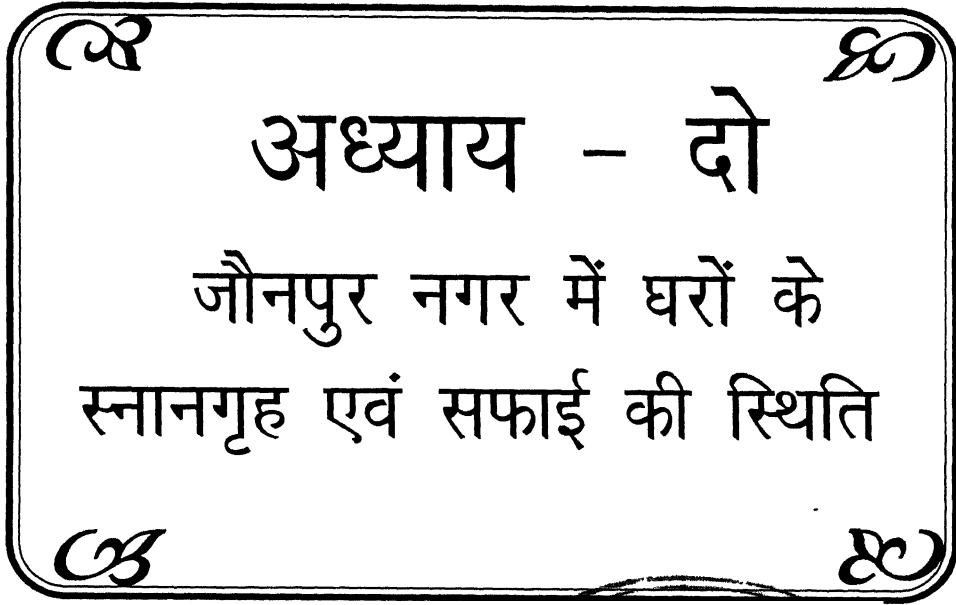
इस अध्याय मे नगर की पर्यावरणीय स्थिति का वर्णन नगर के कुल 1580 मकानो के सर्वेक्षण के आधार पर किया गया है एव इसके आधार पर सम्पूर्ण नगर के घरो के स्नानगृह एव साफ–सफाई की स्थिति का पता लगाया गया मुख्य रूप से यही घरो के पर्यावरण को समझने के भाग है।

पिछले अध्याय मे यह बताया गया कि कुल उत्तरदाताओ मे 62 53 प्रतिशत स्त्रिया थी एव 37 47 प्रतिशत पुरूष थे। लगभग 25 प्रतिशत उत्तरदाता 15 से 25 वर्ष के बीच थे और केवल 9 प्रतिशत उत्तरदाता 45 वर्ष के उपर के थे। यहा पर लगभग 60 प्रतिशत मुसलमान उत्तरदाता थे, 28 प्रतिशत हिन्दू उत्तरदाता, 2 प्रतिशत सिक्ख, 1 प्रतिशत क्रिश्चियन और 8 प्रतिशत अन्य धर्मों के थे। कुल चयनित घरो के लगभग 20 प्रतिशत परिवार अत्यधिक कम आय वर्ग के (आय 1500 रू से कम प्रतिमाह), 17 प्रतिशत परिवार कम आय वर्ग के (1500 से 2999 रू0 प्रतिमाह), 26 प्रतिशत परिवार मध्यम आय वर्ग के (3000 से 4999 रू0 प्रतिमाह) 23 प्रतिशत परिवार उच्च आय वर्ग के (5000 से 9000 रू0 प्रतिमाह) और 13 प्रतिशत परिवार अति उच्च आय वर्ग (9000 से अधिक प्रतिमाह) के पाये गये है। यह दिखाता है कि चयनित घरो मे आय के पर्याप्त विभिन्नता रही है।

इस अध्याय मे नगर के घरो कें स्नानगृह एवं साफ सफाई की स्थिति का वर्णन चयनित घरो के सर्वेक्षण के आधार पर करने का प्रयास किया गया है। आकडे, क्षेत्र का व्यक्तिगत सर्वेक्षण करके एकत्रित किये गये।

आवासीय स्थिति :-

पर्यावरणीय स्थित को समझने मे आवास मुख्य भूमिका निभाते है। उचित और ठीक आवासीय व्यवस्था स्वस्थ जीवन के लए आवश्यक है क्योकि यह निवासियो के कार्य छमता एव कुशलता मे वृद्धि करता है, जिसके आधार पर उनका आर्थिक विकास होता है। उत्तरदाता के आवासीय स्थितियो का अध्ययन करते सयम निम्नलिखित तथ्यो पर विचार किया गया कि घर अपना है या किराये का है, घर का प्रयोग किस रूप मे होता है (केवल आवास के

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के प्रकार व आवासीय स्थिति 1999
घरो का स्तर
प्रतिशत
100%
80%
60%
40%
20%
0%
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
अन्य रिस्तेदरा के मकान
सरकारी आवास
किराये का मकान
अपना मकान
घरो का प्रयोग
आवास उद्योग एव व्यापार हेतु
आवास एव व्यापार हतु
आवास एव उद्योग हतु
केवल आवास हेतु
मकान के प्रकार
अन्य टीन आदि
लकडी के झुग्गी
मिटटी के
ईट एव कक्रीट के
घर के फर्श का क्षेत्रफल
> 200 वर्ग फीट
1001 से 2000 वर्ग फीट
300-1000 वर्ग फीट
< 300 वर्ग फीट
प्लेट 21
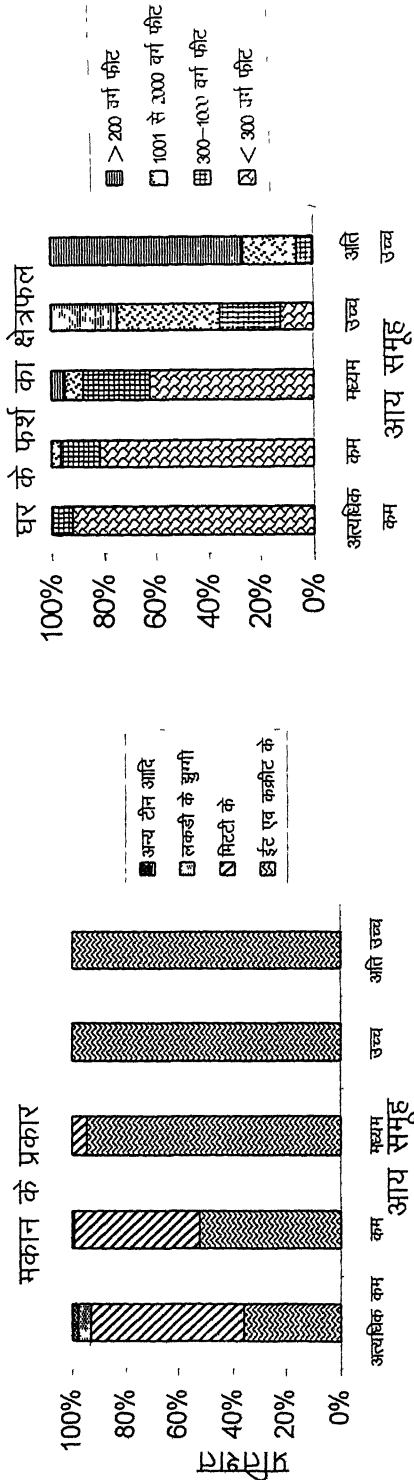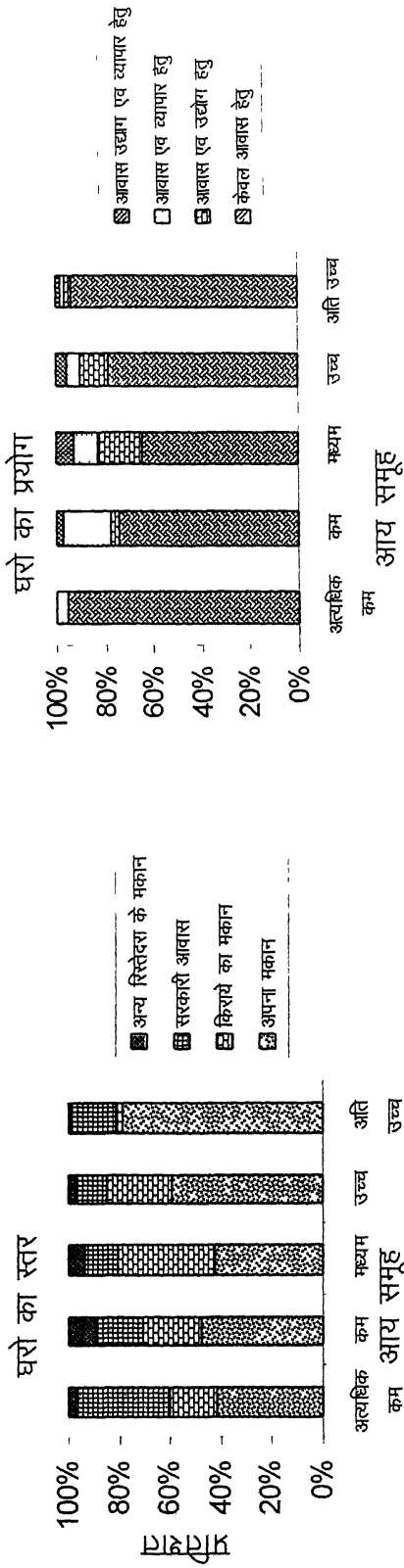
रूप मे, उद्योग के रूप मे, व्यापार के रूप मे) आवास निर्माण किस प्रकार का है (कंक्रीट का बना है, मिट्टी का बना है, लकडी का है, झुग्गी है या टीन का है) मकान का जमीनी क्षेत्र कितना है (300 वर्ग फीट से कम है या 2000 वर्ग फीट है), मकान मे कितने कमरे है (एक है या 2,3,4,5) कमरो का औसत क्षेत्रफल कितना है (100 वर्ग फीट से कम है या 200 या 300 वर्ग फीट है), घर का घनत्व (जैसे 10, 20 या 30 वर्ग फीट प्रति सदस्य है), कितना है। वातायन की स्थिति कैसी है, आदि।

घर का स्तर :-

सारणी 2 1 और प्लेट 2 1 चयनित घरो के स्तर का वर्गीकरण दिखाता है।

सारणी 2.1 जौनपुर नगर के चयनित घरो के स्तर का वर्गीकरण (1999)(प्रतिशत में)

आय समूह	अपना मकान	किराये का मकान	सरकारी आवास	अन्य रिश्तेदार के मकान	योग
अत्यधिक कम	41 50	19.20	37.10	2 20	100 00
कम	48.05	22 27	19.43	10.25	100 00
मध्यम	42.72	37.63	13.10	6 55	100.00
उच्च	59 45	25 48	12 33	2.74	100 00
अति उच्च	78.71	2 47	17 82	1.00	100.00
योग	54 08	21.42	19.95	4 55	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह देखा गया कि 41 प्रतिशत के लगभग अत्यधिक कम आय वर्ग के 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोगो के पास किसी न किसी प्रकार का अपना मकान है लेकिन इन घरो में केवल एक कमरा है और वह भी बहुत पुराना है। ये लोग अब भी उसी मे रहते हैं क्योंकि उनके पास और कोई विकल्प नहीं ही है ओर उनके काम करनें स्थान भी पास ही है। लगभग 37 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के एव 19 प्रतिशत कम आय वर्ग के के लोग

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों की आवासीय स्थिति
प्रतिशत
घरों में कुल कमरों की संख्या
100
80
60
40
20
0
1
2–3
4–5
> 5
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
कमरों का क्षेत्रफल
प्रतिशत
< 100 वर्ग फीट
100 200 वर्गफीट
200–300 वर्गफीट
> 300 वर्ग फीट
प्रति व्यक्ति को शयनकक्ष में मिलने वाला स्थान
10 वर्ग फीट
10–20 वर्ग फीट
21–30 वर्ग फीट
> 30 वर्ग फीट
घर में वातायन की स्थिति
उपयुक्त है
उपयुक्त नही है
स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
प्लेट 22
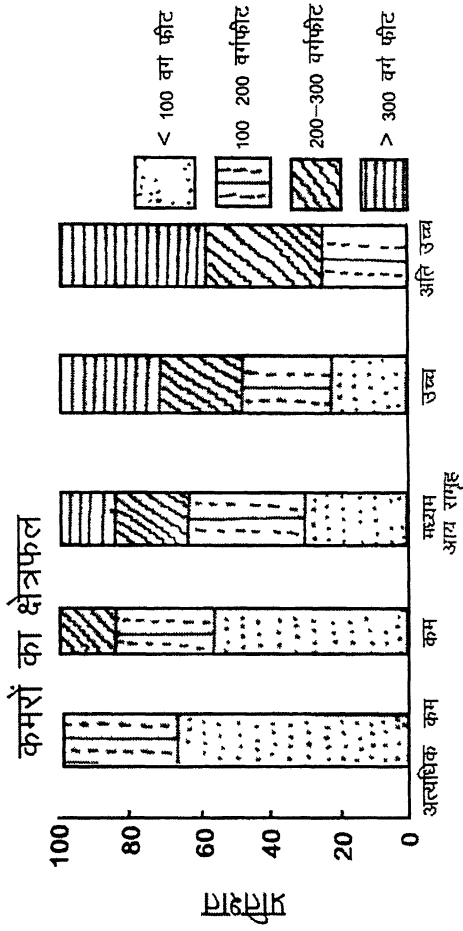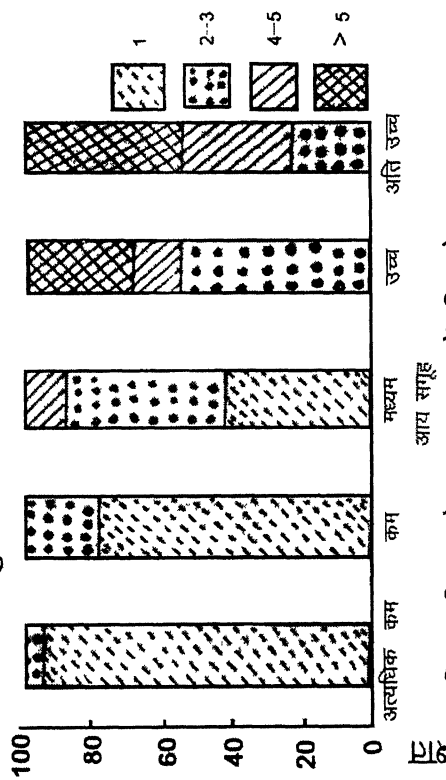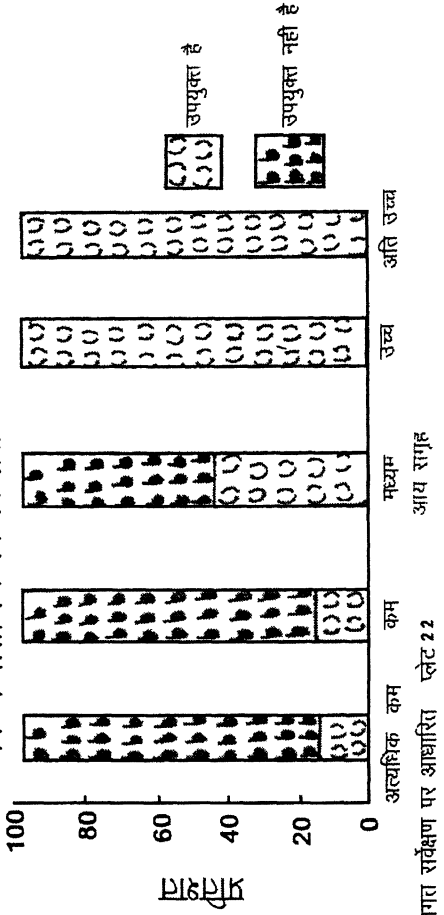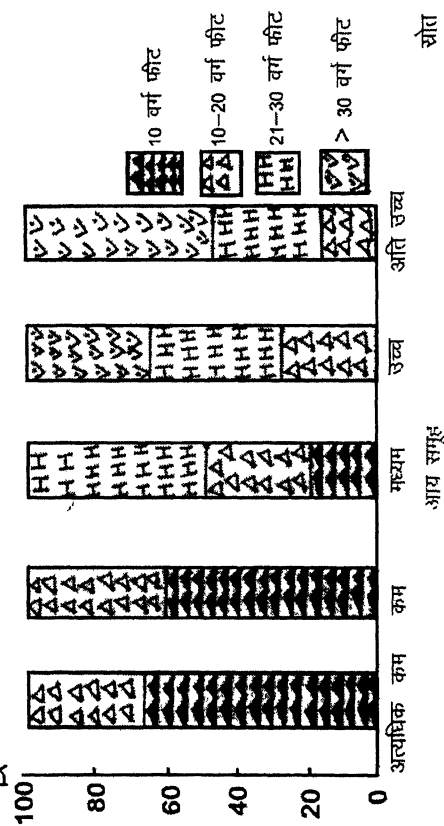
सरकारी आवास मे रहते है इनमे क्लर्क (लिपिक) , तकनीशियन (तकनीकी जानकार), मजदूर, चपरासी एव सफाई कर्मी आते है। यहा लगभग 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग अपने मकान मे रहते है जबकि 37 प्रतिशत किराये के मकान मे रहते है वही दूसरी तरफ उच्च आय वर्ग 60 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 78 प्रतिशत लोगो के पास अपना मकान है। उच्च आय वर्ग के भी लगभग 25 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 2 प्रतिशत लोग किराये के मकान मे रहते है। इनमे अधिकाश विद्यालय के अध्यापक है। मकानो का मूल्याकन सामान्य तौर पर इस आधार पर किया जाता है कि यदि उसे किराये पर उठाया जाय तो उससे कितनी आय हो सकती है। कुछ पुराने मकान मे कमरे अपेक्षाकृत सस्ते किराये पर मिलते है। सम्भ्रान्त आवासीय क्षेत्र मे किराये पर मिलने वाले कमरे 1000 रूपये प्रतिमाह की दर मिलते है, वही पर पिछडे व गरीब तबके के लोगो के निवास क्षेत्र मे उसी तरह के कमरे 200 रूपये प्रतिमाह की दर से किराये पर मिल जाते है । किराये पर रहने के इच्छुक सरकारी कर्मचारी सरकारी आवास मे रहना इसलिए पसद करते है क्योकि वेतन का लगभग 10 प्रतिशत भाग आवास भत्ते के रूप मे मिल जाता है और उतने मे ही उन्हें सरकारी अच्छा आवास मिल जाता है। इनमे से कुछ मकान बहुत पुराने निर्धारित किराये के है जो बहुत ही सस्ते है। लगभग 12 प्रतिशत उच्च और 17 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग भी सरकारी आवास मे ही रहते है। इनमे उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी है या विश्वविद्यालय के अध्यापक है। कुछ अत्यधिक कम आय वर्ग के, कम या मध्यम आय वर्ग के लोग अपने किसी रिश्तेदार के मकान मे रहते है जहॉ वे कोई किराया नही देते है।

घर का प्रयोग :-

सारणी 2 2 और प्लेट 2 1 चयनित घरो के प्रयोंग के वर्गीकरण को दिखाता है कि मकान का प्रयोग केवल आवास के रूप मे होता है या आवास एव उद्योग दोनो रूप मे और आवास व व्यवासाय दोनो रूप मे होता या आवास, उद्योग व्यापार तीनो रूप में होता है।

सारणी 2 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रयोग (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	केवल आवास हेतु	आवास एव उद्योग हेतु	आवास एव व्यापार हेतु	आवास उद्योग एव व्यापार हेतु	योग
अत्यधिक कम	95.28	--	4.72	--	100 00
कम	74.56	3.53	19.43	2.48	100 00
मध्यम	64.32	18 68	10.2	6.80	100 00
उच्च	73 15	14.53	7.12	5.20	100 00
अति उच्च	93.57	3.46	148	1.48	100 00
योग	80.17	8 04	8 60	3 19	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहां यह देखा गया कि 95 प्रतिशत से अधिक अत्यधिक कम आय वर्ग, 74 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग अपने मकान को केवल आवास के रूप मे प्रयोग करते है। जबकि 4 प्रतिशत अत्यधिक कम और 19 प्रतिशत कम आय वर्ग के परिवार अपने मकान आवास व व्यापार दोनो हेतु प्रयोग करते है ये लोग अपने घरो मे ही सटे कमरे मे कोई दुकान खोले है जे बहुत छोटी है। मध्यम आय वर्ग के मामले मे 64 प्रतिशत परिवार अपने मकान का केवल आवास के रूप मे प्रयोग करते है जबकि 19 प्रतिशत, मकान का प्रयोग आवास व उद्योग दोनो रूप मे करते है और 10 प्रतिशत लोग आवास व व्यापार दोनो का प्रयोग अपने मकान मे करते है। मकान का विभिन्न रूप मे उपयोग करने से लोगो का जीवन–स्तर प्रभावित होता है। 73 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 93 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग अपने मकान का प्रयोग केवल आवास के रूप मे करते है। यह प्रदर्शित करता है कि उच्च आय वर्गीय लोग अपने घरो मे ध्वनि प्रदूषण पसन्द नही करते इसलिए उनके औद्योगिक व व्यापारिक कार्य घर से दूर होते है। शहर के बीच मे स्थित मकानों का प्रयोग आवास एव व्यवसाय दोनों हेतु होता है। 7 प्रतिशत

प्लेट 2.3 मुहल्ला ताड़तला में आवासीय, औद्योगिक एवं व्यवसायिक उपयोग में आने वाले मकान का दृश्य।

प्रतिशत लोग अपने आवास का प्रयोग आवास व व्यापार के रूप में करते हैं और 5.[illegible] प्रतिशत लोग मकान का प्रयोग आवास, उद्योग व व्यापार तीनों के रूप में करते हैं। ऐसा इसलिए है कि ये आवास नगर में बहुत पुराने आबाद है जैसे मुफ्ती मुहल्ला, ताड़तला के कुछ मुहल्ले, उर्दू व ओलन्दगंज। ये मुहल्ले अधिकतर मुसलमान बहुल है इनके पास प्रायः बीड़ी उद्योग या सिवई उद्योग और सिलाई का कारोबार है। कुछ लोग मांस बेचने का व्यवास करते हैं। मकान के निचले हिस्से में उद्योग या व्यापार होता है जबकि ऊपर लोग रहते हैं। ये मुहल्ले काफी घने और शोरगुल से भरे हैं लेकिन ये लोग यहां रहने के अभ्यस्त एवं आदी है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर लोग यहां से स्थानान्तरण कर गये हैं।

मकान के प्रकार :-

उच्च व मध्यम आय वर्ग के लोग निम्न आय वर्ग के समाज के साथ नहीं रहना चाहते है। ये लोग सम्भ्रान्त समाज में ही रहना चाहते है भले हीं उन्हें 200 वर्ग फुट का क्षेत्र ही निवास के लिए मिले। इसके पीछे लोगों की यही भावना रहती है कि इन निम्न आय वर्ग को अलग झुग्गी झोपड़ी, मिट्टी के मकान में ही रहना चाहिए। इन निम्न आय वर्ग के लोगों का यहां रहना अवैधानिक भी होता है जहां से इन्हें कभी भी निकाला जा सकता है।

प्लेट 2.4 मुहल्ला सुन्दर नगर में स्थित उच्च आय वर्ग के ईंट व कंक्रीट के बने मकान का दृश्य (उमरपुर)
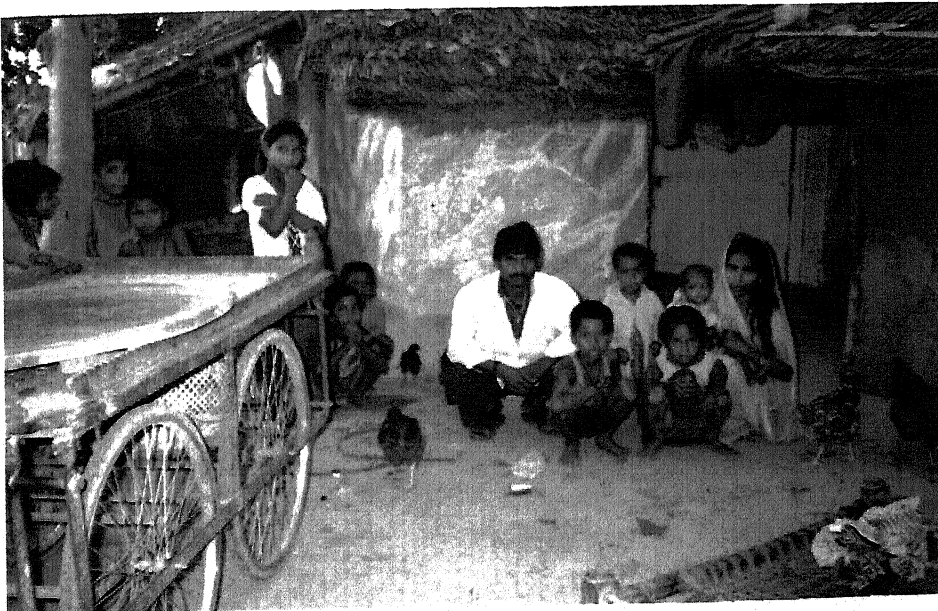
प्लेट 2.5 मुहल्ला चितरसारी में निम्न आय वर्ग का मिट्टी की दीवार पर फूस के छाजन का मकान

सारणी 2 3 जौनपुर नगर के चयनित मकानो के प्रकार (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	ईट एव कक्रीट के	मिट्टी के	लकडी के झुग्गी /झोपडी	अन्य टीन आदि के	योग
अत्यधिक कम	36 17	56.28	5 35	2.20	100 00
कम	52.3	47 35	0.35	—	100 00
मध्यम	94 42	5 58	—	—	100 00
उच्च	100 00	—	—	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	—	—	100 00
योग	76 58	21.84	1 14	0 44	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 2 3 और प्लेट 2 1 जौनपुर नगर के चयनित घरो के प्रकार को दिखा रहा है। नगर मे विभिन्न प्रकार के मकान देखे गये। मकान या तो ईंट एव कक्रीट के बने है या मिट्टी के बने है या लकडी के झुग्गी झोपडी है। कुछ अलग तरह के मकान भी देखे गये जिनके उपर टीन से ढका था या बास से बने थे लेकिन इस तरह के मकान कम ही है। मकान को बनाने मे स्थानीय उपलब्ध सामानो का ही प्रयोग किया जाता है जो सस्ते होते है। शहर के आसपास 20 ईंट के भट्ठे है जो जरूरतमद लोगो को ईंट का वितरण करते है। अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग के (56 प्रतिशत) और कम आय वर्ग के (47 प्रतिशत) मकान मिट्टी के है या वे झोपडी मे रहते है। ये मकान बहुत पुराने है और अस्त–व्यस्त अवस्था मे रहते है। बरसात के मौसम मे इनमे पानी चूता है और घर के बाहर पानी के निकलने की भी व्यवस्था नही है पानी घर के अगल–बगल इकट्ठा रहता है। इन घरो मे केवल एक द्वार है और खिडकिया एक भी नही है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 5 35 प्रतिशत व कम आय वर्ग के 0.35 प्रतिशत लोग लकडी के मकान मे रहते है ये मकान तीन तरफ से घिरे हुए रहते है जबकि इसकी छत खुली ही रहती है। लगभग दो प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के मकान टीन के है। इन मकानों की दीवारे लकडी की है एव उनके ऊपर टीन रखा रहता है। दूसरी तरफ 94 प्रतिशत मध्यम

आय वर्ग के और सभी उच्च आय वर्ग के मकान ईट एव कक्रीट के बने है।। मध्यम आय वर्ग एव उच्च आय वर्ग के मकान मे यह अन्तर है कि मध्यम आय वर्ग के मकानो के फर्श सीमेण्ट के बने है, या कुछ कक्रीट के बने है जबकि उच्च आय वर्ग के मकानो के फर्श सगमरमर के है उन पर टाइल्स लगी है या मुजैक लगा हुआ है।

मकान के फर्श का क्षेत्रफल :-

घर की स्थिति का वर्णन करने मे घर के फर्श का क्षेत्रफल कितना है इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फर्श का क्षेत्रफल की गणना करने मे रसोई घर व स्नानगृह को भी जोडा गया है लेकिन घर के बाहर के लान या पीछे छूटी जगह को नही जोडा गया है। सारणी 2 4 और प्लेट 2 1 चयनित घरो के फर्श के क्षेत्रफल को दिखाता है। यहा यह देखा गया कि 92 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 80 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 62 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के मकान के फर्श 300 वर्ग फीट से कम के है। क्योकि ये लोग आर्थिक रूप से गरीब है और निवास के लिए अधिक जमीन नही खरीद सकते इसलिए ये लोग अपने छोटे मकान मे ही रहने को विवश रहते है।

सारणी 2.4 जौनपुर नगर के चयनित घरो के फर्श का क्षेत्रफल (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 300 वर्ग फीट	300–1000 वर्ग फीट	1001 से 2000 वर्ग फीट	> 2000 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	92.45	7.55	—	—	100 00
कम	80 92	15 54	3.54	—	100 00
मध्यम	62.14	25.48	7.04	5.34	100 00
उच्च	12.32	22.74	39.18	25 76	100 00
अति उच्च	—	6 44	20.30	73.26	100.00
योग	49 56	15 55	14 01	20 88	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

यहा यह भी देखा गया कि 25 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 73 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो के लोग 2000 वर्ग फीट से अधिक के जमीनी क्षेत्रफल वाले मकान मे रहते है। इन घरो मे, घर के बाहर (लान) मैदान मे रहते है और घर के पीछे कुछ जमीन छुटी रहती है जिसमे वे फूल पौधे और सब्जिया उगाते है जो घर के अन्दर स्वस्थ वातावरण की भूमिका निभाता है। ये बडे–बडे मकान अधिकतर हिन्दू बहुल और कुछ मुसलमानी क्षेत्र मे भी पाये जाते है। इस तरह के मकान देखे गये है। उमरपुर मे वाजिदपुर मे व हुसेनाबाद, जहागीराबाद व मीयापुर मे। इस तरह के महगे घर नगर के पुराने आबाद भाग मे भी देखे गये।

घर में कुल कमरों की संख्या :-

नगर के चयनित घरो मे कुल कमरो की सख्या का वर्गीकरण सारणी 2 5 और प्लेट 2 2 मे दिखाया गया है।

सारणी 2.5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे कमरो की संख्या का वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

	कमरो की संख्या				
आय समूह	1	2–3	4–5	> 5	योग
अत्यधिक कम	92 77	7.23	—	—	100 00
कम	78.44	21.56	—	—	100 00
मध्यम	41 74	46 12	12 14	—	100 00
उच्च	—	51.23	17.80	30 97	100 00
अति उच्च	—	22.78	31 68	45 54	100 00
योग	42 59	29 78	12.33	15.30	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 2.6 गुलर चक मुहल्ले में स्थित निम्न आय वर्ग की झुग्गी/झोपड़ी (उमरपुर)
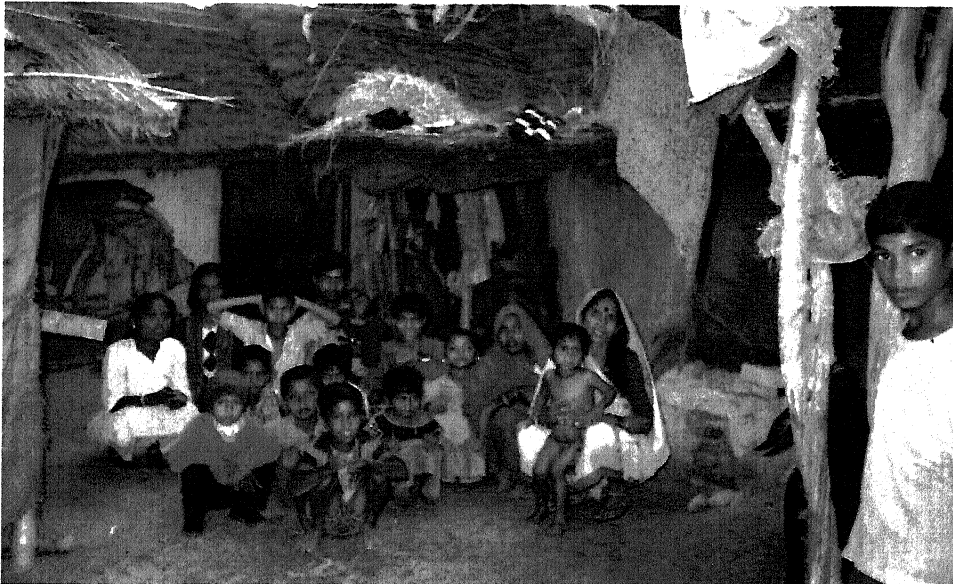
प्लेट 2.7 हरईपुर मुहल्ले में मिट्टी के बने छोटे से मकान में बड़े परिवार के निवास करने का दृश्य।

ऐसा देखा गया है कि कमरो की सख्या मे बहुत विभिन्नता पायी जाती है। घरो मे एक कमरे से लेकर पाच या अधिक कमरे पाये गये (रसोई घर व शौचालय को नही जोडा गया है) लगभग 93 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 78 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 41 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग कम आर्थिक आय के कारण केवल एक कमरे के मकान मे रहते है। इस एक कमरे मे ही 10 व्यक्तियो से अधिक सदस्य भी रहते है जिससे घर मे शोर, कोलाहल व भीडभाड रहती है। अत्यधिक भीडभाड का घर के वातावरण पर बहुत असर पडता है। इस पर बहुत से अध्ययन बताते है कि घर मे अधिक भीडभाड का स्वास्थ्य पर बहुत खराब असर पडता है। अत्यधिक कम आय वर्ग के इन घरो के कमरे बहुत पुराने है एव इसकी व्यवस्था बहुत खराब है। दीवारे सीलन से भरी पडी है एव बरसात के समय चूती भी है।

दूसरी तरफ 46 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के एव 51 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे 2 या 3 कमरे पाये गये और 31 प्रतिशत उच्च आय के व 45 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोगो के घरो मे पाच से अधिक कमरे है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि इन घनी घरो के कमरे आकार मे बडे है एव ठीक से बने है और कमरो से सटे स्नानगृह व शौचालय भी है। परिवार के लगभग सभी सदस्य अलग–अलग कमरे मे रहते है। इस बात का यहा के लोगो के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पडता है।

कमरों का क्षेत्रफल :-

सारणी 2 6 और प्लेट 2 2 चयनित घरो मे कमरो का क्षेत्रफल दर्शाता है।

सारणी 2.6 जौनपुर नगर के चयनित घरों के कमरो के क्षेत्रफल का वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 100 वर्ग फीट	100–200 वर्ग फीट	201–300 वर्ग फीट	> 300 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	65.72	34 28	—	—	100 00
कम	58.30	25.80	15 90	—	100 00
मध्यम	33.00	34.47	19.18	13 35	100 00
उच्च	22.47	29.59	23.01	24.93	100 00
अति उच्च	—	22.78	35.14	42.08	100 00
योग	35 89	29 38	18 66	16.07	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह देखा गया है कि अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग के 65 57 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 58 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 32 प्रतिशत लोग ऐसे कमरे मे रहते है जो 100 वर्गफीट से भी कम क्षेत्रफल के है। प्रत्येक कमरे के औसत क्षेत्रफल का पता, सभी कमरो के कुल क्षेत्रफल एव कमरो की सख्या के विभाजन से लगाया गया है। लगभग 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग भी 100 वर्ग फीट से कम क्षेत्रफल के कमरे मे रहते है, लगभग 34 प्रतिशत 100 से 200 वर्गफीट के क्षेत्रफल वाले कमरे मे रहते है, केवल 13 प्रतिशत लोग 300 वर्ग फीट से अधिक क्षेत्रफल वाले कमरे मे रहते है। लेकिन उच्च आय वर्ग के 25 प्रतिशत एव अति उच्च आय के 42 प्रतिशत लोग ऐसे कमरो मे रहते है जिसका क्षेत्रफल 300 वर्गफीट से अधिक है। निर्धन घरो के परिवार आकार बडे है फिर भी उन सभी की व्यवस्था एक कमरे के घर मे ही करनी पडती है। इसलिए वे दुर्व्यवस्था के शिकार होते है। ये लोग अपने सभी कार्य जैसे खाना बनाना, सोना यहा तक कि स्नान भी एक ही कमरे मे करते है। एक बिस्तर पर तीन बच्चे तक सोते है। अधिकाश घरो मे बिस्तर भी नही है और वे जमीन पर ही सोते है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भीडभाड का लोगो के स्वास्थ्य पर असर पडता ही है।

शयनकक्ष में प्रति व्यक्ति को मिलने वाला स्थान :-

भीडभाड से भरे घर मे जैसा कि ऊपर उल्लिखित है किस प्रकार एक ही कमरे मे अधिक से अधिक सख्या में लोग रहते है। इस कारण प्रति सदस्य के लिए शयनकक्ष मे जमीनी क्षेत्रफल कितना है इसका घर की व्यवस्था पर बहुत प्रभाव पडता है।

सारणी 2 7 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे रहने वाले प्रति व्यक्ति को शयन कक्ष मे मिलने वाला औसत स्थान (प्रतिशत मे) (1999)

आय समूह	< 10वर्गफीट	10–20 वर्ग फीट	21–30 वर्ग फीट	> 30 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	64 78	35 22	—	—	100 00
कम	60.42	39.58	—	—	100 00
मध्यम	19.66	32 52	47.82	—	100 00
उच्च	—	28.-5	35.34	36 16	100 00
अति उच्च	—	15.84	32.18	51.98	100 00
योग	28.97	30.33	23.07	17 63	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 2 7 और प्लेट 2 2 चयनित घरो मे रहने वाले प्रति व्यक्ति को शयन कक्ष मे मिलने वाले स्थान को दिखाता है। प्रति सदस्य को मिलने वाले जमीनी क्षेत्रफल का पता कुल कमरो के क्षेत्रफल एव कुल परिवार के सदस्यो की सख्या के विभाजन से लगाया गया है। यहा यह सर्वेक्षण किया गया कि 64 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 60 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 19 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे प्रति सदस्य को शयनकक्ष मे 10 वर्ग फीट से भी कम स्थान मिलता है। जबकि धनी घरो मे 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 35 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 32 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के परिवारों मे प्रति सदस्य को शयन कक्ष मे 21 से 30 वर्ग फीट का स्थान मिलता है। यद्यपि 36 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 51 88 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के मकानों मे प्रति सदस्य को शयनकक्ष मे 30 वर्ग फीट से अधिक का स्थान मिलता है क्योकि इनके पास बडे कमरे है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग जिनके पास प्रति सदस्य औसतन 10 वर्ग फीट से भी कम भूमि उपलब्ध हो पाती है। उनके लिये शुद्ध हवा मे सास लेने की भी समस्या होती है इन परिवारो के बच्चे बीमारी से (स्वास

सम्बन्धी बीमारी से) अधिक ग्रसित पाये गये अपेक्षाकृत उन परिवारो के जो खुले से स्थानो मे रहते है।

घर में वातायन की स्थिति :-

घर मे उपयुक्त वातायन की स्थिति निवासियो के स्वस्थ जीवन के लिए अति आवश्यक है। मकान बनवाते समय वायु की उपयुक्त निकासी पर ध्यान देना आवश्यक होता है क्योकि बद–बद से घर में रहना बहुत दुष्कर होता है। स्वतत्र और स्वस्थ जीवन के लिए घर मे उपयुक्त वायु निकासी तत्र का होना अति आवश्यक है। क्योकि यदि घर मे वायु प्रदूषण हो भी तो शीघ्र निकल जाता है। सारणी 28 और प्लेट 22 मे नगर के चयनित घरो मे वातायन की स्थिति का विवरण दिखाया गया है।

सारणी 28 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वातायन की व्यवस्था (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	उपयुक्त है	उपयुक्त नही है	योग
अत्यधिक कम	8.49	91.51	100 00
कम	15 54	84 46	100 00
मध्यम	45 63	54.37	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	53.93	46 07	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

यह देखा गया कि अधिकाश अत्यधिक कम आय वर्ग के (91 प्रतिशत) एव 84 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 54 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो में उपयुक्त वातायन की स्थिति नही है। ऐसा इसलिए है कि इनके घर बहुत छोटे एव भीडभाड से भरे है जिनमे कुछ कमरे है या एक ही द्वार है और एक भी खिड़की नही है। एक तो इन घरो में उपयुक्त वातायन की स्थिति

नही और उपर से ये लोग या तो लकडी से खाना पकाते है या कोयले से या गोबर की उपली से और सूखी पत्तियो से। ये सभी उपकरण या ईंधन बडी मात्रा मे धूआ उत्पन्न करते है और ठीक वातायन न होने से धूआ घर मे ही उमसता रहता है जो तीव्र स्वास सम्बन्धी बीमारी का कारण बनता है। केवल 8 प्रतिशत अत्यधिक कम आय के एव 15 प्रतिशत कम आय लोग उपयुक्त वातायन का आनन्द उठाते है क्योकि ये लोग धनी आय वर्ग के घरो के बाहरी हिस्से मे ही रहते है विशेषकर कचहरी सडक पर और वाजिदपुर मे व नगर के नये बसे क्षेत्रो मे। ये लोग रातमे चौकीदार का काम करते है और दिन मे रिक्शा खीचते है। यहा पर उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे उपयुक्त वातायन की स्थिति पायी गयी एव इनके मकान पूर्व नियोजन करके बनाये गये है। इनके पास धूआ बाहर निकालने वाले पखे रसोईघर मे लगे है व स्नानगृह व शौचालय मे भी अति उच्च आय वर्ग मे इस प्रकार के पखे लगे है।

इस प्रकार चयनित घरो का पूरा अनुमान विभिन्न आय वर्ग के आधार पर लगाया गया है। यह दिखाता है कि अति उच्च एव उच्च आय वर्ग के परिवार अपने बडे वैभवशाली मकानो मे जो ईंट एव कक्रीट के बने है, मे रहते है। इन घरो मे कई महगे और उपयुक्त वातायन के कमरे है। लगभग परिवार के सभी सदस्यो के पास अलग कमरा है। ये लोग अपने घर को केवल निवास के लिए ही प्रयोग करते है। लगभग 45 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोगो के पास अपना मकान है परन्तु उनके घर अपेक्षाकृत छोटे है। जिनमे कुछ ही कमरे है। यद्यपि 41 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के व 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग भी अपने मकान मे रहने है परन्तु ये घर अनाधिकृत रूप से खुली जगहो पर है जैसे सडक के किनारे या रेलवे लाइन के आसपास। इस प्रकार के अनाधिकृत घर गन्दी बस्ती और झुग्गी झोपडी के विकास मे सहायक है। इन झुग्गी झोपडी में भी सर्वेक्षण के दौरान परिवार मे सदस्यो की अधिक से अधिक सख्या देखी गयी।

स्नानगृह और सफाई की स्थिति :-

पुराने समय मे घर मे सफाई रखने का अर्थ शौच को बाहर निकासी से ही लगाया जाता था। यहा तक कि आज भी बहुत से लोग सफाई का मतलब घर मे शौचालय होने से लगाते है। वास्तव मे सफाई इस पूरे तंत्र को कहते है कि जिसमे सभी त्याज्य पदार्थों की

जौनुपर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों में स्नानगृह एवं प्रसाधन की सुविधा
घर में स्नानगृह एवं प्रसाधन की सुविधा
प्रतिशत
उपस्थित है
उपस्थित नही है
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
शौचालयों के प्रकार
सार्वजनिक
सड़क के किनारे
निजी तौर पर प्रयोग मे लाये जाने वाले शौचालयों के प्रकार
पानी से बहाये जाने वाला
उठाये जाने वाले
फ्लश शौचालय के प्रकार
खुली नाली म
स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
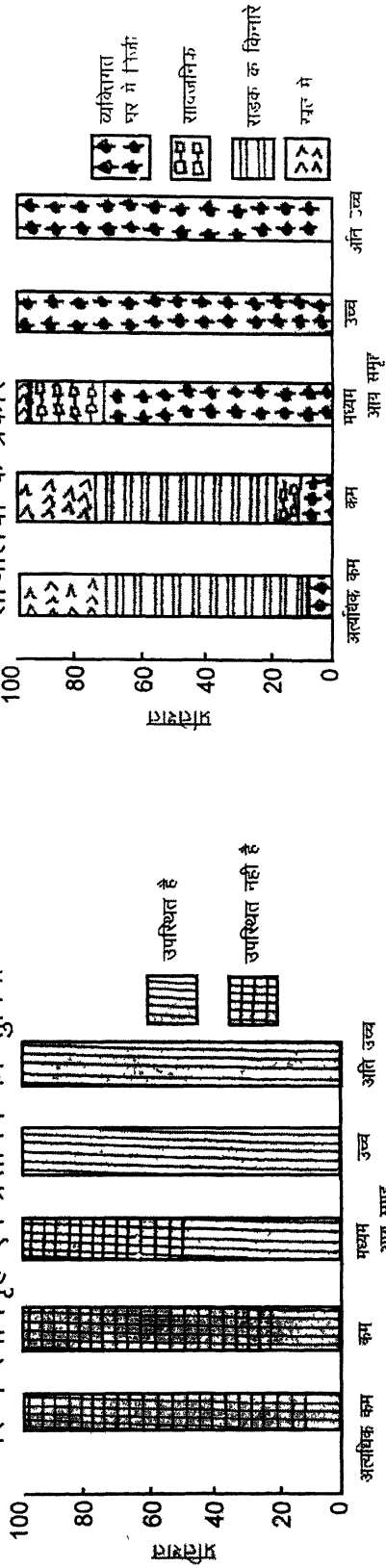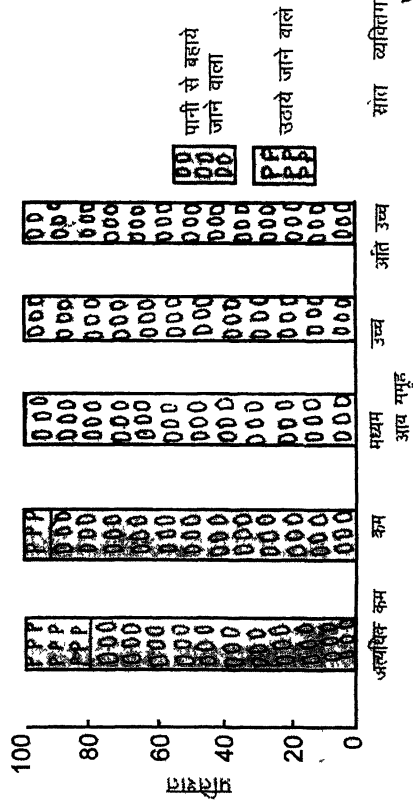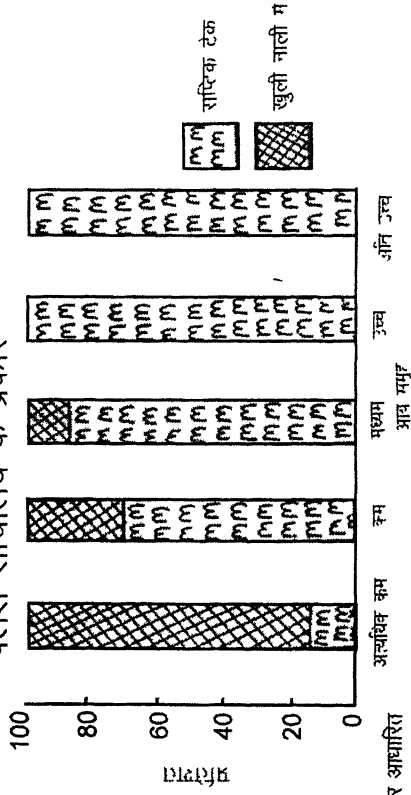
प्लेट 28

जौनपुर नगर

चयनित घरों में प्रसाधन की व्यवस्था

शौच को उठाकर विसर्जित किये जानें वाले तरीके

प्रतिशत

100
80
60
40
20
0

अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च

आय समूह

निजी स्वच्छकारो द्वारा
नगरपालिका के स्वच्छकारो द्वारा

विसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान

प्रतिशत

100
80
60
40
20
0

अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च

आय समूह

कूड़ क साथ
खुली नाली म
खेत म
अज्ञात

एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या

प्रतिशत

100
80
60
40
20
0

अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च

आय समूह

1-2
2-5
6-10
>10
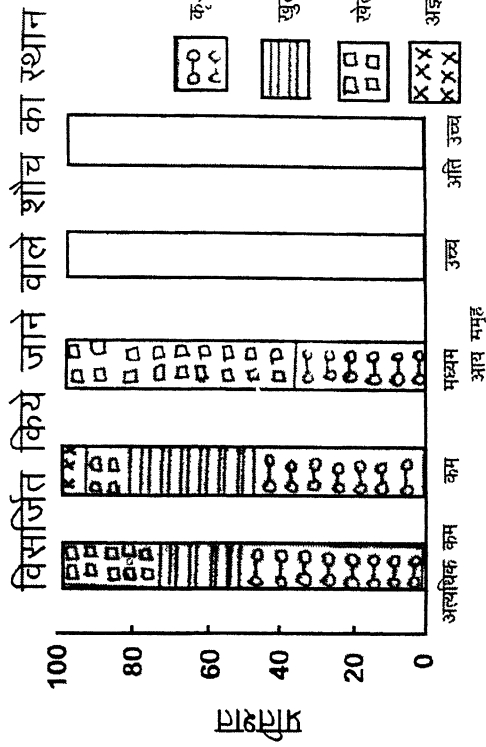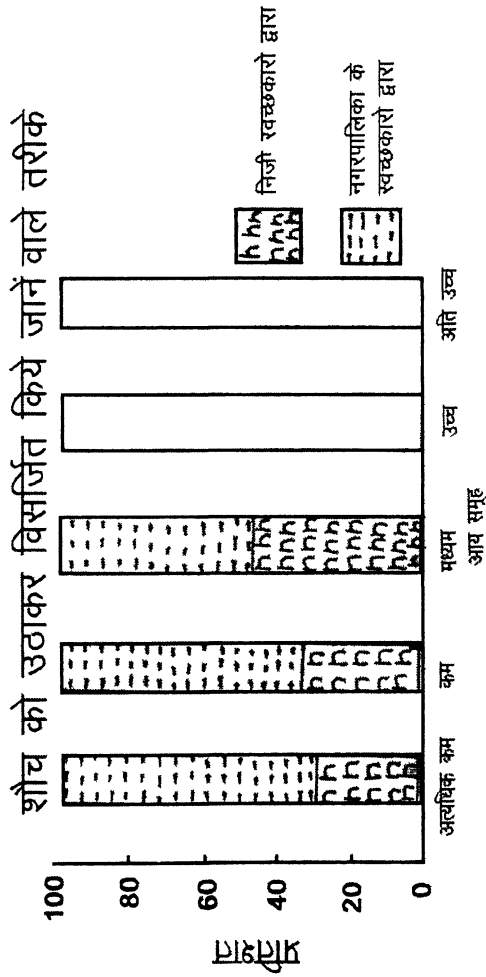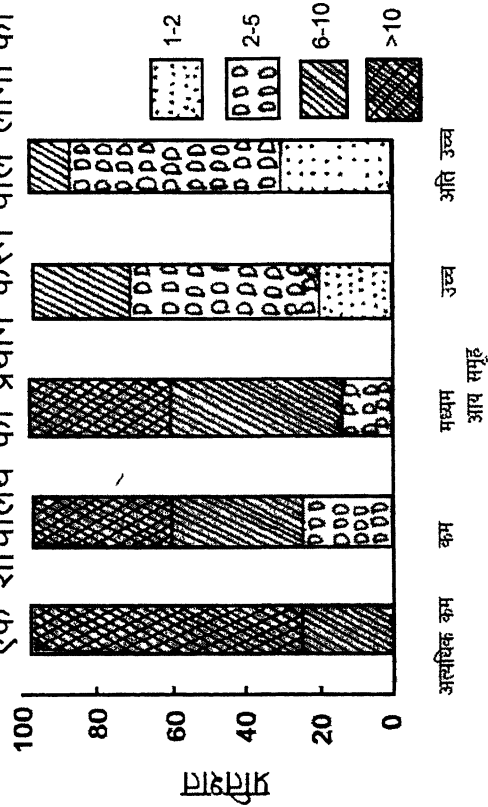
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 29

बाहर निकासी पानी की उपयुक्त आपूर्ति एव निकासी, पर्यावरण प्रदूषण से बचाव आदि सम्मिलित है। यह उस पूरे क्षेत्र को घेरता है जिसमे पर्यावरण प्रदूषण मुक्त हो, रोगो से बचाव हो और स्वास्थ्य को बेहतर करने वाली दशाये हो। पुराने घरो मे अलग से स्नानगृह नही बना हुआ होता है। घर के किसी कोने को स्नान के लिए प्रयुक्त करते है जबकि नय बन धरा म स्नानगृह एव शौचालय एक मे ही शयनकक्ष के बगल मे ही बने हुए होते है। ऐसा प्राय उच्च आय वर्ग के घरो मे पाया जाता है। ये लोग पश्चिमी सभ्यता के रहन–सहन को अपनाते है।

अध्याय के इस भाग मे स्नानगृह एव सफाई के विभिन्न भागो को लिया गया है जैसे घर मे स्नानगृह एव शौचालय है अथवा नही है, शौचालय व्यक्तिगत है या सार्वजनिक, शौचालय पानी से साफ करने वाला है या हाथ से उठाने वाला है, शौचालय सेप्टिक टैक से जुडे है या शौच बाहर खुली नालियो मे बहता है। शौचालय को साफ करने का तरीका व्यक्तिगत है या नगर पालिका द्वारा सफाई होती है। हाथ से उठाने वाले शौच कूडे के साथ फेंके जाते है या बाहर खेत मे फेके जाते है। एक शौचालय को कितने लोग प्रयोग मे लाते है (एक से पाच, या 6 से 10 या 10 से अधिक) इस प्रकार के आकडे इस नगर के व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये है।

स्नानगृह और शौचालय की सुविधा :-

सारणी 29 और प्लेट 28 में चयनित घरो के स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा को दिखाया गया है।

सारणी 29 जौनपुर नगर के चयनित घरों में स्नानगृह एव प्रसाधन की सुविधा (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	उपस्थित है	उपस्थित नहीं है	योग
अत्यधिक कम	9 44	90.56	100.00
कम	21 91	78.09	100.00
मध्यम	48 54	51 46	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100.00	—	100 00
योग	55 98	44.02	100 00

प्लेट 2.10 मुहल्ला रूहट्टा में कम आय वर्ग के घरों में स्नानगृह न होनें के कारण सड़क के किनारे सार्वजनिक चापाकल पर लोग स्नान करते हैं। (उमरपुर)

प्लेट 2.11 फिरोशेपुर मुहल्ले में मकान के सामने खुली नाली में बच्चे शौच करते समय अक्सर देखें जा सकते हैं।

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा सर्वेक्षण के दौरान यह देखा गया कि अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग के, (90 प्रतिशत मे) कम आय वर्ग के (78 प्रतिशत) एव मध्यम आय वर्ग के (51 प्रतिशत) घरो मे जो निम्न आय वर्ग के है, स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा नही है। किन्ही जगहो पर स्नानगृह एव शौचालय का प्रयोग घर के पीछे बरामदे, हाते मे खुले स्थान मे ही करते है। कभी–कभी स्नान की जगह को घर मे ही बदलते रहते है। आज भी ग्रामीण घरो मे कोई भी शौचालय या स्नानगृह अधिकाश उदाहरणो मे नही होते है। पुरूष और महिलाये दोनो शौच के लिए खेतो मे जाते है और स्नान के लिए घर के पीछे बरामदे या होते का प्रयोग करते है महिलाये एक या दो तरफ से परदा लगा लेती है। कुछ घरो मे पुरूष लोग सडक के किनारे सार्वजनिक–चापाकल पर स्नान करते है या सडक के किनारे सरकारी पाइप के पानी से नहाते है और महिलाये उसी कमरे मे नहा लेती है जिसमें शयन होता है या खाना पकता है। इन ग्रामीण धनी परिवारों मे भी शौचालय नही होता है क्योकि इनमे यह धारणा होती है कि इसको बनवाना जमीन का उचित प्रयोग नही है वह फालतू है। इन लोगो की यह धारणा परम्परा के रूप मे होती है जिसे कडाई से बदला जाना चाहिए। परन्तु शहरो मे जगह की कमी के कारण व धन की कमी के कारण और पानी की कमी के कारण घरो मे शौचालय कुछ घरो में नही होते। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सौ प्रतिशत घरो मे स्नानगृह एव शौचालय होता है।

शौचालय के प्रकार :-

सारणी 2 10 और प्लेट 2 8 में नगर के चयनित घरो के शौचालय के प्रकार को दिखाया गया है।

सारणी 2 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे प्रयोग मे आने वाले शौचालयो के प्रकार (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	व्यक्तिगत घर मे निजी	सार्वजनिक	सडक के किनारे	खेत मे	योग
अत्यधिक कम	10.38	—	62.58	27.04	100 00
कम	14.5	4 24	59.00	22 26	100 00
मध्यम	74 27	19 18	1 21	5.34	100 00
उच्च	100 00	—	—	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	—	—	100 00
योग	59 83	4.69	24 49	10 93	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 2 9 मे यह बताया जा चुका है कि लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 78 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 51 प्रतिशित मध्यम आय वर्ग के घरो मे शौचालय नही है। कम आय वर्ग के बहुत कम घरो मे शौचालय पाया गया। ये लोग सडक के किनारे ही शौच करते है। क्योकि खुले खेत कम ही पाये जाते है। जमीन जो मकान बनवाने के लिए छूटी रहती है का प्रयोग भी शौच के लिए होता है। ये लोग सडक के किनारे बनी नाली का प्रयोग भी शौच के लिए करते है। सारणी 2 10 एव प्लेट 2 8 मे यह दिखाया गया है कि लगभग19 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग सार्वजनिक शौचालयो (जो सरकार द्वारा बनवाये गये होते है) मे जाते है जो अत्यधिक भीड होने से बहुत गन्दे होते है। इन लोगो के पास शौचालय बनवाने के लिए घर मे जगह नहीं होती और न ही धन। इनके परिवार आकार बडे होते है इसलिए कुछ लोग सडक के किनारे या खेत मे भी जाते है कुछ सार्वजनिक शौचालय भी उचित व्यवस्था न होने के कारण खुले गटर में बहते रहते है। दुर्व्यवस्था के कारण इन शौचालयो से दुर्गन्ध भी आती रहती है। इन कारणो से नागरिको को असुविधा होती है। इन घरो के बच्चे अक्सर सडक के

किनारे ही शौच करते है जबकि बडे भी सूर्यास्त के बाद एव सूर्योदय के पहले सडक के किनारे शौच करते है। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे शौचालय उपस्थित है।

व्यक्तिगत शौचालय के प्रकार :-

सारणी 2 11 एव प्लेट 2 8 मे चयनित घरो मे पाये जाने वाले व्यक्तिगत शौचालयो के प्रकार को दिखाया गया है।

सारणी 2 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे निजी तौर पर प्रयोग मे लाये जाने वाले शौचालयो के प्रकार (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	निजी शौचालय	पानी से बहाये जाने वाला	हाथ से उठाये जाने वाला	योग
अत्यधिक कम	10.38	78.79	21.21	100 00
कम	14.50	87.80	12.20	100 00
मध्यम	74.27	98.04	1.96	100 00
उच्च	100 00	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	100 00	—	100 00
योग	59.83	92.93	7.07	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा पर व्यक्तिगत शौचालय मुख्य रूप से दो तरह के देखे गये है, पानी से बहाये जाने वाले, हाथ से उठाये जाने वाले। अत्यधिक कम आय वर्ग के केवल 10 प्रतिशत घरो मे व कम आय वर्ग के 14 प्रतिशत घरो मे ही निजी शौचालय है। इनमे से कुछ हाथ से उठाये जाने वाले है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो के शौचालय पानी से साफ किये जाने वाले है मध्यम आय वर्ग मे भी कुछ शौचालय हाथ से उठाये जाने वाले है। हाथ से उठाये जाने वाले

शौचालय अस्वस्थ वातावरण को, न केवल घर मे बल्कि मुहल्ले मे भी जन्म देते है। इन क्षेत्रो से गुजरते समय तीव्र गध देखी गयी। इस प्रकार की स्थिति मुसलमानी क्षेत्र मे अधिक देखी गयी जिनके पास हाथ से शौच उठाने वाले शौचालय है जैसे उर्दू मुहल्ले, मीरमस्त व ताडतला मुहल्ले के कुछ क्षेत्रो मे। इनमे से कुछ घरो मे जहा हाथ से मल उठाये जाने वाले शौचालय है, शौचालय पर कोई दरवाजा नही होता केवल कोई परदा जूट का या कपडे का पडा रहता है।

बहावदार शौचालय के प्रकार :-

सारणी 2 12 एव प्लेट 2 8 मे चयनित घरो मे पाये जाने वाले बहावदार शौचालय के प्रकार को दिखाया गया है। शौचालय या तो सेप्टिक टैक से जुडे हुए है या खुली नाली से। पिछली तालिका मे दिखाया गया है कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 78 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 88 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 98 प्रतिशत घरो मे पानी से बहाये जाने वाले शौचालय पाये गये है। जबकि उच्च व अति उच्च वर्ग के घरो के सौ प्रतिशत शौचालय पानी से साफ किये जाने वाले है। इसमे से कम आय वर्ग के 68 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 82 प्रतिशत शौचालय सेप्टिक टैक से जुडे हुए है। इनमे बाकी शौचालय खुली नाली से जुडे हुए है। यह दिखाता है कि जो शौचालय खुली नाली से जुडे हुए है बहुत अस्वस्थ वातावरण को जन्म देते है। उन लोगो के लिये जो आसपास रहते है। क्योकि ये नालियां सकरी है जो बरसात के समय भरकर सडक पर बहने लगती है। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि मुहल्ला केरारकोट, बाजारभुआ, मुल्ला टोला, मुफ्ती मुहल्ला, ख्वाजगी टोला, मखदूम शाह बडे, ताडतला, पुरानी कटघरा, रौजा अर्जन व मीरमस्त मे स्थित अधिकाश घरो मे जो निम्न आय वर्ग के लोग है सभी के पास उठौआ शौचालय था किन्तु शासन के आदेश से मैला ढोने का काम बद हो जाने पर ये लोग घर के अन्दर बने शौचालय को खुली नाली से जोड दिये है जिससे इन मुहल्लो की पर्यावरणीय स्थिति चिताजनक है। कुछ ही घरो मे उठौआ शौचालय रह गये है जिसे निजी स्वच्छकारो द्वारा साफ कराते है।

प्लेट 2.12 मीरमस्त मुहल्ले में उठौआ शौचालय (मैनुअल) का दृश्य।

सारणी 2.12 जौनपुर नगर के चयनित घरों में बहावदार शौचालय के प्रकार (1999)

आय समूह	फ्लश शौचालय	सेप्टिक टैंक	खुली नाली में	योग
अत्यधिक कम	78.79	15.38	84.62	100.00
कम	87.80	69.44	30.56	100.00
मध्यम	98.04	82.00	17.48	100.00
उच्च	100.00	100.00	—	100.00
अति उच्च	100.00	100.00	—	100.00
योग	92.92	73.4	26.50	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

शौच को उठाकर विसर्जित किये जाने वाले तरीके :-

सारणी 2.13 एवं प्लेट 2.9 में चयनित घरों में उठाकर शौच को विसर्जित किये जाने वाले तरीकों का वर्णन किया गया हैं शौच को एकत्रित कर के विसर्जित करने की दो प्रकार की सेवायें यहां देखी जाती हैं। 1– निजी स्वच्छकारों द्वारा व्यक्ति विशेष को पैसे

देकर सफाई करवाना। 2– नगर पालिका के स्वच्छकारो द्वारा सफाई होना। यहा यह देखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 28 प्रतिशत कम आय वर्ग के 40.0 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 50.0 प्रतिशत घरो मे निजी स्वच्छकारो द्वारा शौच को उठवाया जाता है। जबकि 71 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 60.00 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 50.00 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे नगर पालिका के स्वच्छकारो द्वारा सफाई होती है। इनमे मध्यम आय वर्ग के लोग निजी स्वच्छकारो का ही अधिक प्रयोग करते है क्योकि नगर पालिका के कर्मचारी अधिक दिनो तक नही आते है। निम्न आय वर्ग मे इन शौचालयो मे नगरपालिका के कर्मचारी अधिक दिनो तक नही आने से शौच अधिक दिनो तक पडा ही रहता है। परिणाम स्वरूप विभिन्न प्रकार के कीटाणु, जीवाणु, मक्खी व चपडे आस–पास रहते है। ये सब उन लोगो के लिए अस्वास्थ कर दशाये उत्पन्न करते है जो इस प्रकार के शौचालय का प्रयोग करते है।

सारणी 2 14 व प्लेट 2 s मे उठाकर विसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान की दृष्टि से वर्णन किया गया है। शौच को फेकने के तीन प्रकार के स्थान देखे गये। उन्हे या कूडे के साथ फेका जाता है या फिर खुली नालियो या खेतो मे फेका जाता है।

सारणी 2 13 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे उठाकर शौच को विसर्जित किये जाने वाले तरीके (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	निजी शौचालय	उठाये जाने वाले शौचालय	निजी स्वच्छकारों द्वारा	नगरपालिका के स्वच्छकारो द्वारा	योग
अत्यधिक कम	10.38	21.21	28.57	71.43	100 00
कम	14.5	12.20	40.0	60.0	100.00
मध्यम	74 27	1.96	50.0	50.0	100 00
उच्च	100 00	—	—	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	—	—	100 00
योग	59 83	7.07	36.49	63.51	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 57 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के एव 40 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग शौच को इन शौचालयो से उठाकर कूडे के साथ फेकते है। लगभग 14 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के एव 20 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग शौच को नाली मे फेकते है जिससे नाली कभी–कभी जाम हो जाती है। कूडे के साथ शौच को फेकने से कूडे से बहुत दुर्गन्ध आती है जो सडक के किनारे देखी जा सकती है। लगभग एक चौथाई अत्यधिक कम आय एव कम आय वर्ग के लोग शौच को अपने घर के आसपास बने खेतो मे फेक देते है। यह त्याज्य पदार्थ अधिक दिनो तक उठाया नही जाता इसलिए अधिक सख्या मे जानवर विशेषकर सूअर इकट्ठा होते है ये सब मिलकर अस्वस्थ वातावरण को जन्म देते है। इस गन्दगी से मुहल्ले मे मक्खी मच्छर का बहुत प्रकोप रहता है जिसे यहा पर रहने वाले नागरिको को झेलना पडता है।

सारणी 2 14 जौनपुर नगर मे उठाकर दिसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान की दृष्टि से वर्णन (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	कूडे के साथ	खुली नाली में	खेत मे	अज्ञात	योग
अत्यधिक कम	57.14	14·29	28.57	—	100 00
कम	40.00	20,00	20·00	20·00	100 00
मध्यम	—	—	—	—	—
उच्च	—	—	—	—	—
अति उच्च	—	—	—	—	—
योग	48.57	17·14	24·29	10·00	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या :-

सारणी 2 15 और प्लेट 2.9 मे चयनित घरो मे एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगों की सख्या को दिखाया गया है। एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो

की सख्या का पता परिवार के कुल सदस्यो की सख्या एव घर मे उपस्थित शौचालय की सख्या से लगाया गया है।

सारणी 2 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो की सख्या (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	1	1 – 5	6 – 10	> 10	योग
अत्यधिक कम	—	—	23 58	76 42	100 00
कम	—	22.97	37.80	39.23	100 00
मध्यम	—	10.43	49.76	39 80	100 00
उच्च	20 00	52 32	27 68	- -	100 00
अति उच्च	31.68	58.42	9.90	—	100 00
योग	10 34	28.83	29 7	31.09	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

कम आय वर्ग के घरो मे अधिक से अधिक सख्या मे लोग एक ही शौचालय का प्रयोग करते है। यहा पर अत्यधिक कम आय वर्ग के 76 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 39. प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 39 प्रतिशत घरो मे एक शौचालय को 10 व्यक्ति से अधिक सदस्य प्रयोग मे लाते है। क्योकि उनके परिवार आकार बडे है एव घर मे एक ही शौचालय है। मध्यम आय वर्ग के 49 प्रतिशत घरो मे 6 से 10 व्यक्ति एक शौचालय का प्रयोग करते है जबकि उच्च आय वर्ग के 20 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 31 प्रतिशत घरों मे एक शौचालय का प्रयोग एक ही व्यक्ति कर रहा है। इस प्रकार के शौचालय उनके शयनकक्ष के बगल मे ही बने हुए है।

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे स्नानगृह एव सफाई की स्थिति के सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे स्वच्छ स्नानगृह एवं बहावदार शौचालय है जो सेप्टिक टैक से जुडे हुए है। मध्यम आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो के पास स्नानगृह एव शौचालय नही पाया गया बाकी के पास उपयुक्त

स्नानगृह एव बहावदार शौचालय है। मध्यम आय वर्ग के भी 1 88 प्रतिशत घरो मे शौच उठाये जाने वाले शौचालय है जो नगरपालिका स्वच्छकारो व निजी स्वच्छकारो द्वारा साफ कराये जाते है। यहा पर अत्यधिक कम आय वर्ग के घरो के पास स्नानगृह एव शौचालय नही है। ये लोग शौच के लिए सडक के किनारे या खेतो मे जाते है।

अध्याय - तीन

जौनपुर नगर में पेय जलापूर्ति एवं अपवाह की स्थिति
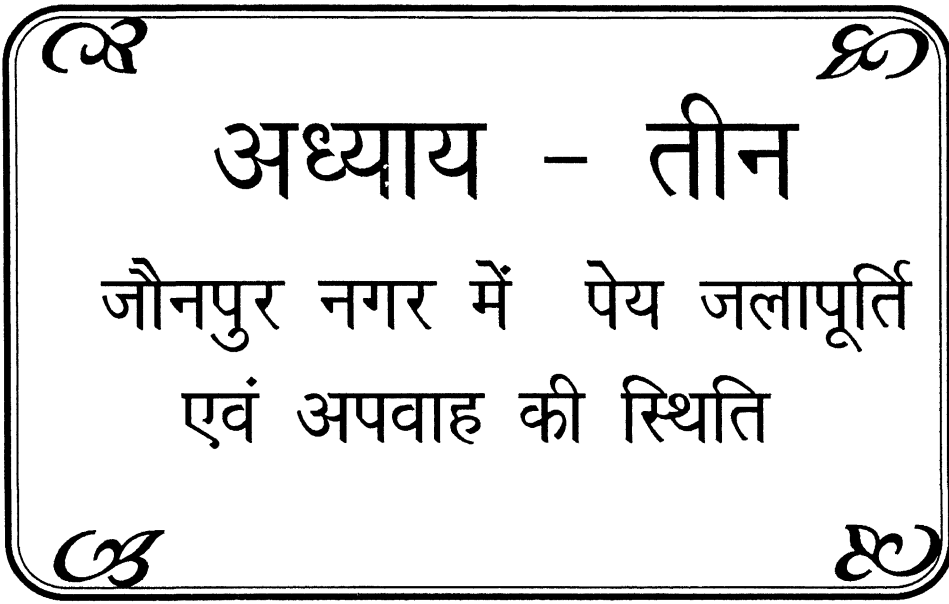
इस अध्याय मे नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति, कूडाकरकट एव जल अपवाह पर भौतिक दृष्टिकोण दर्शाया गया है। वास्तव मे यह भाग अध्याय दो का ही विस्तार है। जिसमे घर की स्थिति, स्नानगृह एव सफाई का वर्णन दिया गया है। पिछले अध्याय मे यह बताया गया है कि सर्वेक्षण के लिए 1580 मकान चयनित किये गये। उनमे से आधे मकान लोगो के अपने थे एव अधिकाश लोग अपने गृह का उपयोग केवल निवास के लिए करते है। ये मकान ईट एव कक्रीट के बने है। कुल चयनित मकानो मे से आधे मकानो का जमीनी क्षेत्रफल 300 वर्गफीट से कम है। 73 प्रतिशत घरो मे तीन या तीन से कम कमरे है। लगभग 35 प्रतिशत कमरे का क्षेत्रफल 100 वर्गफीट से कम है। 45 प्रतिशत मकानो मे उपयुक्त वातायन की स्थिति नही है और 60 प्रतिशत निवासियो को शयनकक्ष मे 20 वर्ग फीट से भी कम जगह मिलती है। लगभग आधे मकानो मे स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा नही है। लगभग 64 प्रतिशत घरो मे व्यक्तिगत (निजी) शौचालय है और 20 प्रतिशत मकानो मे एक ही शौचालय का 10 व्यक्ति से अधिक सदस्य उपयोग करते हैं।

इस अध्याय को दो भागो मे विभाजित किया गया है। पहले भाग मे नगर मे जलापूर्ति का एव दूसरे भाग मे अपवाह का वर्णन किया गया है।

पर्याप्त मात्रा मे शुद्ध पीने के पानी की आपूर्ति घरो मे रहने वाले लोगो के जीवन की गुणवत्ता के लिए आवश्यक है। सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था सुव्यवस्थित एव सुरक्षित ढग से घरो तक न किये जाने के कारण कही–कही पानी की पाइप लाइन मे टूट–फूट होने से गन्दे पानी की मिलावाट हो जाती है जिससे उस पानी को पीने वाले लोग दूषित जल के कारण होने वाले रोगों से ग्रसित हो जाते है। जौनपुर नगर मे अधिकांश निवासी चापाकल अथवा कूप के जल का उपयोग करते है। इसका मुख्य कारण यह है कि सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल की आपूर्ति पर्याप्त नही होती। जौनपुर नगर मे नागरिको को पेयजल आपूर्ति के उद्देश्य से 20 ट्यूबवेल लगाये गये है जिनमे से कुल 14 ट्यूबवेल ही पेयजलापूर्ति करते है शेष 6 बेकार पडे है। सिटी बोर्ड द्वारा पेय जलापूर्ति सुबह–शाह (दो समय) किये जाने का प्राविधान है किन्तु विद्युत आपूर्ति मे बाधा होने के कारण प्राय एक ही समय पेयजल की आपूर्ति हो पाती है। सिटी बोर्ड के पेयजल आपूर्ति के अभिलेख मे 6 घटे सुबह व 6 घण्टे शाम जल

आपूर्ति किये जाने का प्राविधान है किन्तु कतिपय कारणो से बारह घटे जलापूर्ति कमी नही होती। सिटी बोर्ड पेयजलापूर्ति के अभिलेख के अनुसार प्रति व्यक्ति 93 14 लीटर पानी दिया जाता है। जबकि यह आकडा सर्वेक्षण से गलत पाया गया। पेयजल आपूर्ति के ससाधन ट्यूबवेल 14, गोमती नदी का स्रोत 1। ट्यूबवेल द्वारा 9 53 मीट्रिक लीटर एव नदी द्वारा 4 22 मीट्रिक लीटर, कुल 13 75 एम एल डी ।

कार्यरत एव बेकार पडे ट्यूबवेल का विवरण

1– नईगज प्रथम——————खराब पडा है

2– नईगज द्वितीय——————कार्यरत है।

3–नईगज तृतीय——————कार्यरत है।

4– नईगज चतुर्थ———————कार्यरत है।

5– खरका कालोनी———————कार्यरत है।

6– पुलिस अधीक्षक आवास के पास——————कार्यरत है।

7– लाइन बाजार———————कार्यरत है।

8– सदर चुगी———————कार्यरत है।

9– खासनपुर———————कार्यरत है।

10– सिपाह———————कार्यरत है।

11– मिसिरपुर———————कार्यरत है।

12– बोदकरपुर प्रथम——————बद पडा है।

13– बोदकरपुर द्वितीय———————कार्यरत है।

14– अहियापुर———————बन्द पडा है।

15– पचहटिया———————बद पडा है।

16– हिन्दी भवन———————कार्यरत है।

17– रसूलाबाद———————कार्यरत है।

18– इग्लिश क्लब———————कार्यरत है।

19– पी डब्लू डी क्रासिग——————बद पडा है।

20– भूस गोदाम——————बद पडा है।
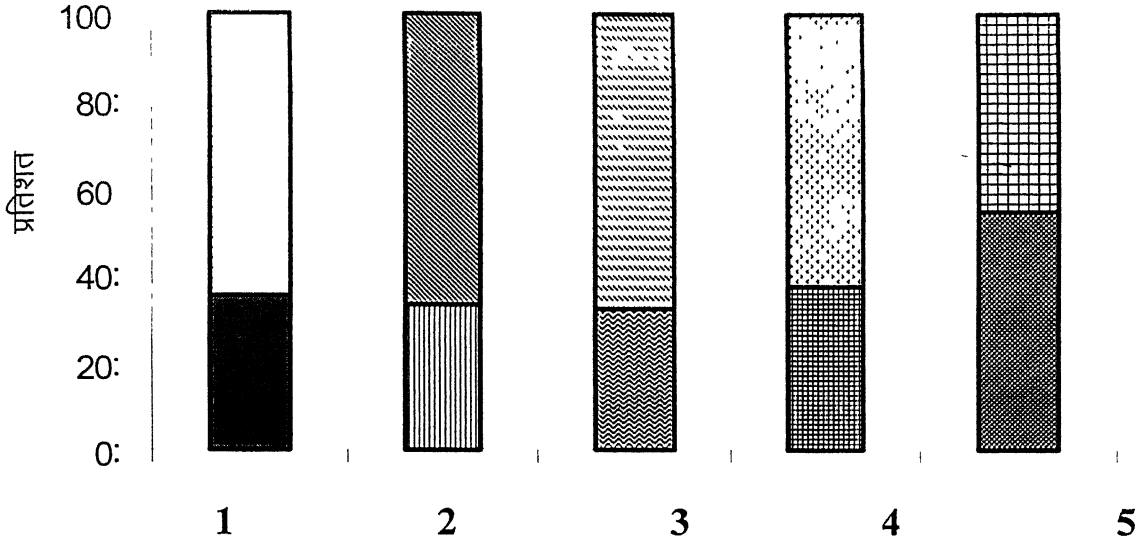
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट– 3.1

पेय जलापूर्ति सीधे नलकूप से तथा नदी के जल को शुद्ध करके रखे गये बडे टैक से किया जाता है। नगर का मध्य भाग सिटी बोर्ड के द्वारा बिछायी गयी पाइप लाइन के द्वारा पेयजल प्राप्त करता है शेष अन्य भागो के लोग सिटी बोर्ड द्वारा कम जल प्राप्त करते है अधिकाश जलापूर्ति उनके द्वारा निजी ससाधनो यथा हैण्डपम्प व कूप से होती है। अल्पमात्रा मे शुद्धपेयजल आपूर्ति होने से नगर वासियो को विवश होकर निजी ससाधन से प्राप्त अशुद्ध जल का प्रयोग करने पर स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याओ से जूझना पडता है।

घरों में पेयजल आपूर्ति :-

घरो मे पेयजल आपूर्ति का विवरण लेने मे उत्तरदाताओ से इस बारे मे प्रश्न किया गया कि जलापूर्ति रोज होती है या अनियमित? जलापूर्ति का स्रोत क्या है (चापाकल द्वारा, ट्यूबवेल द्वारा, सडक के किनारे लगे सरकारी चापाकल द्वारा या खुले कूप द्वारा) पानी की गुणवत्ता सतोषजनक है या असतोषजनक। जलापूर्ति की मात्रा पर्याप्त है अथवा अपर्याप्त, पानी को रखने का ढग (खुले बरतन मे अथवा बद बरतन मे) किस प्रकार का हे आदि यह सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये।

सारणी 3 1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो मे जलापूर्ति (1999) (प्रतिशत मे)

1	2		3
	जल आपूर्ति का प्रकार		प्रतिशत
जल आपूर्ति का स्रोत	1 व्यक्तिगत	–	64 48
	2 सार्वजनिक	–	35.52
जलापूर्ति	1 नियमित	–	67 15
	2 अनियमित	–	32.85
जलापूर्ति की गुणवत्ता	1. सतोषजनक	–	68.01
	2 असतोषजनक	–	31 99
जलापूर्ति की मात्रा	1 पर्याप्त	–	62 51
	2 अपर्याप्त	–	37.49
घर मे जल सग्रह का तरीका	1 खुले बरतन मे	–	45 38
	2. बन्द बरतन मे	–	54.62

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों में जलापूर्ति 1999
जलापूर्ति का स्रोत
100%
80%
60%
40%
20%
0%
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
सार्वजनिक
व्यक्तिगत घर मे
जलापूर्ति की स्थिति
अनियमित
नियमित
जलापूर्ति की गुणवत्ता
अस्तोषजनक
स्तोषजनक
जलापूर्ति की मात्र
अपर्याप्त
पर्याप्त
सल सग्रह का तरीका
बन्द बर्तन मे
खुले बर्तन मे
स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
प्लेट 32
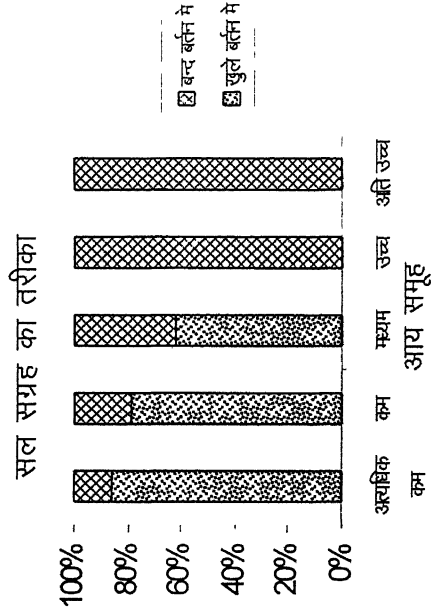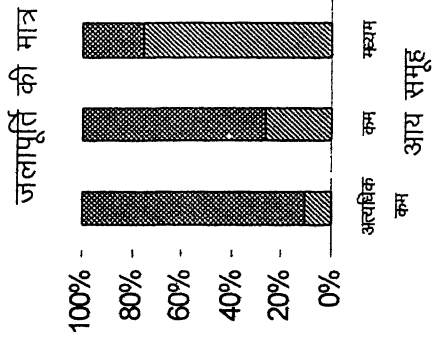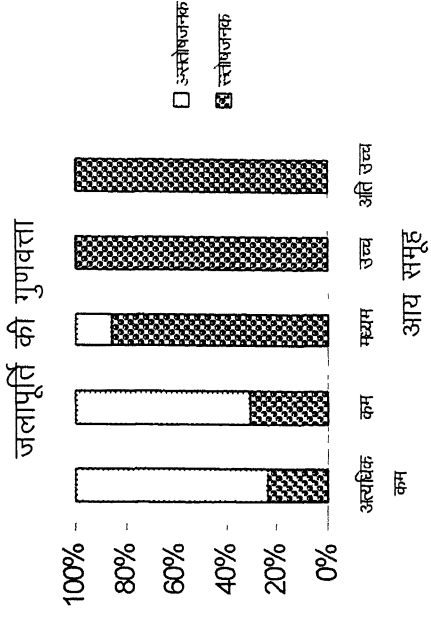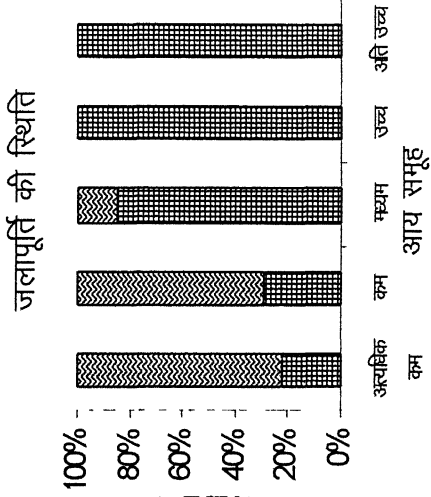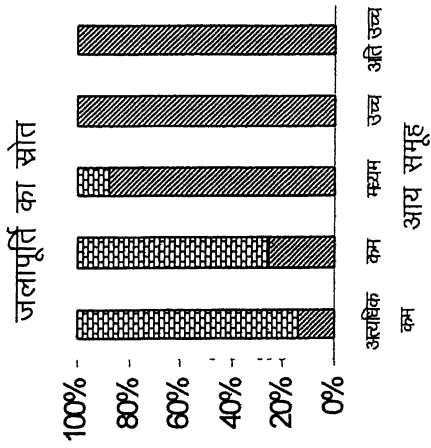
सारणी 3 1 मे कुल 1580 चयनित घरो मे जलापूर्ति की तस्वीर दिखायी गयी है। यह देखा गया है कि लगभग 35 प्रतिशत लोग सार्वजनिक स्रोतो जैसे सडक के किनारे लगे चापाकल या खुले कूओ से पानी लेते है। कुछ लोग नियमित पानी नही पाते लगभग 31 प्रतिशत लोग असतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी प्रयोग मे लाते है। एक तिहाई से अधिक लोग पानी पर्याप्त मात्रा मे नही पाते। कुल चयनित घरो मे से लगभग आधे लोग पानी खुले बरतनो मे ही रखते है, क्योकि उनके पास पानी रखने का बद बरतन नही है।

जल आपूर्ति का स्रोत :-

सारणी 3 2 एव प्लेट 3 2 मे चयनित घरो मे जलापूर्ति के स्रोत को दिखाया गया है। यहा पर सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि जलापूर्ति के दो मुख्य स्रोत है– 1– व्यक्तिगत और 2– सार्वजनिक। तीन प्रकार के व्यक्तिगत स्रोत देखे गये अपना चापाकल, सिटी बोर्ड द्वारा बिछायी गयी पाइप लाइन के द्वारा जो नदी से पानी शुद्ध करके वितरित किया जाता है व ट्यूबवेल द्वारा। तीन प्रकार के सार्वजनिक पेयजल आपूर्ति के स्रोत भी देखे गये। सडक के किनारे पाइप लाइन से सार्वजनिक उपयोग के लिए लगाया गया नल, सार्वजनिक उपयोग के लिए गया चापाकल, सार्वजनिक उपयोग मे आनेवाला कूआ। यह पाया गया कि 85 . प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 74 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग पानी सार्वजनिक स्रोत से ही लेते है। सार्वजनिक स्थानो से लिया गया पानी पेयजल के लिए उपयुक्त नही होता है। निम्न आय वर्ग के लोग सामाजिक दृष्टि से पिछडे हुए होते है। ये लोग खुले कूओ से पानी लेते है ये खुले कूए बुरी तरह प्रदूषित हो जाते है क्योकि आसपास रहने वाले लोग अनेक प्रकार के त्याज्य पदार्थ इसी कूए मे फेक देते है। इन घरों के बच्चे कुछ भी जो इनके हाथ मे आता है उठाकर कुए मे फेक देते है। इनमे पानी शुद्ध करने के लिए क्लोरीन भी नही मिलाया जाता है। इन सब कारणो से कम आय वर्ग के लोग गन्दे पानी के प्रयोग से होने वाली बीमारियो जैसे–पीलिया, पेचिस, कालरा से पीडित होते रहते है।

सारणी 3 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति का स्रोत (प्रतिशत मे)

आय समूह	व्यक्तिगत (घर मे)	सार्वजनिक	योग
अत्यधिक कम	14 46	85.54	100 00
कम	25.44	74 56	100 00
मध्यम	82 52	17 48	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	64.48	35.52	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

लगभग 82 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार के पास पानी लेने का निजी साधन है जबकि 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार सार्वजनिक स्रोतो से पानी लेते है क्योकि उनके पास अपना चापाकल नही है या उनके आवास पर सरकारी पानी नहीं आता है और ये लोग घर के बगल मे लगे सार्वजनिक स्रोत से आसानी से पानी पा जाते है। इनमे से कुछ लोगो के पास गैर कानूनी पानी का कनेक्शन है। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे सरकारी पानी के कनेक्शन से पानी आता है। नगर के कुछ सम्पन्न व्यक्ति निजी बोरिग कराके जेड पम्प अपने आवास पर लगाये है। पानी का कनेक्शन और घर की सम्पन्नता मे सम्बन्ध है, जैसे–जैसे आय बढती है जल आपूर्ति का उचित साधन घर मे होता जाता है।

जलापूर्ति की स्थिति :-

शुद्ध पीने योग्य जल की नियमित आपूर्ति दैनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओ मे से एक है। सारणी 3 3 और प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति की बारम्बारता को दिखाया गया है।

सारणी 3 3 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	नियमित	अनियमित	योग
अत्यधिक कम	22 33	77 67	100 00
कम	28.98	71.02	100 00
मध्यम	84.46	15.54	100 00
उच्च	100 00	--	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	67 15	32 85	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा पर यह पाया गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 71 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे जल आपूर्ति नियमित नही होती है और ये लोग सार्वजनिक जल के स्रोत से पानी लेते है। इन सार्वजनिक जल के कनेक्शन मे भी पानी नियमित न आनेसे इन निम्न आय वर्ग के लोगो को पानी लेने बहुत दूर तक जाना पडता है। पानी आने की अनियमितता गर्मी के दिनो मे विशेषकर देखी जाती है क्योकि इन दिनों मे विद्युत आपूर्ति बाधा बहुत आम होती है। कभी–कभी इन सार्वजनिक जल आपूर्ति के स्रोत पर पानी लेने वालो की लम्बी लाइन लगी रहती है और लोगो को पानी लेने के लिए घण्ओ इन्तजार करना पडता है। जबकि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे जल आपूर्ति नियमित होती है क्योकि उनके पास अपना चापाकल है या घर मे जेटपम्प लगा है एव सरकारी पानी भी आता है।

जल आपूर्ति की गुणवत्ता :-

सारणी 3.4 और प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरों मे जल आपूर्ति की गुणवत्ता को दर्शाया गया है जो दो विकल्प मे है। या तो जल आपूर्ति की गुणवत्ता सतोषजनक

है या असतोषजनक।

सारणी 3 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की गुणवत्ता (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	सतोषजनक	असतोषजनक	योग
अत्यधिक कम	23 90	76 10	100 00
कम	30.74	69.26	100 00
मध्यम	85 44	14 56	100 00
उच्च	100 00	---	100 00
अति उच्च	100 00	---	100 00
योग	68 01	31 99	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 76 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 69 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 14 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर असतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है, जो साधारणतया पीने योग्य भी नही होता है। इन परिवारो के अनुसार पानी पीले रग का नमकीन खारा आता है जिसमे किसी प्रकार की गध भी रहती है। जबकि लगभग एक चौथाई अत्यधिक कम आय वर्ग एव कम आय वर्ग के घर सतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है। घरो मे पानी को उबाल करके शुद्ध करने का चलन यहा नही है क्योकि लोगो को यह आभास रहता है कि पानी की गुणवत्ता इतनी खराब नही है कि उसे उबाला जाय जो कि गलत है। ये लोग दूषित पानी के प्रयोग से होने वाली समस्याओ से अनभिज्ञ से रहते है। कुछ मध्यम आय वर्ग के घरो मे यह बताया गया कि समय का अभाव एव ईंधन पर आने वाला खर्च भी पानी को शुद्ध करने मे रूकावट का काम करता है। यह भी बताया गया कि जलकल विभाग द्वारा पानी में क्लोरीन मिलाकर पानी वितरित किया जाता है, लम्बे समय तक क्लोरीन उपयोग का अलग प्रभाव पडता है। पानी वितरित की जाने वाली कुछ पाइप लाइन बहुत पुरानी है जिससे उसमे अन्दर जग

लगा हुआ होता है और पानी इसमे मैला होकर आता है।

सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो ने यह बताया कि वे सतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है लेकिन इन घरो मे भी जिनके पास पानी स्टोर करने की बडी टकी है अधिकतर लोग टकी को साफ नही कर पाते जिससे उसमे दीवारो पर व नीचे सतह पर काई की परत जमी देखी गयी जो पानी को प्रदूषित व कीटाणु युक्त कर देती है। कम आय वर्ग के लोग उचित गुणवत्ता वाला पानी इसलिए नही पा पाते क्योकि ये सार्वजनिक पानी वितरण की जो पाइप बनी होती है उससे पानी लेते है या सडक के किनारे बने सार्वजनिक चापाकल से पानी लेते है। पानी की गुणवत्ता का गहराई से सीधा सम्बन्ध है। जैसे–जैसे पृथ्वी की गहराई बढती है पानी शुद्ध प्राप्त होता है क्योकि पृथ्वी की उपरी परत मे प्रदूषित पानी रहता है। कम आय वर्ग के अधिकाश लोग प्रदूषित पानी का ही उपयोग कर लेते है इसलिए इन घरो के सदस्य विशेषकर बच्चे पीलिया कालरा पेचिस आदि से पीडित रहते हैं।

जल आपूर्ति की मात्रा :-

सारणी 3 5 और प्लेट 3.2 मे नगर के चयनित घरो में जल आपूर्ति की मात्रा का विवरण दिखाया गया है।

सारणी 3 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की मात्रा (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	पर्याप्त	अपर्याप्त	योग
अत्यधिक कम	10.70	89.30	100 00
कम	26 86	73 14	100 00
मध्यम	75 00	25.00	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100.00
योग	62 51	37 49	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 89 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 73

प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 24 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर पर्याप्त मात्रा मे पानी नही पाते इसका मुख्य कारण सिटी बोर्ड द्वारा जल का वितरण कम किया जाना है। जौनपुर नगर मे पानी का वितरण विद्युत आपूर्ति बाधा के कारण बहुत दोषपूर्ण है। गर्मी के दिनो मे पानी का तल नीचे चला जाता है। गर्मी के दिनो मे पानी का वितरण भी कम हो पाता है। दूसरी तरफ सभी उच्च आय वर्ग के परिवार किसी प्रकार की पानी वितरण की समस्या नही झेलते है क्योकि उनके पास पानी सग्रह करके रखने की बडी टकी या ड्रम रहता है। बहुत से उच्च आय वर्ग के घरो मे जेटपम्प व जनरेटर दोनो लगा है जिससे विद्युत आपूर्ति बाधा मे भी वे किसी समस्या से ग्रसित नही होते है। इस प्रकार की सुविधा नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे देखने को मिलती है। गर्मी के दिनो मे सार्वजनिक पाइप मे यदि पानी कई दिनो तक नही आता है तो लोग जलकल विभाग के सामने धरना–प्रदर्शन भी किया करते है। 2001 के गर्मी के महीने मे विद्युत बाधा के कारण पानी न मिलने पर नगर के विशाल अधिवक्ता सघ ने जिलाधिकारी का घेराव किया था।

जल संग्रह का तरीका :-

जल आपूर्ति को ठीक प्रकार से सग्रह करना भी एक कला है। सारणी 3 6 एव प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जल सग्रह का तरीका दर्शाया गया है।

सारणी 3 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल सग्रह का तरीका (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	खुले बर्तन मे	बन्द बर्तन मे	योग
अत्यधिक कम	85 85	14 15	100 00
कम	79 15	20 85	100 00
मध्यम	61 89	38 10	100 00
उच्च	—	100 00	100 00
अति उच्च	—	100 00	100 00
योग	45 38	54 62	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि 85 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 79 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 61 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार पानी को खुले बर्तन मे ही सग्रह करते है। ये परिवार पानी को प्रदूषित करने का काम करते है क्योकि खुले हुए पानी मे विभिन्न धूल कण, कीट पतगा आदि पड जाते है जो विभिन्न प्रकार की बीमारियो का कारण बनता है। कम आय वर्ग के घरो मे पानी रखने के लिए बडे पीपे का प्रयोग करते है या छोटे–छोटे बर्तन यथा बाल्टी, टब का प्रयोग किया जाता है आम तौर पर बाल्टी गरीब व मध्यम आय वर्ग मे बहुत प्रचलित है।

यह भी देखा गया कि 14 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 20 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 38 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर प्रतिदिन के प्रयोग मे आने वाले पानी को ढककर रखते है। सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे पानी ढककर रखा जाता है या कुछ घरो मे पानी सग्रह की अधिक आवश्यकता नही होती क्योकि उनके पास बद पानी की टकी है या जेट पम्प चलाकर आवश्यकतानुसार पानी ले लेते है। इस प्रकार की टकी अधिकाश सीमेन्ट की बनी हुयी है। इनके साथ केवल यह समस्या रहती है कि ये टकी को नियमित रूप से साफ नही करते है इसलिए इसमे काई कीट आदि पड जाते है। सर्वेक्षण के दौरान यह भी देखा गया कि इस टकी के अगल–बगल चूहे, चिडिया, गिलहरी आदि अपना निवास बना लेते है जहा कभी–कभी वे मर भी जाते है। धर के लोग इस बारे मे सचेत नही रहते है अतएव उच्च आय वर्ग में भी यह बीमारी फैलने का कारण बन सकता है। चयनित घरो मे विभिन्न आय वर्ग के परिवारों मे जलापूर्ति की सारणी से यह पता चलता है कि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के लोग निजी स्रोत से पानी लेते है जैसे अपने चापाकल से या उनके आवास तक आने वाले सरकारी पानी के कनेक्शन द्वारा लेते है और कुछ के पास जेटपम्प है जो नियमित शुद्ध स्वच्छ पानी देता है। ये उच्च आय वर्ग के लोग दूषित पानी के प्रयोग से होने वाली समस्या से अवगत रहते है इसलिए पानी को ढककर ही रखते है। कुछ उच्च आय वर्ग के घरो मे पानी शुद्ध करने का उपकरण भी है जिसे आसानी से बेसिन या नल मे लगा लिया जाता है। लेकिन यह उपकरण बहुत कम घरो मे देखा गया जो उच्च शिक्षित है दूसरी तरफ अधिकाश कम आय वर्ग के लोग खाना बनाने के लिए कपडे व बरतन धोने के लिये एव नहाने

के लिए सार्वजनिक स्रोतो से जैसे सडक के किनारे लगे चापाकल से या सरकारी पाइप लाइन से पानी लेते है। ये लोग दैनिक आवश्यकतानुसार पानी की मात्रा नही पाते है। विद्युत आपूर्ति बाधा मे तो और भी समस्या हो जाती है। ये लोग असंतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी उपयोग मे लाते है और उसे खुला भी रखते है। इन सभी बातो से इन कम आय वर्ग के घरो मे पेचिश, कालरा, टाइफाइड, पीलिया जैसी बीमारिया आमतौर पर फैला करती है। इस नगर के कुछ मुहल्लो से लिये गये पेयजल के नमूने का परिक्षण शोधकर्ता द्वारा के जी मेडिकल कालेज लखनऊ से कराया गया, जिसका विवरण इस प्रकार है।

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– जहागीराबाद जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– पारदर्शी

असयोजित एव लवणीय तिक्ताति भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————————0 001

शिवत्याम तिक्ताति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000————0 002

37^0 से.ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000————————0.08

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000————————108

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000————————76

सान्द्र विलयन में उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000————32

प्रज्वलन पर रूप————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000——————39.2

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000——————24.0

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000---------15 2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000-------28 6

नाइट्राट्स प्रति 100,000-------निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000-------निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000---------0 08

रेजीडुअल क्लोरीन----------निगेटिव

अभ्युक्ति------------------------------कठोर

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– हमाम दरवाजा, जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रासपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्ताति भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————————0 002

शिवत्याम तिक्ताति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000————0 001

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————0 03

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000———————56

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000———————37

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000——————19

प्रज्वलन पर रूप—————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000———————20 4

स्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000——————12 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000——————8.2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 10,0,000—————1 6

नाइट्राट्स प्रति 100,000—————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000—————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000——————0 04

रेजीडुअल क्लोरीन मि ग्राम/लि ——————निगेटिव

अभ्युक्ति————————————————————पेय योग्य

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– अजमेरी जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तातित भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————————निल

शिवत्याम तिक्ताति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000——————निल

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————निल

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000———————68

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000————————36

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 10,000——————32

प्रज्वलन पर रूप———————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000———————24 0

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000——————10 0

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000———————14.0

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000——————1.4

नाइट्राट्स प्रति 100,000——————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000——————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000———————0 03

रेजीडुअल क्लोरीन————————0.3 पी पी.एम

अभ्युक्ति————————————————————पीने योग्य

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– रौजा अर्जन, जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– अर्ध ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्ताति भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————————0 002

शिवत्याम तिक्ताति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000————–0 001

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————0 03

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000——————53

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000——————37

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000—————16

प्रज्वलन पर रूप—————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000——————21 2

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000—————11 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000—————10.2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000————1 8

नाइट्राट्स प्रति 100,000————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000—————निगेटिव

रेजीडुअल क्लोरीन——————निगेटिव

अभ्युक्ति————————————————कठोर

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– रिजवी खा, जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तातित भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000———————निल

शिवत्याम तिक्तातित भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000———————निल

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————निल

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000———————80

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000———————42

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000———————38

प्रज्वलन पर रूप———————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000———————24.6

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000———————11 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000———————13.4

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000———————1 6

नाइट्राट्स प्रति 100,000———————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000———————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000———————0 03

रेंजीडुअल क्लोरीन———————0 2 पी पी एम.

अभ्युक्ति———————————————पेय योग्य

विभिन्न स्थानो के पानी मे क्लोरीन की मात्रा की जाच भी टी डी कालेज जौनपुर के रसायन विभाग से करायी गयी जिसके परिणाम निम्नलिखित है–

उर्दू बाजार	0 6 पी पी एम
परमानतपुर	0 2 पी पी एम
मछलीशहर पड़ाव	0 18 पी पी एम
ओलन्दगज	0 2 पी पी एम
हुसेनाबाद	0 12 पी पी एम
हरखपुर	0 41 पी पी एम
अहियापुर	0 24 पी पी एम
भण्डारी	0 31 पी पी एम
चाचकपुर	0 10 पी पी एम

पानी के अपवाह की स्थिति :-

चयनित घरो का गन्दा पानी जिसमे रसोईघर स्नानघर व शौचालय का पानी मिला होता है। घर के बाहर नाली के माध्यम से निकलता है। यह पानी प्राय सडक की मुख्य नाली से गुजरता है कही–कही घर के बाहर बने सोख्ता गड्ढे मे जाता है। उपयोग मे लाये जाने वाले पानी का 60 प्रतिशत भाग इसी प्रकार बाहर निकलता है। घरो के प्रदूषण का अध्ययन करते समय घरो के बाहर गन्दे पानी के लिए बनी निकासी का विशेष महत्व है। क्योकि यह पानी कही–कही खुली नाली से होकर गुजरता है जहा बन्द नाली से होकर गुजरता है वहॉ दुर्गन्ध फैलने की सम्भावना नही रहती है किन्तु खुली नाली से होकर बहने वाला गन्दा पानी दुर्गन्ध फैलाता है जिससे आसपास का वातावरण प्रदूषित होता रहता है इससे वहा रहने वाले लोग ही नही प्रभावित होते बल्कि उस ओर से गुजरने वाले व्यक्ति भी प्रदूषण से प्रभावित होते है।

जौनपुर नगर के सम्पूर्ण क्षेत्र का पानी सीवर लाइन न होने से पानी के

निकासी के लिए या तो खुली नाली से होकर या व्यक्तिगत रूप से बने सोख्ता गड्ढे के माध्यम से विसर्जित होता है। यह पानी गोमती नदी मे नाले के माध्यम से चला जाता है। अग्रेजो के समय मे एक सीवर लाइन थोडी दूरी तक भडारी स्टेशन के पास बनायी गयी थी नगर परिषद के अभिलेख से पता चलता है कि स्वतत्रता प्राप्ति के बाद यह सीवर लाइन पूरी तरह काम नही कर रही थी इसके सफाई कराने या उसे पुन सचालित करने का प्रयास सन 2002 मे किया गया। फलस्वरूप उस क्षेत्र मे गन्दे पानी के निकासी का माध्यम कुछ दूर तक सीवर लाइन से होकर आगे खासनपुर मे से होकर गुजरता है। सभी नालिया आगे चलकर एक बडे नाले से मिलती है और यह नाला गोमती नदी मे गन्दे पानी को पहुचाने मे सहायक होता है। शहर के अधिकाश भागो मे जमीन की सतह ढाल पर न होने के कारण पानी की निकासी के लिए बनी नालियो मे गन्दा पानी बहुत धीमी गति से बहता है और बहाव कम होने से नालियो मे पडा कूडा करकट पानी को और रोक देता है जिससे गन्दा पानी नाली की सीमा को लाघ कर सडक या गली मे फैल जाता है। यह स्थिति सुबह शाम बनी रहती है। प्राकृतिक रूप से आवासीय व्यवस्था उन क्षेत्रो की प्रदूषण से ज्यादा प्रभावित है जहा प्राकृतिक नाला, तालाब नही है और जमीन मे ढाल नही है। नगर का पानी निकासी का साधन दोषपूर्ण होने के कारण बरसात के दिनो मे शहर का अधिकाश भाग जल भराव से प्रभावित हो जाता है और सडको पर अतिवृष्टि की स्थिति मे कुछ क्षेत्रो मे आवागमन भी रूक जाता है। यह स्थिति लाइन बाजार से कचहरी रोड व बदलापुर पडाव से कटघरा एव उर्दू बाजार मे बरसात के दिनो मे देखी जा सकती है। इस स्थिति से निपटने के लिए सिटी बोर्ड की तरफ से बरसात के पूर्व नालियो की सफाई व नालियो को चौडा करके पानी निकासी को सुगम बनाने का कार्य किया जाता है, किन्तु अतिवृष्टि की स्थिति मे इन प्रयासो का कोई प्रभाव नही रह जाता है। नगर मे व्याज्य जल के निकासी का कही भी उपयुक्त साधन देखने को नही मिलता है। गोमती नदी में गन्दे पानी को रोककर उसे साफ करके नदी मे पानी विसर्जित करने के लिए प्लांट भी बैठाया गया है जो खराब पडा है। नदी मे गन्दा पानी नाली और नालो के माध्यम से सीधे आकर मिलता है जिससे नदी का पानी प्रदूषित हो जाता है।

नगर के चयनित घरो के उत्तरदाताओ से पानी के अपवाह के बारे मे

विचार विमर्श करने में उनसे घरों के अनुपयोगी जल के विसर्जन के तरीके के बारे में, मकान के बाहर जल निकासी के लिये बनी नालियों के बारे में, घरों के बाहर जल जमाव की स्थिति के बारे में जानकारियां ली गयी। जौनपुर नगर के जिन 1580 मकानों को सर्वेक्षण के लिए चुना गया उन मकानों के पानी के अपवाह की तस्वीर सारणी 3.7 एवं प्लेट 3.7 में दर्शायी गयी है। इस नगर में कई मुहल्लों के गन्दे पानी को एकत्रित करने के लिए दो विशाल गड्ढे प्राकृतिक रूप से बने हैं जिनमें से एक उर्दू वार्ड के फिरोशेपुर मुहल्ले में बारीनाथ मंदिर के सामने लगभग 5 एकड़ में हैं और दूसरा ख्वाजगीटोला मुहल्ले में लगभग तीन एकड़ भूमि में है। इन दोनों गड्ढों में पानी हमेशा एकत्रित रहता है। बरसात के दिनों में ख्वाजगी टोला मुहल्ले में स्थित गड्ढे का पानी जब काफी भर जाता है और उसका पानी आसपास स्थित घरों में प्रवेश करने लगता है तो सिटी बोर्ड की तरफ से लम्बी–लम्बी पाइप लगाकर गड्ढे का पानी पम्पिंग सेट के माध्यम से गोमती नदी की तरफ जाने वाले नाले में बहाया जाता है। इस क्षेत्र के निवासियों ने यह बताया कि इन दिनों सिटी बोर्ड के सफाई कर्मी आसपास के मुहल्ले के कूड़ा करकट को इसी गड्ढे में गिराकर इसे पाट रहे हैं और इस गड्ढे की पटी भूमि पर सिटी बोर्ड के कुछ कर्मचारियों की मिली भगत से नाजायज तौर पर आवास बनाकर कुछ लोग रह रहे हैं और यह कम जारी है। इस प्रकार इस गड्ढे के आसपास रहने वाले मकानों की पर्यावरणीय स्थिति अत्यन्त सोचनीय है।

प्लेट 3.3 ख्वाजगी टोला मुहल्ले में स्थित पानी का गड्ढा

प्लेट 3.4 फिरोशेपुर में स्थित विशाल गड्ढा जिसमें आस पास मुहल्लों का गन्दा पानी वर्ष भर एकत्रित रहता है।

प्लेट 3.5 बरसात के दिनों में फिरोशेपुर के गड्ढे में जब पानी अधिक होकर फैलने लगता है तो उसे जमीन के अन्दर कुछ दूर तक बनें नाले से बहाये जाने की व्यवस्था है आगे यह नाला खुले नाले के रूप में जाकर गोमती नदी में मिल जाता है।

उर्दू वार्ड के फिरोशेपुर मुहल्ले में स्थित विशाल गड्ढे में गंदा पानी आसपास के मुहल्लों का एकत्रित होता है। बरसात के समय पानी अत्यधिक होने की दशा में इस गड्ढे से पानी निकासी के लिए जमीन के अन्दर सुरंगनुमा पाइपलाइन मीरमस्त मुहल्ले तक बनी है उसके बाद खुले नाले से होकर गोमती में पानी जाकर गिरता है। सुरंगनुमा जो पाइप लाइन बिछी है उसमें से कचरा व कूडा की सफाई के लिए जगह–जगह लगभग 20 चेम्बर बनाये गये हैं जो ढक्कनदार हैं। बरसात के पूर्व इस विशाल गड्ढे में बदबूदार पानी के निकासी का कोई जरिया न होने के कारण आसपास स्थित आवासीय क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति दयनीय है।

प्लेट 3.6 (A) खासनपुर में हाल ही में खुदाई से निकला पुराना नाला जिसे लोगों ने पाटकर खेत बना दिया था वर्तमान में इस नाले से आस पास के क्षेत्रों का पानी सुचारू रूप से गोमती नदी तक जा रहा है।

इस नगर के सर्वेक्षण में मुझे यह ज्ञात हुआ कि मुहल्ला नसीब खां मण्डी में एकमात्र बनी सीवर लाइन अंग्रेजों के समय की बनी थी जो खासनपुर मुहल्ले से गुजरती हुई खुले नाले के रूप में गोमती नदी से जुड़ती है। इस नाले को खासनपुर क्षेत्र के लोगों ने पाटकर खेत के रूप में परिणित कर लिया था। तत्कालीन चेयरमैन संध्या रानी श्रीवास्तवा का ध्यान इस ओर सन 2000 में दिलाया गया तो इन्होंने इसे गंभीरता से लिया और लगभग तीन किलोमीटर लम्बे नाले की खुदाई करवाया और यह पाया गया कि जमीन के अन्दर छः फीट चौड़ा और इससे अधिक गहरा नाला वजूद में है जो ईंट की दीवार से बना हुआ है। क्षेत्रीय बुजुर्गों ने सर्वेक्षण के दौरान यह भी बताया कि वर्तमान नाले के नीचे भी एक नाला है जिसमें जगह–जगह पानी छन कर जाने के लिये जालियां लगी हुयी हैं किन्तु सिटी बोर्ड की तरफ से नाले की पूरी सफाई आर्थिक कारणों से नहीं हो सकी है फिर भी जो सफाई की गयी है उससे नसीब खां मुहल्ले में निर्मित सीवर लाइन का पानी संतोषजनक तरीके से नाले से होकर नदी में जा रहा है।

प्लेट 3.6 (B) खासनपुर स्थित नाले के नीचे दूसरी परत में भी एक नाला है जिससे कूडा–करकट छनकर उपर ही रह जाता है।

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरों के अपवाह की स्थिति

1999
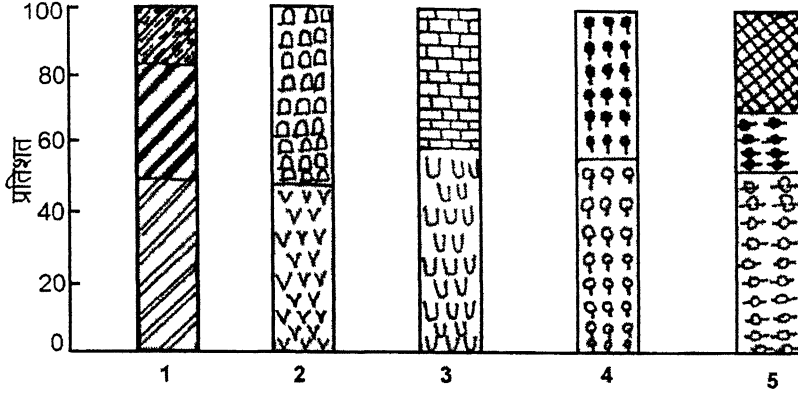
1 घरो के अनुपयोगी जल का विसर्जन
- नाली मे
- घर के बाहर
- घर मे ही

2. मकान के बाहर जल निकासी के लिए बनी नालियों की स्थिति
- नाली मे स्थित है
- नाली नही स्थित है

3. नालियो के प्रकार
- खुली नाली
- बद नाली

4. घर के बाहर जल जमाव की स्थिति
- जल एकत्रित रहता है
- जल एकत्रित नही रहता है

5 जल जमाव के प्रकार
- बरसात का पानी
- घर का अनुपयोगी जल मात्र
- दोनो

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 37

नगर मे सीवर लाइन का जाल बिछाने के लिए गोमती एक्शन प्लान के अन्तर्गत करोडो रूपये के लागत से नगर के मध्य क्षेत्र मे ओलन्दगज से कचहरी के पास तक सडक के अन्दर छ से सात फीट की गहराई तक व बदलापुर पडाव से ओलन्दगज तक व ताडतला वार्ड से गोमती नदी तक व सिपाह क्षेत्र के मुहल्ले मे इतनी गहराई मे जमीन के नीचे लगभग ढाई फीट व्यास की पाइप लाइन बिछायी गयी किन्तु तकनीकी दृष्टि से यह पाइप लाइन उपयुक्त ढग से न बिछाये जाने के कारण इस योजना पर खर्च किया गया सारा पैसा बेकार हो गया। क्षेत्र के नागरिको का यह कहना है कि इस कार्य मे अधिकारी व ठेकेदार घन का मनमानी ढग से दुरूपयोग किये। यह भी ज्ञात हुआ कि गोमती एक्शन प्लान का मुख्य कार्यालय सुल्तानपुर मे था और जब इस कार्य को किया जा रहा था (सन 2000–2001) तो सम्बन्धित उच्चाधिकारी इसे देखने तक नही आये।सिटी बोर्ड के अधिकारियो का यह कहना है कि गोमती को प्रदूषण से बचाने के लिए अगर इस योजना की धनराशि को सिटी बोर्ड को दिया गया होता तो इस कार्य को यहा की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप निर्माण कराते और जो जमीन के अन्दर पाइप लाइन बिछाई गयी उसकी जगह काफी बडे व्यास की पाइपलाइन बिछवाते जिससे सीवर लाइन सुचारू रूप से चल सकती थी। इस सम्बन्ध मे विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि करोडो रूपये खर्च होने के बाद भी यह सीवर लाइन बद पडी है।

सारणी 3.7 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो के पानी के अपवाह की स्थिति का विवरण (1999)

	अपवाह की स्थिति	प्रतिशत
घर के अनुपयोगी जल के विसर्जन का तरीका	1. नाली मे	46.33
	2 घर के बाहर चारो तरफ	35 99
	3 घर में ही	17 68
मकान के बाहर जल निकासी के लिए नालियॉ	1 स्थित है	46 10
	2 नही स्थित है	53 9
नालियो के प्रकार.	1 खुली नाली	56.44
	2 बद नाली	43.56

घर के बाहर जलजमाव	1 एकत्रित रहता है	51.22
	2 जल एकत्रित नही रहता है	48.78
घर के बाहर जलजमाव के प्रकार	1 बरसात का पानी	48.48
	2 घर का अनुपयोगी जल मात्र	19.42
	3 दोनो	32.10

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी के अनुसार कुल चयनित घरो मे से 46 प्रतिशत घर का त्याज्य पानी सीमेट की बनी नालियो मे बाहर जाता है लगभग 36 प्रतिशत घरो का पानी घर के बाहर चारो तरफ लगता है और 17 प्रतिशत घरो का त्याज्य पानी घर मे ही एकत्रित होता है। 46 प्रतिशत घरो के मुहल्ले मे नाली नही है। 43 प्रतिशत नालिया ढकी हुयी है और बाकी 56 प्रतिशत नालिया खुली नालिया है। कुछ नालियो मे मिट्टी भरी हुयी होती है। लगभग 52 प्रतिशत घरो मे बताया गया कि घर के चारो तरफ पानी जमा होता है इसका मुख्य कारण उच्चावच्च का ठीक न होना है। 48 प्रतिशत घरो के लोगो ने बताया कि घर के सामने केवल बरसात का पानी लगता है। 19 प्रतिशत लोगो के घर के सामने घर का अनुपयोगी जल लगता है एव 32 प्रतिशत घरो के सामने दोनो प्रकार के जल का जमाव होता है। यह सारणी नगर के खराब अपवाह एव घर के बाहर के खराब पर्यावरण की तस्वीर प्रस्तुत करती है।

घरों के त्याज्य जल का विसर्जन :–

उचित एव सुरक्षित तरीके से त्याज्य जल का विसर्जन पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाता है। सारणी 3.8 और प्लेट 3 8 मे चयनित घरो के त्याज्य पानी के विसर्जन को दिखाया गया है।

सारणी 3 8 जौनपुर नगर के चयनित घरो के त्याज्य पानी के विसर्जन का तरीका (1999)

(प्रतिशत मे)

आय समूह	नाली मे	घर के बाहर	घर मे ही	योग
अत्यधिक कम	6 60	73.90	19 50	100 00
कम	15 55	47.35	37.10	100 00
मध्यम	25.49	42 72	31 79	100 00
उच्च	85.48	14.52	—	100 00
अति उच्च	98 51	1.49	—	100 00
योग	46 33	35 99	17 68	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

अनुपयोगी जल का विसर्जन मुख्य रूप से अत्यधिक कम आय वर्ग के 73 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 47 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 42 प्रतिशत का घर के बाहर खुले मे ही पाया गया। ये खुले नाले घर के बाहर चतुर्दिक देखे गये। कम आय वर्ग के 36 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 31 प्रतिशत घरो के अनुपयोगी जल का विसर्जन उचित जल निकासी न होने के कारण घर मे ही होता है। उच्च आय वर्ग के लगभग 86 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 98 प्रतिशत घरो का पानी सीधे नाली से होकर गुजरता है। जिन घरों मे फ्लश शौचालय है उन घरों में भी कुल अनुपयोगी जल का 60 प्रतिशत नाली मे से होकर गुजरता है। इस प्रकार यह दिखायी पडता है अपेक्षाकृत गरीब घरो के बाहर, उचित नाली की व्यवस्था नही है जबकि अच्छे घरो से नाली बाहर सडक की मुख्य नाली से आकर मिलती है और सेप्टिक टैंक बने हुए हैं नगर मे बंद नालिया बहुत कम देखी गयी।

घर के चारों तरफ नालियों की स्थिति :-

रसोई घर एवं स्नानघर से निकला हुआ अनुपयोगी पानी का निकास बद

नाली से होकर मुख्य नाली तक उचित तरीके से होना आवश्यक है। सारणी 3 9 और प्लेट 3 8 मे चयनित घरो के चारो तरफ नालियो की स्थिति को दर्शाया गया है।

सारणी 3 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो के चारो तरफ जल निकासी के लिए बनी नालियो की स्थिति (प्रतिशत मे)

आय समूह	नाली स्थित है	नाली नही स्थित है	योग
अत्यधिक कम	6 60	93 40	100 00
कम	16 60	83 40	100 00
मध्यम	25.73	74.27	100 00
उच्च	89.04	10.96	100 00
अति उच्च	92 57	7 43	100 00
योग	46 10	53 90	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि घरो के आसपास या तो उचित नालिया स्थित है अथवा नालिया नही है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 93 प्रतिशत कम आय वर्ग के 83 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 74 प्रतिशत घरो के पास नालिया उचित प्रकार से नही बनी हुई है। यह दिखायी पडता है कि कम आय वर्ग के घरो के सामने विभिन्न मुहल्लो मे नालिया नही स्थित है लेकिन उच्च आय वर्ग के भी 11 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 7 प्रतिशत घरो के पास भी नालिया नही स्थित पायी गयी, ऐसा मुख्य रूप से इसलिए है कि गरीब परिवार के लोग इस स्थिति मे नही रहते कि घर के आसपास नाली बनवाने के खर्च को वहन कर सके जबकि कुछ अमीर उच्च आय वर्ग के घर भी इस ओर ध्यान नही देते कि घर के बाहर उचित पक्की नाली की व्यवस्था होनी ही चाहिए। दूसरी तरफ 88 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 92 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घर मे एव घर के बाहर उचित पक्की नालिया बनी हुयी पायी गयी। वे मुहल्ले जिनमे मुख्य रूप से पक्की नालिया

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के अपवाह की स्थिति 1999
घरों के अनुपयोगी जल का विर्सजन
प्रतिशत
100
80
60
40
20
0
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
नाली में
घर के बाहर
घर में ही
मकान के बाहर जल निकासी के लिए बनी नालियों की स्थिति
है
नही
नालियों के प्रकार
घर के बाहर जलजमाव की स्थिति
जल एकत्रित रहता है
जल एकत्रित नही रहता है
जल जमाव के प्रकार
बरसात का पानी
घर का अनुपयोगी जलमात्र
दानो

चित्र 36
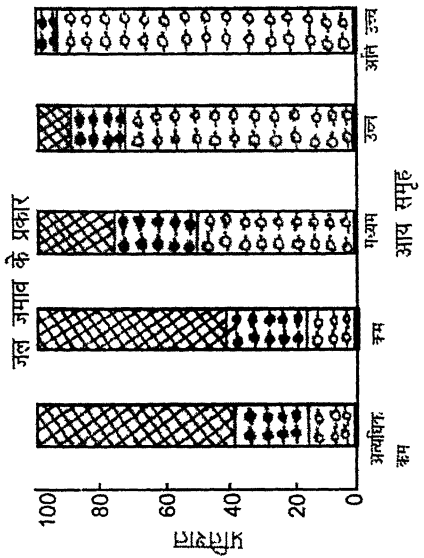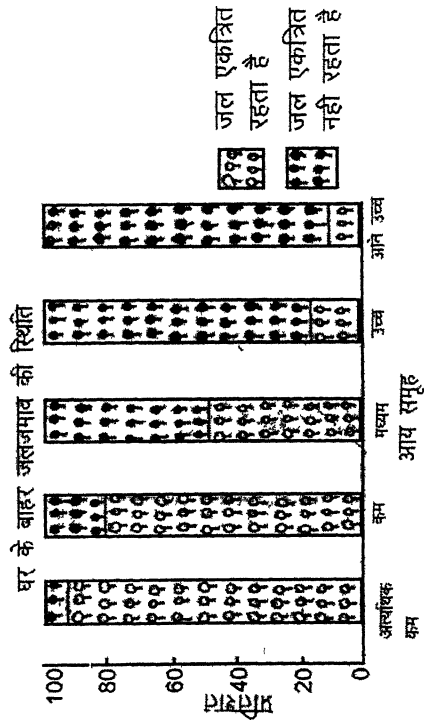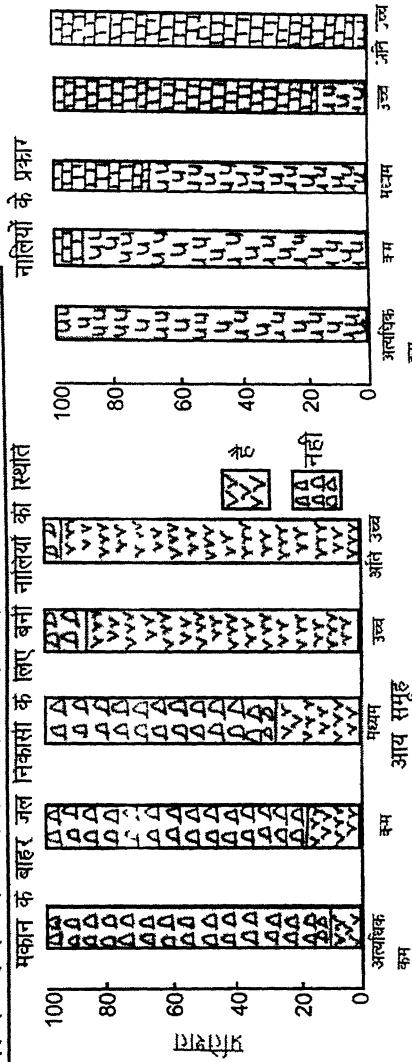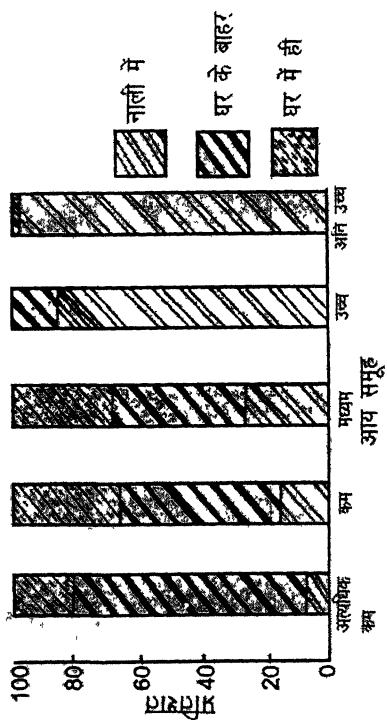
प्लेट 3.9 मुहल्ला रूहट्टा (उमरपुर) में खुली नाली का दृश्य जहाँ उच्च एवं मध्यम आय वर्ग के लोग आस पास निवास करते हैं।

प्लेट 3.10 मुहल्ला परमानतपुर में घर के बाहर जलजमाव का दृश्य।

नही पायी गयी है वे है— चितरसारी, अबीपुर, गूलरचक, कन्हईपुर, के कुछ भाग मे, बोदकरपुर व आराजी गुजीरेवानी के कुछ भाग मे, प्रेमराजपुर मे।

नालियों के प्रकार :-

सारणी 3 10 एव प्लेट 3 8 मे चयनित घरो के बाहर स्थित नालियो के प्रकार को दिखाया गया है। मुख्य रूप से दो प्रकार की नालिया देखने को मिलती है बद नाली या पूरी तरह से खुली नाली।

सारणी 3.10 जौनपुर नगर के चयनित घरो की नालियो के प्रकार (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुली नाली	बद नाली	योग
अत्यधिक कम	100 00	—	100 00
कम	90.46	9.54	100 00
मध्यम	70 87	29 13	100 00
उच्च	15 90	84 10	100 00
अति उच्च	4 95	95 05	100 00
योग	56 44	43 56	100 00

स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि उन मुहल्लो मे जहा कम आय वर्ग के लोग रहते है वहा की नालिया पूरी तरह से खुली हुयी है। कम आय वर्ग के 90 प्रतिशत, मध्यम आय वर्ग के 70 प्रतिशत घरो की नालिया खुली हुयी है। जबकि उच्च आय वर्ग के 84 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 95 प्रतिशत घरो की नालिया ढकी हुयी नालिया है। खुली नालिया मिट्टी, कागज, पालीथीन आदि से जाम हो जाती है जिससे नाली का पानी नाली की सीमा से बाहर सडक पर फैल जाता है या खुले छुटे क्षेत्र पर बिखरा रहता है। खुली नालिया मुख्य रूप से नगर के पुराने बसे क्षेत्र व मुसलमान बहुल क्षेत्र और कचहरी लाइन के कुछ नये बसे क्षेत्रो मे पायी गयी जो क्षेत्र नगर पालिका के अन्तर्गत नही आते है। इसलिए नगर पालिका के कर्मचारी इन नालियो

की सफाई नही करते है। लगभग 16 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 4 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो की नालिया भी खुली हुयी देखी गयी थी। ऐसा इसलिए है कि ये लोग अमीर तो है लेकिन इस ओर ध्यान नही देते कि घर के चारो तरफ बद नालिया ही होनी चाहिए। ये लोग शिक्षित नही है एव खुली नालियो से होने वाली समस्याओ से अनभिज्ञ है। दूसरी तरफ अधिकाश उच्च आय वर्ग के निवासी जब अपना घर बनवाते है तो सीमेट की ढकी हुयी नाली भी बनवाते है जिससे घर का अनुपयोगी जल आसानी से सडक की मुख्य नाली तक आ सके।

घर के चारों तरफ जल जमाव की स्थिति :-

नगर मे जल जमाव की स्थिति बहुत आमतौर पर देखी जा सकती है क्योकि जैसा पहले भी बताया जा चुका है कि इस नगर का उच्चावच्च ठीक नही है इसलिए नगर का पानी आसानी से नाली मे ही प्रवाहित नही होता है। सारणी 3 11 और प्लेट 3 8 मे इस नगर के चयनित घरो के आसपास जल जमाव की स्थिति को दिखाया गया है।

सारणी 3 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव की स्थिति (1999)

(प्रतिशत मे)

आय समूह	जल एकत्रित रहता है	नही रहता है	योग
अत्यधिक कम	95 60	4 40	100.00
कम	83 04	16.96	100 00
मध्यम	52 67	47 33	100 00
उच्च	15 90	84.10	100 00
अति उच्च	8 91	91 09	100.00
योग	51.22	48 78	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि 95 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 52 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर, आसपास निरन्तर जल जमाव की समस्या को झेलते है। इस प्रकार की तीक्ष्ण जल जमाव की समस्या कम आय वर्ग के घर के आसपास मुख्य रूप से देखी गयी क्योकि ये लोग अपेक्षाकृत सस्ते स्थान पर रहना पसंद करते है जहा उच्चावच्च भी ठीक नही रहता है। जबकि 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो ने इस प्रकार घर के आसपास जल जमाव की किसी समस्या को नही बताया क्योकि इनके घर उंचे-स्थानो पर बने है। उच्च आय वर्ग के भी 15 प्रतिशत घरो के एव अति उच्च आय वर्ग के 8 प्रतिशत घरो के पास भी जल जमाव की समस्या उपयुक्त नाली की व्यवस्था न होने के कारण पायी गयी। इन घरो के आसपास भी उच्चावच्च ठीक न होने के कारण पानी लगता है।

जल जमाव के प्रकार :-

तीन प्रकार के जल जमाव मुख्य रूप से देखने को मिले, केवल बरसात का पानी लगता है घर का अनुपयोगी पानी जमा होता है या बरसात का पानी और घर का अनुपयोगी पानी दोनो ही जमा होते है। इस नगर के खराब उच्चावच्च के कारण बरसात के दिनों मे पानी जगह जगह लगा ही रहता है। सारणी 3 12 और प्लेट 3 8 में चयनित घरो के बाहर जल जमाव के प्रकार को दिखाया गया है। 61 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 58.98 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से बडी मात्रा मे अनुपयोगी जल स्नानघर एव रसोई घर से बाहर आता है एव उचित नाली की व्यवस्था न होने पर पानी घर के आसपास जमा हो जाता है या खेत मे जमा हो जाता है। बरसात के समय मे इस पानी मे बरसात का पानी भी मिल जाता है। नगर पालिका के कर्मचारी भी इस तरह के इकट्ठा पानी को निकासी के लिये नही आते है। और अधिकारी कर्मचारी को उनके कर्तव्य निर्वाह के लिए बाध्य नही कर पाते हैं। इसलिए इस प्रकार का इकट्ठा पानी महीनो तक बना रहता है।

सारणी 3 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव के प्रकार प्रतिशत मे

आय समूह	केवल बरसात का पानी	घर का अनुपयोगी जलमात्र	दोनो
अत्यधिक कम	13 52	22 96	63 52
कम	13.78	26 50	59 72
मध्यम	45 39	22.82	31 79
उच्च	78 63	15 89	5 48
अति उच्च	91.09	8 91	—
योग	48.48	19 42	32.10

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उच्च आय वर्ग के 78 प्रतिशत घरो ने एव अति उच्च आय वर्ग के 71 प्रतिशत घरो ने बताया कि घर के सामने केवल बरसात का पानी ही जमा होता है इन घरो के पास उपयुक्त नालिया बनी हुयी है जिससे बरसात का पानी कुछ ही घटो तक जमा रहता है इसके बाद नाली से बह जाता है। बहुत कम ही उच्च आय वर्ग के घर ऐसे पाये गये जिनके घर के पास बरसात का पानी और घर का अनुपयोगी पानी दोनो जमा होता हो। इस प्रकार चयनित घरो के पानी के अपवाह एव नालियो की स्थिति को देखने से पता चलता है कि उच्च आय वर्ग के 89 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 93 प्रतिशत घर अनुपयोगी पानी को सीमेन्ट की बनी नाली मे प्रवाहित करते है। ये नालिया सीमेन्ट से प्लास्टर की हुयी है और मुख्य नाली से जुडी हुयी है। ये उच्च आय वर्ग के घर आमतौर पर घर के बाहर जल जमाव की समस्या से परेशान नही होते है। लेकिन कम आय वर्ग के घरो के आसपास उचित नाली की व्यवस्था नही है जहा से घरो का पानी ठीक ढग से निकल सके। इनके मुहल्ले मे अधिक दिनो तक जल जमाव की समस्या बनी ही रहती है। स्थिति और भी खराब तब हो जाती है जब पानी दीवारो को खराब करने लगता है। इकट्ठा पानी आस पडोस मे मक्खी, मच्छर व कीटाणु का जनक हो जाता है जिससे आसपास के लोग विशेषकर बच्चे अक्सर बीमार रहते हैं।

अध्याय - चार

जौनपुर नगर में स्थित आवासों में ठोस अपशिष्ट व अनुपयोगी वस्तुओं के विसर्जन एवं खाद्य-पदार्थ के रख-रखाव की स्थिति

यह अध्याय तीसरे अध्याय से जुडा हुआ है एव उसी का विस्तार है जिसमे जलापूर्ति की मात्रा एव अपवाह का वर्णन किया गया है सिटी बोर्ड द्वारा बनाये गये टैक के पानी की गुणवत्ता की जाच से पता चला है कि यह सुरक्षित रूप से पीने योग्य है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि लगभग 70 प्रतिशत घरो को नियमित रूप से जलापूर्ति उनके निजी साधनो से होती है। 70 प्रतिशत घर पानी की गुणवत्ता से सतुष्ट है। लगभग 65 प्रतिशत घर उपयोग में आने वाले जल की पर्याप्त मात्रा पा जाते हैं और 55 प्रतिशत लोग घर मे पानी को ठीक ढग से ढक कर रखते है। पानी के अपवाह के बारे मे पाया गया कि 30 प्रतिशत घर अनुपयोगी पानी का जमाव घर के बाहर करते है लगभग 15 प्रतिशत घरो का पानी घर मे ही एकत्रित होता है बाकी 55 प्रतिशत घरो का अनुपयोगी पानी नाली से होकर गुजरता है। लगभग 50 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे उचित नाली नही बनी है। 25 प्रतिशत लोगो ने घर के आसपास खुली नाली का होना बताया। 45 प्रतिशत लोगो ने यह समस्या बतायी कि घर के आसपास जल जमाव बना रहता है।

प्रस्तुत अध्याय चार, तीन भागो मे विभाजित है। प्रथम भाग घर के कूडा करकट अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट से सम्बन्धित है, दूसरे भाग मे घर मे मक्खी मच्छर व कीटाणु का प्रकोप वर्णित किया गया है और तीसरा भाग खाद्य पदार्थों के रख–रखाव से सम्बन्धित है। घरो का कूडा एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट– नगर के घरों से बडी मात्रा मे अनुपयोगी कूडा करकट निकलकर बाहर विसर्जित होने के लिए आते हैं। मकानो से जो ठोस अपशिष्ट बाहर आते है उनमे विभिन्न प्रकार की लौह, अलौह, धातुए, टीन, कागज, पुराने अखबार, पोलिथीन खाद्य पदार्थों मे से बचे जूठन एवं टूटे हुए गिलास कप आदि रहते है। इन कूडो को एकत्रित स्थान से उठाकर कही अन्यन्त ले जाया जाना समस्याग्रस्त विषय रहता है। नगर पालिका कर्मचारियो द्वारा नियमित सफाई न किये जाने पर वातावरण पूरी तरह प्रदूषण से भर जाता है। घरो से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट जो जगह–जगह एकत्रित रहते है। को देखकर नगर की साफ–सफाई का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस नगर मे बढते विभिन्न प्रकार के व्यापार एवं उद्योग के कारण अनुपयोगी पदार्थों के समायोजन की समस्या तीव्र होती जा रही है। यहा नगर पालिका का मुख्य काम सार्वजनिक गली से कूडा तुरन्त हटाना होता है। परन्तु कर्मचारियो

की कमी व कुछ लापरवाही के कारण कही–कही कूडा महीनो पड़ा रह जाता है। घर से निकलने वाले त्याज्य पदार्थों को ठीक–ठीक जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी लेकिन एकत्रित कूडो से यह अनुमान लगाया गया जौनपुर नगर के घरो के प्रत्येक निवासी लगभग 400 से 1000 ग्राम अनुपयोगी पदार्थ प्रतिदिन विसर्जित करते है जिससे लगभग 230 टन कूडा प्रतिदिन एकत्रित हो जाता है। इस विशाल मात्रा मे से 50 प्रतिशत कूडा प्रतिदिन नही उठाया जाता। इतनी विशाल मात्रा मे कूडो को हटाने के लिए परिवहन के लिए एव विसर्जित करने के लिए पर्याप्त उपकरण अपेक्षित है।

उत्तरदाताओं से घर के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट के बारे में पूछने पर इन निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा गया। घर में अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट को एकत्रित करके रखने का तरीका क्या है, कूडा विसर्जित करने का स्थान कहा है? (सरकारी कूडा रखने के स्थान पर, अन्य कूडा रखने के स्थान पर या सडक के किनारे अथवा कूडा जलाते है), मुहल्ले मे कूडा बिखरा रहता है या थोडी मात्रा में रहता है या दिखायी नही देता। नगर पालिका द्वारा कूडा उठाये जाने की बारम्बारता क्या है (नियमित कूडा उठाया जाता है अथवा हफ्ते मे दो बार या महीने मे एक बार उठाया जाता है)। उपर्युक्त बातो से सम्बन्धित सभी आंकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण से एकत्रित किये गये।

सम्पूर्ण 1580 चयनित घरों मे जैसा कि सारणी 4.1 मे एवं प्लेट 4.1 मे दर्शाया गया है कि लगभग 40 प्रतिशत घरों के लोग कूडा खुले बर्तन मे ही रखते है। लगभग 53 प्रतिशत लोग कूडे को कूडा रखने के स्थान पर ही रखते है। लगभग 50 प्रतिशत घरों ने उनके मुहल्ले मे व्यापारिक और औद्योगिक अपशिष्ट जमा होने की समस्या बताया है। लगभग 30 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले से नगर पालिका के कर्मचारियों द्वारा कूड़े नहीं उठाये जाते हैं। केवल 23 प्रतिशत घरों ने बताया कि कूडा नगर पालिका कर्मचारियो द्वारा नियमित उठाये जाते है जबकि 38 प्रतिशत घरों ने बताया कि कूडा एकत्रित स्थान से महीने में एक बार उठवाया जाता है।

सारणी 4 1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरों के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट (1999) (प्रतिशत मे)

	घरो के कूडा एव ठोस अपशिष्ट	प्रतिशत
1 घरो मे अनुपयोगी पदार्थों को एकत्रित करके रखने का तरीका	1 खुले बर्तन मे	39 83
	2 बद बर्तन मे	40.63
	3 एकत्रित नही करते	19 53
2 कूड–करकट को विसर्जित करने	1 कूडा रखने के स्थान पर	53 16
	2 सडक के किनारे	43 42
	3 जलाते है	3 42
3 मुहल्ले मे कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति	1 चारो तरफ फैला है	68.70
	2 दिखायी नही देता	31 30
	3 विशाल मात्रा मे है	49 36
	4 थोडी मात्रा मे है	23 12
	5 नगण्य है	27 50
4 मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट	1 है	52.66
	2 नही है	47 34
5 नगरपालिका द्वारा कूडा उठाने की	1 उठाया जाता है	62 00
	2 नही उठाया जाता है	38.00
बारम्बारता	1 नियमित	23 00
	2 हफ्ते मे दो बार	16.50
	3 सप्ताह मे एक बार	22.15

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरों के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट
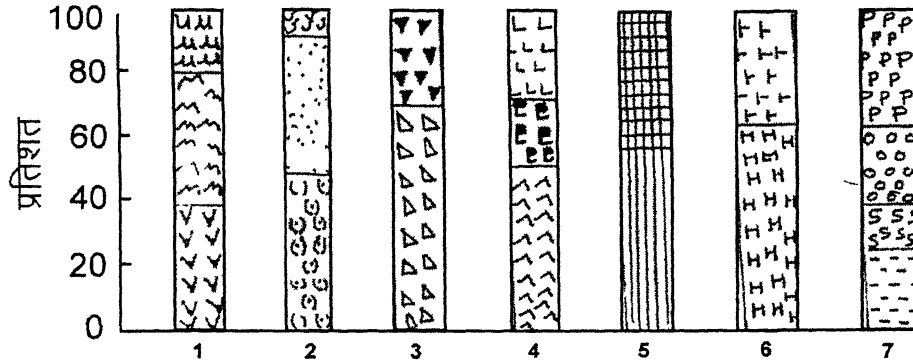
1 घरो मे अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट को रखने का तरीका

- खुले बर्तन म
- बद बर्तन मे
- इकट्ठा नही करते

2 कूडा करकट को विसर्जित करनेका स्थान

- कूडा रखनेके स्थान पर
- सडक के किनार
- जलाते हैं

3 मुहल्ले मे कूडा करकट

- चारो तरफ फैला है
- दिखायी नही देता है

4 कूडा करकट का फैलाव

- विशाल मात्रा मे
- थाडी मात्रा में
- नगण्य

5 मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट

- हे
- नही है

6·7 कूड़ा उठाने की बारम्बारता

- उठाया जाता है
- नहीं उठाया जाता है
- प्रतिदिन
- सप्ताह मे दो बार
- सप्ताह में एक बार
- महीनेमें एक वार

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 4.1

कूड़ा करकट को रखने का तरीका :-

घर के अन्दर रखा कूडा विभिन्न समस्याओ का जनक हो सकता है यदि उसे ठीक प्रकार से ढककर न रखा जाय। सारणी 4 2 और प्लेट 4 2 मे विभिन्न चयनित घरो मे कूडे को रखने का तरीका दिखाया गया है।

सारणी 4 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे ठोस अपशिष्ट एव कूडे को एकत्रित करके रखने का तरीका (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुले बर्तन मे	बद बर्तन मे	इकट्ठा नहीं करते	योग
अत्यधिक कम	77.90	3 46	18.56	100 00
कम	85 51	9.19	5.30	100 00
मध्यम	3.568	35 68	28 64	100 00
उच्च	—	65 75	34 25	100 00
अति उच्च	—	89.10	10.90	100 00
योग	39 83	40.63	19.53	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

यह पाया गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो में कूडा करकट खुले बर्तन मे ही रखते है। खुले बर्तन मे रखा कूडा मक्खी मच्छर को आकर्षित करता है और इसलिए इन घरो के रसोई घर या खाना बनाने की जगह पर अधिक सख्या मे मक्खी मच्छर पाये जाते है। ये लोग घर मे अधिक सख्या मे चूहे पाये जाने की शिकायत करते है। कीटाणु से फैलने वाली बीमारियो की आशका इन घरो मे उन घरो से बहुत अधिक रहती है जो कूडे को ढककर रखते है। लगभग 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर, 65 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे एव 88 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो मे कूडा ढककर ही रखा जाता है, क्योकि ये लोग अच्छी तरह शिक्षित है और खुला कूडा रखने से होने वाली समस्याओ से अच्छी तरह

परिचित है, जबकि 28 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के, 34 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 11 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग कूडा घर मे एकत्रित नही करते है। ये लोग हर रोज का कूडा प्रतिदिन ही पोलिथीन मे रखकर बाहर फेक आते है। इस तरह के जूठन आदि मे जानवर आसपास इकट्ठा हो जाते है। यह आश्चर्य करने वाला तथ्य सामने आया कि 3 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के घर एव 9 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो मे कूडा अच्छी तरह ढककर रखा जाता है क्योकि ये लोग गन्दगी से होने वाली समस्याओ से परिचित है। उच्च आय वर्ग के अधिकाश घरो ने बताया कि कूडा ढककर ही रखा जाता है। इन घरो मे सफाई से रहने की अच्छी समझ होती है।

घरों से कूड़ा विसर्जन का स्थान :-

घरो से निकलने वाले कूडे का उचित स्थान पर विसर्जन आस–पडोस के पर्यावरण को ध्यान मे रखते हुए ही होना चाहिए। घरो के अनुपयोगी पदार्थों का विसर्जन तीन प्रकार से होता देखा गया, किसी कूडा रखने के स्थान पर विसर्जन, सडक के किनारे कही भी विसर्जन, या फिर कूडे को एकत्रित करके जलाया जाता है। सारणी 4 3 और प्लेट 4 2 मे चयनित घरो मे कूडा विसर्जन के स्थान को दर्शाया गया है।

सारणी 4 3 जौनपुर नगर के चयनित घरों के कूडा विसर्जन का स्थान (प्रतिशत में)

आय समूह	कूडा रखने के स्थान पर	सडक के किनारे कहीं भी	जलाते है	योग
अत्यधिक कम	25 47	74 53	—	100 00
कम	27 20	72 80	—	100 00
मध्यम	37.37	52 68	9.95	100 00
उच्च	77.26	15 62	7.12	100 00
अति उच्च	98.51	1.49	—	100 00
योग	53 16	43 42	3 42	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि आमतौर पर कम आय वर्ग के सभी घरो से कूडा सडक पर आता है, लेकिन 77 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 98 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग किसी निर्धारित कूडा रखने के स्थान पर ही कूडा विसर्जित करते है जैसे खेत मे, मकान बनाने के लिए छूटी जमीन मे या मुहल्ले के किसी कोने मे। सरकारी कूडा रखने के स्थान नही होने पर घरो के निवासी कूडे को किसी भी स्थान पर रखना शुरू कर देते है, और कुछ दिनो बाद वही स्थान सभी स्थानो से कूडा एकत्रित होने का स्थान बन जाता है। बहुत कम घरो के लोग, 10 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के एव 7 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घर, कूडे को एकत्र करके जलाते है। घर के आस पास कूडे को जलाना कूडा समाप्त करने का सुरक्षित तरीका नही होता है क्योकि इससे होने वाले धूए से कई घरो का पर्यावरण प्रदूषित होता है।

महानगरो मे महानगरपालिका की ओर से कूडा करकट रखने के लिए सडक के किनारे लोहे के बने या सीमेन्ट अथवा प्लास्टिक के बने बडे पात्र (कन्टेनर) जगह–जगह कुछ दूरी पर रखे रहते है। जिसमे उस क्षेत्र के निवासी कूडा विसर्जित करते है जिससे कूडा सडक पर नहीं फैलता है और जानवर उसे बिखेरते नही है। जौनपुर नगर में इस तरह की कोई व्यवस्था सिटी बोर्ड की तरफ से नही की गयी है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण मे यह पाया गया कि कूडा विसर्जन के लिए सीमेन्ट का बना बरतन कही–कही रखा था जो टूटकरके अपना अस्तित्व करीब–करीब खो चुका है और विकृत रूप मे पडा है। प्रायः यह भी देखने को मिला कि कुछ मुहल्लो से कूडा करकट प्रतिदिन उठाकर स्वच्छकार उसे अधिक दूर न ले जाकर शहर के अन्दर ही किसी एक स्थान पर उस मुहल्ले के समस्त कूडे को एकत्रित करते है जहां से सिटी बोर्ड का वाहन लोडर के साथ लगभग पन्द्रह दिन मे एक बार ही कूड़ा उठाने आता है ऐसी परिस्थिति मे एकत्रित कई दिनो के कूड़े से दुर्गन्ध फैलती है जिससे आसपास रहने वाले सभी आय वर्ग के घर बुरी तरह से प्रभावित होते हैं। ऐसे एकत्रित कूडे के ढेर को पशु और भी फैला देते है एव वर्षाकाल मे इस तरह के स्थल से बहने वाला पानी काफी दूर तक दुर्गन्ध के साथ कीचड के रूप में फैल जाता है। शोधकर्ता ने इस सम्बन्ध में सिटी बोर्ड के अध्यक्ष से कूडा रखने के पाल की व्यवस्था रखने का सुझाव दिया तो उन्होने धन की कमी होने के कारण असमर्थता व्यक्त की।

मुहल्ले में कूड़े की उपस्थिति :–

सारणी 4 4 और प्लेट 4 2 मे कूडा करकट की उपस्थिति और अनुपस्थिति की मात्रा को दर्शाया गया है। मुहल्ले मे यदि कूडा किसी स्थान पर विशाल मात्रा को दर्शाया गया है। मुहल्ले मे यदि कूडा किसी स्थान पर विशाल मात्रा मे पाया जाता है तो किसी स्थान पर थोडी मात्रा मे या नगण्य होता है।

सारणी 4 4 जौनपुर नगर के चयनित घरों के बाहर कूडे की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

	मुहल्ले मे कूड़ा करकट		कूड़ा करकट का फैलाव		
आय समूह	चारो तरफ फैला है	दिखायी नही देता है	विशाल मात्रा में	बडी मात्रा में	नगण्य
अत्यधिक कम	9371	6.29	8553	14.46	—
कम	90 82	9.18	8268	17.32	—
मध्यम	8276	1723	7257	22.57	4.85
उच्च	5397	46.02	6.03	42.47	51.50
अति उच्च	22.27	77.73	—	18.81	81.19
योग	68.70	3130	4936	23 12	2750

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी से पता चलता है कि 93 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 90 प्रतिशत कम आय वर्ग के घर एव 82 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा चारो तरफ बिखरा हुआ देखा जा सकता है क्योकि ये कम आय वर्ग के घरो के लोग कूडे को कही भी जहा चाहते है फेक देते है ये इन बातो पर ध्यान नहीं देते कि कूडे को उचित स्थानो पर जैसे कूडेदान मे ही फेकना चाहिए। जबकि 53 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 22 अति उच्च आय वर्ग के मुहल्लो मे भी कूडा करकट बिखरा हुआ पाया गया। क्योंकि ये लोग पुराने और घने बसे क्षेत्रो मे रहते है जहां जनसख्या का घनत्व बहुत अधिक है इस कारण से

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट 1999

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 42

प्लेट 4.3 मुहल्ला अहमद खाँ मण्डी (उमरपुर) में आवास निर्माण के लिए छोड़ा गया स्थल कूड़ा फेंकने का स्थल बन गया है नगर में ऐसी छूटी भूमि की यही स्थिति है।

प्लेट 4.4 सब्जी मण्डी सब्जी विक्रेताओं द्वारा एकत्रित किया गया विशाल कूड़े का ढेर जिसे सिटी बोर्ड द्वारा नियमित नहीं उठाया जाता है।

भी कूडा बिखरा हुआ देखा जाता है। दूसरी तरफ लगभग 46 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 77 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा फैला हुआ दिखायी नही देता है। कुछ कम आय वर्ग के घरो के पास भी कूडा बिखरा हुआ नही पाया जाता है क्योकि ये लोग उच्च सम्भ्रान्त एव सुसज्जित क्षेत्रो मे रहते है यद्यपि उनमे से कुछ रिक्शा खीचने वाले भी है लेकिन ये कालोनी को सुसज्जित रखने का पूरा प्रयास करते है। ये कम आय वर्ग के लोग धनी घरो के पीछे की तरफ किराये पर रहते है। ये रिक्शा खीचने वाले लोग ऐसे क्षेत्रो मे इसलिए रहते है क्योकि इन घरो से सवारी आसानी से मिल जाती है और इन क्षेत्रो मे इनकी सुरक्षा भी बनी रहती है। ये लोग रात मे धनी घरो की रखवाली, पहरेदारी भी करते है और पर्याप्त आय के लिये दिन मे रिक्शा भी खीचते है। ये लोग खाना बाहर खा लेते है। इसलिए इनके घरो से कूडा अधिक मात्रा मे निकलता ही नही है। ऐसी स्थिति नगर के बाहरी हिस्से मे अधिकाश देखने को मिलती है।

सारणी 4 4 और प्लेट 4 2 मे चयनित घरों के बाहर कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति की मात्रा को दर्शाया गया है या तो यह बिखरा हुआ पाया जाता है या नगण्य मात्रा मे पाया जाता है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 85 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एवं 72 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा सर्वत्र बिखरा हुआ, विशाल मात्रा मे है। इसका कारण यह है कि ये कम आय वर्ग के घर अधिक मात्रा मे कूडा निकालते है और उसे सडक पर या किसी खुले स्थान पर फेक देते है जिससे इनके मुहल्ले मे कूडा करकट हमेशा फैला ही रहता है। सडक के दोनो ओर विशाल मात्रा मे कूडा एकत्रित रहता है। इन कूडे के ढेर में मल भी विसर्जित किये जाने से इनसे तीव्र दुर्गन्ध आती है। नगर पालिका के कर्मचारी यदि हडताल पर चले गये हो या कूडा अधिक दिनो तक पडा रह गया तो वातावरण बहुत प्रभावित होता है और बीमारिया फैलनेकी सम्भावना प्रबल हो जाती है। लेकिन 51 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एवं 81 प्रतिशत अतिउच्च आय वर्ग के घरों के मुहल्लो मे कूडा नगण्य मात्रा में दिखायी पडा क्योकि ये लोग कूडे को सुरक्षित स्थानों पर (कूडा विसर्जित करने के स्थान पर) विसर्जित करते है।

मुहल्ले में औद्योगिक अपशिष्ट :-

सारणी 4 5 और प्लेट 4 5 मे चयनित घरो के बाहर औद्योगिक अपशिष्ट के बिखराव को दर्शाया गया है।

सारणी 4 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर उनके मुहल्लो मे औद्योगिक अपशिष्ट का बिखराव (1999)

आय समूह	है	नही है	योग
अत्यधिक कम	90.88	9.12	100 00
कम	81 62	18 38	100 00
मध्यम	62.62	37.38	100 00
उच्च	22 74	77 26	100 00
अति उच्च	5.44	94.56	100 00
योग	52.66	47 34	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि औद्योगिक अपशिष्ट सभी आय वर्ग के घरो के पास पाया जाता है, लेकिन यह अधिक मात्रा मे कम आय वर्ग के घरो के पास पाया जाता है। जैसे कि 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 81 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो के पास और 62 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के आसपास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट पाया जाता है क्योकि ये घर नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे है और लगभग नगर के लगभग मध्य भाग मे है जहा कई प्रकार के छोटे उद्योग हैं। इन उद्योगो मे तेल बनाने का उद्योग, बीडी उद्योग, प्लास्टिक उद्योग, तम्बाकू बनाने का उद्योग, मछली पालन, पोलीथीन बनाने का उद्योग, जडी बूडी का उद्योग (आयुर्वेद उद्योग) प्रमुख हैं। ये सभी उद्योग विशाल मात्रा मे अपशिष्ट विसर्जित करते है। मछली पालन व कपडे सिलने का काम यहा पर मुसलमान ही करते है।

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट 1999
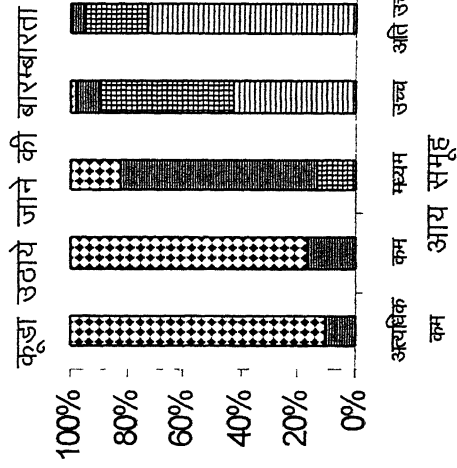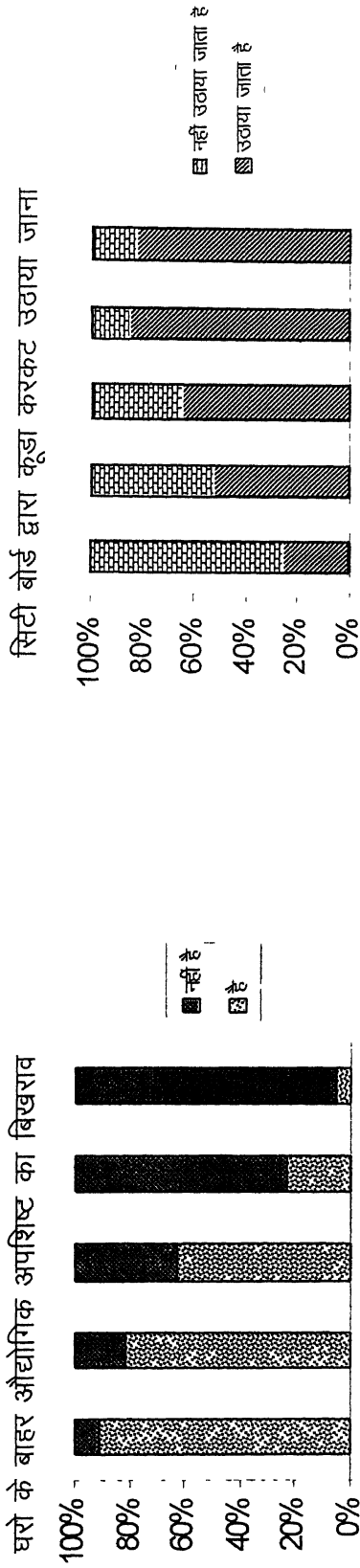
स्रोत — व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 45

इन उद्योगो के कर्मचारी औद्योगिक गन्दगी होने क बावजूद भी आसपास ही निवास करते है। 22 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 5 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोगो ने भी घर के पास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट के जमा होने के बारे मे बताया क्योकि उनके पास स्वय के उद्योग या व्यापार है। ये लोग उद्योग या व्यापार घर के प्रथम तल पर लगाते है और स्वय निवास दूसरे या तीसरे तल पर करते है। लगभग 78 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 94 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके घरो के आसपास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट नही पाया जाता है क्योकि ये लोग इन क्षेत्रो से दूर नगर के बाहरी क्षेत्र मे रहते हैं। ये लोग बाजारी क्षेत्र एव अति व्यस्त क्षेत्रो मे रहना पसद नही करते है।

नगर पालिका द्वारा कूड़ा करकट का उठाया जाना :-

नगर पालिका का यह मुख्य कर्तव्य है कि घरो से कूडे जो सार्वजनिक गलियो मे फेक दिये जाते है उन्हे निरन्तर हटाया जाय। लेकिन नगर पालिका के कर्मचारियो की अनियमितता के कारण कुछ धनी घरो के लोग निजी, व्यक्तिगत मजदूरो से सफाई करवाते रहते है जिससे मुहल्ला साफ सुथरा बना रह सके। लेकिन ये व्यक्तिगत मजदूर भी नियमित नही आते है। सारणी 4 6 और प्लेट 4 5 मे नगर पालिका द्वारा चयनित घरो से कूड उठाने की स्थिति को दर्शाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 74 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 47 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरें एव 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से कूड़ा नगर पालिका द्वारा नही उठाया जाता है। इसके कई कारण है जैसे कर्मचारियो का कम संख्या मे होना उनके पास कोई वाहन का न होना और अपने कर्तव्य के प्रति रूचि का न होना भी है। जबकि 64 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के, 84 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 82 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि कूडा नगर पालिकाके कर्मचारियो द्वारा उठाया जाता है। कूडा कर्मचारियो द्वारा दो चरण मे फेंका जाता है। पहले चरण मे घरो से कूडे उठाये जाते है और सडक पर जहा कूडा एकत्रित होता है वहां फेके जाते है। द्वितीय चरण मे नगर पालिका के कर्मचारी सडक के कूडे के ढेर को खेतो तक ले जाते हैं। इस प्रकार नगर पालिका के कर्मचारी कुछ समय के अन्तराल पर आकर सडक साफ करते है एव नाली साफ करते है।

प्लेट 4.6 मुहल्ला वाजिदपुर निवासी निम्न आय वर्ग के लोगों द्वारा सड़क के किनारे कहीं भी कूड़ा विसर्जन का दृश्य।

प्लेट 4.7 परमानतपुर के पूर्वी भाग में वाई पास सड़क के निकट पानी निकासी के लिए बने नाले में अनाधिकृत रूप से बिना नक्शा पास कराये हो रहे मकान निर्माण का दृश्य।

सारणी 4.6 जौनपुर नगर के चयनित घरों का, बाहर से सिटी बोर्ड द्वारा कूडा करकट उठाये जाने के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	उठाया जाता है	नही उठाया जाता है	योग
अत्यधिक कम	25 79	74 21	100 00
कम	52.30	47.70	100 00
मध्यम	64 56	35 44	100 00
उच्च	84 66	15.34	100 00
अति उच्च	82.67	17.33	100 00
योग	62.00	38.00	100 00

स्रोत—व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

कूडे के ढेर को सिटी बोर्ड के कर्मचारी ठेले पर लादते है और दो भैस इसे खीचते है। कुछ सुसज्जित सम्भ्रान्त मुहल्लों मे व्यक्तिगत कूडा उठाने वाले ढेले या गाडी होती है जिससे नियमित सफाई करवाई जाती है।

कूड़ा करकट उठाये जाने की बारम्बारता :-

सारणी 4.7 और प्लेट 4 5 मे चयनित घरों से कूडा करकट उठाये जाने की बारम्बारता को दिखाया गया है।

सारणी 4 7 जौनपुर नगर के चयनित घरों से कूड़ा करकट उठाये जाने की बारम्बारता (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	प्रतिदिन	सप्ताह में दो बार	सप्ताह मे एक बार	महीने में एक बार	योग
अत्यधिक कम	—	—	10 06	89.94	100 00
कम	—	—	17.31	82.69	100 00
मध्यम	—	12.87	69 41	17.72	100.00
उच्च	42 73	46.84	9.04	1.39	100 00
अति उच्च	72.27	22 77	4 96	—	100 00
योग	23 00	16.50	22.15	38 34	100 00

स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी के अनुसार 89 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से कूडा उठाये जाने की बारम्बारता महीने मे एक बार है या कभी–कभी उससे भी अधिक समय हो जाता है। कर्मचारियो के आने की बारम्बारता कम होने के दो मुख्य कारण है प्रथम कर्मचारियो की सख्या का कम होना, दूसरा कर्मचारियो का कर्तव्य निर्वाह के प्रति रूचि का न होना है। ऐसी स्थिति मुख्य रूप से नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे देखी गयी जहा अधिकतर मुस्लिम लोग रहते है जैसे उर्दू बाजार, ताडतला एव मुफ्ती मुहल्ला आदि मे। ये सभी मुहल्ले मुसलमान बहुल है। सिटी बोर्ड के कर्मचारी जहा सफाई के लिए जाते है वहा के निवासियो से अलग से सफाई के पैसे लेते है जबकि सरकारी आय भी उन्हे मिलती है। कहा जा सकता है कि ये लोग सरकारी तनख्वाह से अधिक निजी तौर पर जाकर सफाई करके रूपये एकत्रित कर लेते है। नियमित कूडा उठाये जाने की बात 42 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 72 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया। मध्यम आय वर्ग के 70 प्रतिशत घरो ने बताया कि कूडा सप्ताह मे एक बार उठाया जाता है। घरो से कूडा यदि सप्ताह से अधिक समय तक उठाया न जाय तो स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारिया फैलने का जोखिम रहता है। घरो के बाहर फेके अधिक दिनो तक इकट्ठा कूडे के ढेर जानवरो जैसे सूअर, गाय, कुत्तों, भैसो को आकर्षित करते है ये जानवर और भी गन्दगी फैलाते है जिससे इन मुहल्लो का पर्यावरण और भी बदतर हो जाता है।

चयनित घरो के कूडा करकट रखने के ढग मे देखा गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर कूडे को घर के अन्दर खुले बर्तन मे रखते है और ये कूडे मुख्य रूप से सडक के किनारे ही फेके जाते है, इनके कारण इन आस–पास के घरो मे रसोई कक्ष एव शयन कक्ष मे मक्खी मच्छरो का प्रकोप अधिक बना रहता है। जबकि दूसरी तरफ 65 प्रतिशत उच्च आय वर्ग घर एवं 89 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घर कूडे को बद बर्तन मे ही रखते है एवं उनका विसर्जन सुरक्षित कूडा रखने के स्थान पर करते है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 82 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 72 प्रतिशत घरो के मुहल्ले मे कूडा सर्वत्र बिखरा हुआ, विशाला मात्रा में पाया गया। इन कम आय वर्ग के घरो के आसपास औद्योगिक

व्यापारिक अपशिष्ट भी पाया गया। बहुत कम ही उच्च आय वर्ग के घरो ने आसपास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट होने की बात बतायी। यह आमतौर पर देखा गया कि कम आय वर्ग के घरो से कूडा उठाये जाने की बारम्बारता महीने मे एक बार है जबकि उच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्ले से कूडा सिटी बोर्ड कर्मचारियो द्वारा निजी कर्मचारियो द्वारा प्रतिदिन उठवा लिया जाता है। उपर्युक्त वर्णन यह दिखाता है कि कम आय वर्ग के घरो के लोग गन्दे मुहल्लो मे रहते हैं।

घरों में मक्खी मच्छर का प्रकोप :-

पर्यावरण को प्रदूषित करने मे मक्खी मच्छर की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है और ये आसानी से बीमारियो को फैलाने के जनक होते है। नगर के लोग अपने स्वास्थ्य को इन मक्खी मच्छरो व कीटाणुओ से बचाने के लिए विभिन्न उपाय अपनाते है क्योकि इस नगर मे मक्खी मच्छर के पनपने की सर्वाधिक उपयुक्त दशाये पायी जाती है जैसे घरो के बाहर खुले कूड़ा करकट खुले नाले, व अवरोधित जाम नालियां, अधिक दिनो से एकत्रित सडक के किनारे के कूडे जिसमे मल भी फेके जाते हैं। घर के बाहर जल जमाव आदि। मच्छरो से फैलने वाली बीमारियों मे मलेरिया से पीडित लोग बहुत आमतौर पर देखे जा सकते है जबकि चूहे, चपड़े, खटमल, मक्खी भी विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या खडी करते है। इन कीटाणुओ मक्खी मच्छरों से बचने के लिए लोगों को विभिन्न उपाय अपनाने चाहिए परन्तु ये उपाय महगे होने के कारण उच्च आय वर्ग ही इन्हें अपनाता है। मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती एव चूहा मारने वाले जहर का उपयोग कम आय वर्ग के लोग भी करते है। कुछ लोग इनसे बचने के लिए शरीर पर विशेष प्रकार का साबुन या क्रीम भी लगाते है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि मच्छर मक्खी विभिन्न प्रकार से पर्यावरण को प्रदूषित करते है नगर में पानी का जमाव मच्छरों को और भी फैलाता है। कुछ समय पहले नगर मे तथा नगर के आसपास डेंगू ज्वर बहुत तीव्रता से फैला हुआ था। यह ज्वर विशेष प्रकार के मच्छरों के काटने से फैलता है। ये मच्छर जहा खुला पानी रखा हो वहा उत्पन्न होते हैं इस प्रकार इस नगर में जगह–जगह पानी एकत्र होने से इन मच्छरो के उत्पन्न होने की उपयुक्त दशायें पायी जाती है। घर के आसपास के नाले तालाब से इन मच्छरो से फैलने वाली बीमारी

का जोखिम बना रहता है। पिछले समय जब यहा डेगू ज्वर फैला था तो एक महीने मे इस नगर मे 60 व्यक्ति मर गये थे। महामारी फैलाने के जनक इन मच्छरो के दुष्प्रभाव से बचने के लिए सभी घरो के लोग भोजन और घर का पर्यावरण उचित बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाते हैं। घरो मे कीटाणुओ के दुष्प्रभाव के बारे मे जानकारी लेते समय निम्न बातो का ध्यान मे रखा गया–घर मे कीडे मकोडे, मक्खी, मच्छर, चूहे, चपडे सभी पाये जाते है अथवा नही पाये जाते है, घर मे उपयुक्त रोशनदान है अथवा नही है, कीडे मकोडे मच्छरो से बचाव के लिए कौन से उपकरण प्रयोग मे लाये जाते है (पम्पकैन, मच्छरदानी, मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती, सरकार की तरफ से दिये जाने वाले कुछ उपाय प्रयुक्त होते है अथवा इनमे से किसी का भी प्रयोग नही होता।) कमरो व रसोई घर मे दवाओ का छिडकाव होता है अथवा नही। इस प्रकार के सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये।

सारणी 4 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर का प्रकोप (1999) (प्रतिशत मे)

	घर मे कीट पतग व मक्खी मच्छर	प्रतिशत
1 घर मे कीट पतग एव मक्खी मच्छर	1 मक्खी केवल	7.52
	2 मच्छर	10.21
	3 चूहे/चुहियॉ	7 15
	4 चपडे	7 03
	5 सभी	35.70
	6 कुछ भी नही	32.39
2 घर मे रोशन दान	1 है	34.34
	2 नही है	65 66
3 इन कीट पतग मक्खी मच्छर से बचनें के उपयोग मे लाये जाने वाले उपाय	1 पम्प कैन	7 18
	2 हाथ से दवाओ का छिडकाव	7.81
	3 मच्छर रोधी अगरबत्ती क़ा प्रयोग	8 54
	4 मच्छरदानी	10 99
	5 अन्य व्यक्तिगत उपाय	5.05
	6 सरकार द्वारा किये गये उपाय	8.78
	7 कुछ भी नही	51 65
4 कमरो एव रसोई मे मशीन से दवाओ छिडकाव	1 होता है	33 25
	2. नही होता है	66 75

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर
सम्पूर्ण चयनित घरों में कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव 1999
100 %
80 %
60 %
40 %
20 %
0 %
1
2
3
4
1 घर मे कीटाणु, मक्खी मच्छर की उपस्थिति
मक्खी
मच्छर
चूहे / चुहियॉ
चपडे
सभी
कुछ भी नही
2 घर मे खिडकी एव रोशनदान
है
नही
3 मक्खी मच्छर कीट आदि से बचार हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण
पम्प कैन
हाथ से दवाओ का छिडकाव
मच्छर रोधी अगरबत्ती
मच्छरदानी
अन्य व्यक्गित उपाय
सरकार द्वारा किये गये उपाय
कुछ भी नही
4 कमरो एव रसोई घर मे मशीन से छिडकाव
छीडकाव होता है
छीडकाव नही होता है
स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
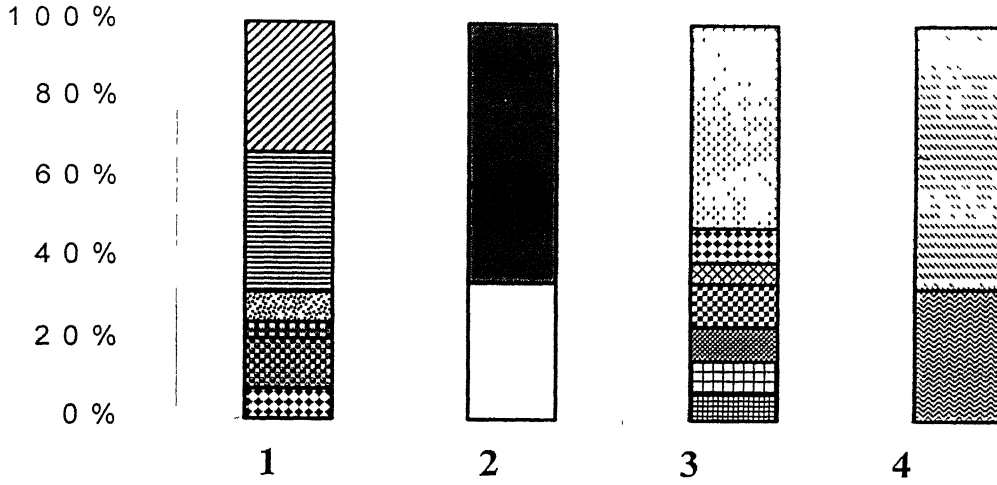
प्लेट– 48

सम्पूर्ण 1580 चयनित घरो मे से अधिकाश घरो मे चूहे मक्खी मच्छर कीडे मकडे चपडे सभी पाये जाते है। सारणी 4 8 ओर प्लेट 4 8 मे दर्शाया गया है कि लगभग 34 प्रतिशत घरो मे मक्खी, मच्छर चूहे चपडे सदैव ही रहते है। लेकिन लगभग 32 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे इनमे से कुछ भी नही पाया जाता है। वैसे पूर्णत ऐसा होना लगभग नामुमकिन है। लगभग 65 प्रतिशत घरो मे किसी प्रकार का रोशनदान नही है। कुल चयनित घरो मे से आधे घरो ने बताया कि मक्खी मच्छरो व कीट से बचने के लिए वे किसी भी प्रकार के उपकरण का प्रयोग नही करते है तथा रसोई घर व कमरो मे दवाओ का छिडकाव नही करते है। जबकि अन्य लोग किसी न किसी प्रकार का व्यक्तिगत उपाय अपनाते है।

चयनित घरों में कीड़े मकोड़े एवं मक्खी मच्छर :-

सभी प्रकार के कीट, मक्खी, मच्छर, चूहे, चुहिया, चपडे सभी घरो मे पाये जाते है लेकिन उच्च आय वर्ग के कुछ घरो ने बताया कि उनके घर मे इनकी मात्रा नगण्य है। सारणी 4 9 और प्लेट 4 9 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे कीडे मकोडे मक्खी मच्छर की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति को दिखाया गया है। यह पाया गया कि 62 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 55 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 50 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे सभी प्रकार के कीडे मकोडे, मक्खी मच्छर बडी सख्या मे पाये जाते है। इसका कारण घर के आसपास का खराब पानी का अपवाह, कूडा खुले रूप मे रखना, तथा जगह–जगह जाम नालिया है जिनमे मच्छर उत्पन्न होते है। और पनपते है। आमतौर पर लोग मच्छरो की कल्पना बरसात के दिनो मे करते है लेकिन इस नगर मे खराब पानी के अपवाह तत्र के कारण व खुली जाम नालियो के कारण मच्छर वर्षभर लगते है और न केवल गरीब परिवार मे अपितु धनी घरो मे भी सभी उपाय के बावजूद मच्छर लगते है। उपयुक्त सफाई की व्यवस्था न होने पर (विशेषकर शौचालय की) मक्खी भी बहुत आम तौर पर देखी जाती है जो रसोई के आसपास घूमती रहती है। मक्खिया मुख्यत धनी घरो मे कम पायी जाती है। मक्खिया विभिन्न प्रकार के रसायन परिवहित करती है और खाने–पीने की चीजो पर बैठकर उन्हे सक्रमित कर देती है ये भोजन करके मनुष्य सीधे पेट सम्बन्धी बीमारियो से पीडित हो जाता है।

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों में कीटाणु व मक्खी एवं रोशनदान 1999
घर मे कीटाणु, मक्खी, मच्छर की उपस्थिति
प्रतिशत
100%
80%
60%
40%
20%
0%
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
कुछ भी नही
सभी
चपडे
चूहे / चुहिया
मच्छर
मक्खी
घर मे खिडकी एव रोशनदान
नही
है
मक्खी मछच्छर आदि से बचाव हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण
कुछ भी नही
सरकार द्वारा किये गये उपाय
अन्य व्यक्तिगत उपाय
मच्छरदानी
मच्छर रोधी अगरबत्ती
हाथ से दवाओ का छिडकाव
पम्प कैन
कमरो एव रसोई घर मे मशीन से छिडकाव
छिडकाव नही होता ह
छिडकाव होता है
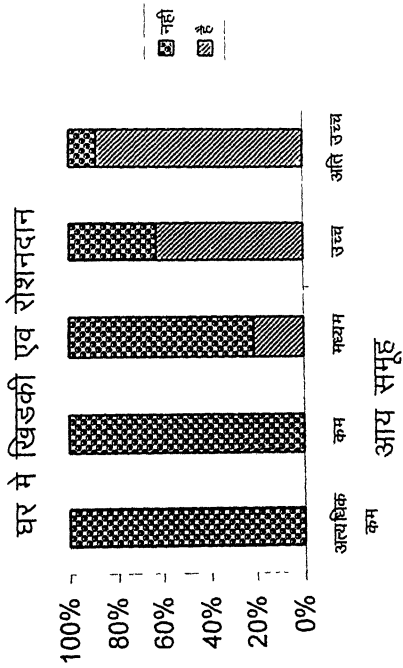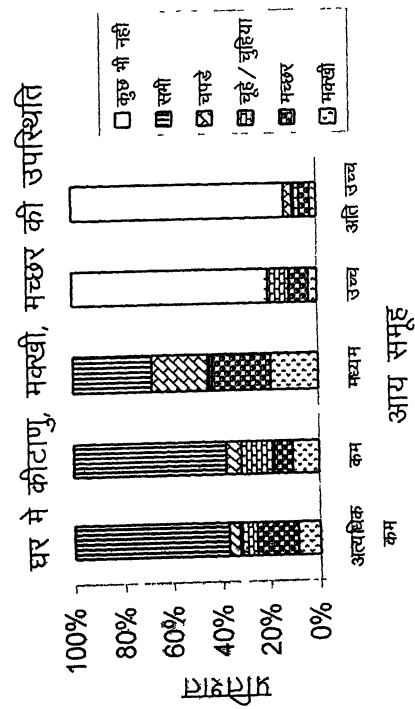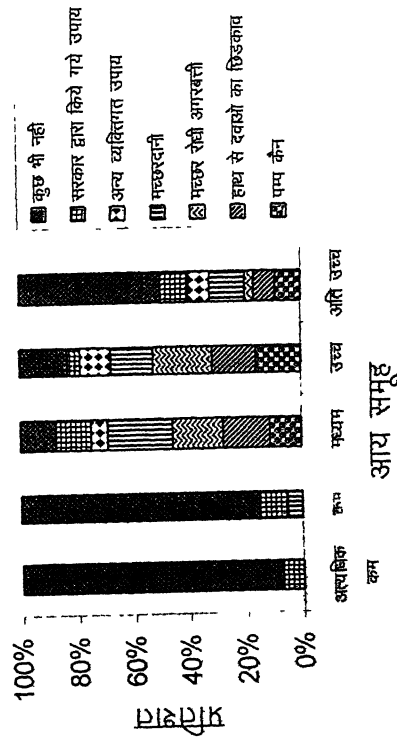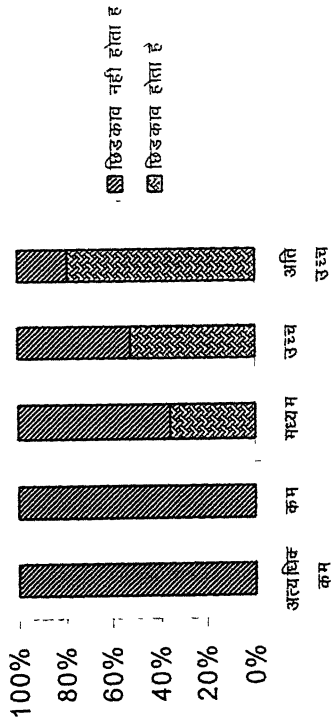
प्लेट 49

कम आय वर्ग एव उच्च आय वर्ग के घरों मे यह मुख्य अन्तर देखा जा सकता है कि कम आय वर्ग के शौचालय एव रसोईघर मे बहुत मक्खिया पायी जाती है। जबकि उच्च आय वर्ग मे सफाई के कारण ये कम पायी जाती है या नही पायी जाती। जौनपुर नगर मे मच्छर अधिक सख्या मे कचहरी सडक पर पाये जाते है क्योकि यहा पर कूडा खुला ढेर मे सडक के किनारे पडा रहता है एव इस क्षेत्र मे जल जमाव भी निरन्तर बना रहता है। सब्जी मण्डी, ओलन्दगज, मछरहट्टा मे भी गन्दगी से मक्खी मच्छर विशाल मात्रा मे पाये जाते है। लेकिन नगर के पुराने बसे आवास जो अपेक्षाकृत ऊची भूमि पर बने है वहा जल जमाव की समस्या नही होती है अत वहा पर मच्छर बहुत कम पाये जाते है परन्तु मक्खिया वहां पर भी आम है।

सारणी 4 9 जौनपुर नगर के चयनित घरों का मक्खी, मच्छर के प्रकोप की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	मक्खी	मच्छर	चूहे/चुहिया	चपडें	सभी	कुछ भी नही	योग
अत्यधिक कम	8 80	16.98	6 60	5.03	62 59	—	100 00
कम	9 89	6.71	12.36	5 65	65.38	—	100 00
मध्यम	12.62	15 53	5.83	15.53	50.49	—	100 00
उच्च	3.83	7.39	7.95	5 48	—	75.35	100 00
अति उच्च	2 48	4 45	2 98	3.46	--	86 63	100.00
योग	7 52	10.21	7 15	7 03	35.70	32.39	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर मे मलेरिया फैलाने वाले एनाफिलीज मच्छर बडी सख्या में पाये जाते है। ये स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न समस्याओ को उपस्थित करते है। मलेरिया खराब पानी के अपवाह के कारण घर के आसपास जल जमाव मे पनपे मच्छर के कारण होता है। घरो मे भी पानी यदि खुला रखा जाता है तो पीत ज्वर, डेगू आदि का कारण बनता है। चुहिया/चूहे, चपडे, झीगुर अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे अधिक संख्या में

पाये जाते है। ये लोग अधिकतर झुग्गी झोपडी मे रहते है। इन कीडे मकोडो के कारण कम आय वर्ग के अधिकतर सदस्य किसी न किसी बीमारी से ग्रसित रहते है। चूहे चुहिया 6 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, व 12 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो मे बडी सख्या मे पाया जाना बताया गया। नगर के वातावरण मे चूहे अच्छी प्रकार से समायोजन कर लेते है और कम अधिक मात्रा मे सभी घरो मे पाये जाते है। परन्तु इस नगर मे चूहे पुराने बसे आवास तथा बाहरी छोरो पर अधिक सख्या मे पाये जाते है। ये चूहे अधिक मात्रा मे अनाज खा जाते है, दीवारो मे छिद्र बना देते है भोजन सक्रमित कर देते है। और लम्बे समय तक घर मे बने रहने के कारण भयकर बीमारी फैलाते है चूहे खतरनाक बीमारी प्लेग के जनक होते है। कुछ साल पहले गुजरात के सूरत शहर मे प्लेग महामारी के रूप मे फैला था तो एक ही दिन मे लगभग 500 लोग काल कवलित हो गये थे। चपडे व झींगुर भी विभिन्न प्रकार के रसायन परिवहित करते है इनसे भी विभिन्न प्रकार के रोगों को बढावा मिलता है। खाना बनाने वाले स्थान मे चपडे घूमते रहते है और खाद्य सामग्री के सम्पर्क मे आने से रोग के कीटाणु आसानी से जनजीवन को प्रभावित करते रहते है। इस प्रकार मनुष्य चपडो के कारण भी पेचिश, डायरिया, अतिसार आदि भयानक रोगो से ग्रसित हो जाते है। चपडो का पाया जाना मध्यम आय वर्ग के घरो मे अधिक बताया गया (15 42 प्रतिशत)। चपडे व झीगुर ध्वनि प्रदूषण भी करते है और दुर्गन्ध भी फैलाते है।

रोशनदान एवं खिड़की का प्रयोग :-

रोशनदान और खिडकिया मच्छरो मक्खियों के प्रकोप से बचाने में सहायक होते है। सारणी 4 10 और प्लेट 4 9 मे जौनपुर नगर के चयनित घरो मे रोशनदान एव खिडकी की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे कोई भी रोशनदान एव खिडकी नही पायी जाती है। इसका कारण इनकी खराब आर्थिक स्थिति है इनके पास एक ही कमरे का घर होता है। और कुछ घरो मे दरवाजा भी नही लगा हुआ है इसलिए इनके घर मे रोशनदान और खिडकी होने का सवाल ही नही होता है। मध्यम आय वर्ग के 79 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 37

प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 11 प्रतिशत घरो मे भी रोशनदान एव खिडकी नही पाये गये क्योंकि इनके घर बहुत पुराने बने हुए है और नक्शे से नही बने है इनमें ऐसी भी व्यवस्था नही होती कि रोशनदान, खिडकी बनायी जा सके। जबकि दूसरी तरफ 20 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के, 62 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 88 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घर बहुत अच्छी तरह से बने हुए है व नये हैं जिनमे पर्याप्त रोशनदान व खिडकिया बनी हुयी है।

सारणी 4 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो का उपयुक्त रोशनदान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	है	नही है	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100 00
मध्यम	20 87	79 13	100 00
उच्च	62 74	37 26	100 00
अति उच्च	88.12	11.88	100 00
योग	34 34	65 66	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

ये घर ठीक प्रकार से पूर्व नियोजन करके बनाये गये लगते हैं अतः इनमे दरवाजे खिडकी, रोशनदार सर्वाधिक उचित तरीके से बने हुए होते है।

मक्खी, मच्छर, कीड़े-मकोड़े से बचाव के लिए अपनाये गये उपाय :-

चयनित घरो के उत्तरदाता मक्खी मच्छर कीडे–मकोडे से होने वाली समस्याओ पर अधिक ध्यान नही देते। सरकार की तरफ से भी इस नगर मे पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पर्याप्त उपाय नही किये जाते है। विशेषकर मच्छरो से बचने के लिए सभी घरो मे कुछ न कुछ उपाय किये जाते है। सम्पन्न घरो मे व कम आय वर्ग के घरो मे इनसे बचने के लिए अपनाये गये उपाय भिन्न होते है।
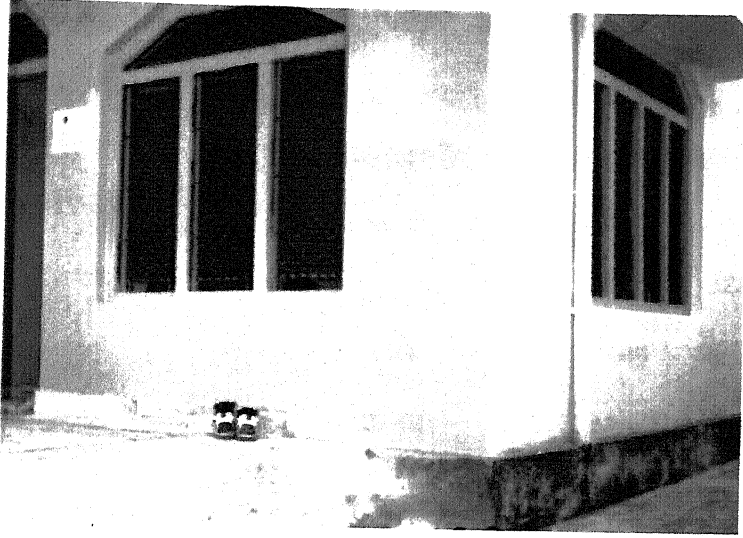
प्लेट 4.10 मुहल्ला वाजिदपुर में उच्च आय वर्ग का हवादार आवास।
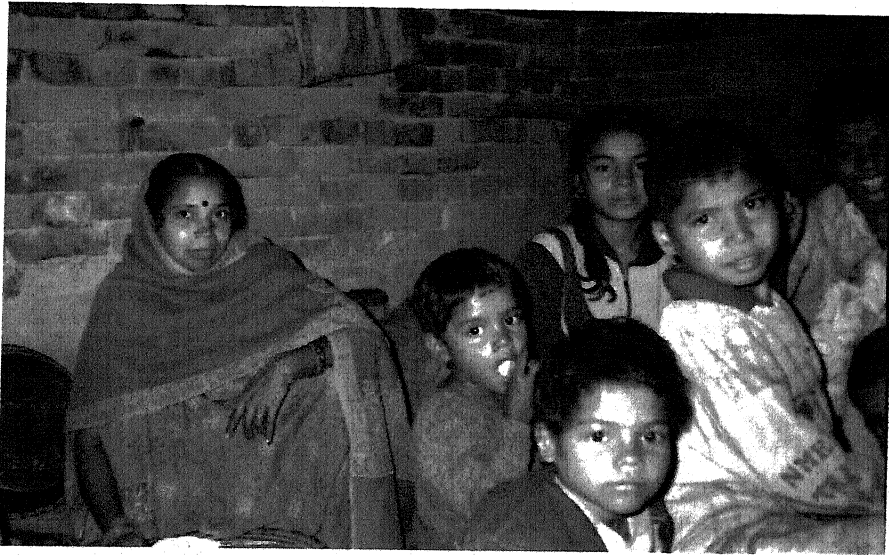
प्लेट 4.11 मुहल्ला परमानतपुर में कम आय वर्ग का एक कमरे का मकान जिसमें कोई खिड़की व रोशनदान नहीं है।

सारणी 4.11 जौनपुर नगर के चयनित घरों मे मक्खी, मच्छर, कीट आदि के बचाव हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	पम्प कैन	हाथ से दवाओ का छिडकाव	मच्छर रोधी अगरबत्ती	मच्छरदानी	अन्य उपाय	सरकारी प्रयास	कुछ भी नही
अत्यधिक कम	—	—	—	—	—	7.55	92 45
कम	—	—	—	4 94	—	9 89	85.16
मध्यम	11 40	1577	18 44	22 82	6.32	12.87	12 38
उच्च	15 62	15 89	20.83	14 79	11 50	4.10	17 27
अति उच्च	8 92	7.42	3.46	1238	7 43	9.40	5099
योग	7.18	7 81	8 54	10 99	5.05	8.78	51 65

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4 11 और प्लेट 4 9 मे चयनित घरो के अन्दर मक्खी मच्छर से बचाव के लिए अपनाये गये उपाय को दिखाया गया है। इन उपायो मे पम्पकैन दवाओ का छिडकाव, मच्छर अवरोधी अगरबत्ती का प्रयोग, मच्छरदानी व अन्य व्यक्तिगत उपाय व कुछ सरकारी प्रयास भी है। अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे इनसे बचाव के लिए सर्वथा कोई भी उपाय नही अपनाये जाते केवल कम आय वर्ग के कुछ घरो के मच्छरदानी के प्रयोग को छोडकर जिसे रात मे बाध कर सोना उनकी मजबूरी होती है क्योकि मच्छर बहुत अधिक सख्या मे पाये जाते है। मक्खी मच्छर से बचने के लिए सरकारी प्रयास सभी आय वर्ग के घरो तक पहुचाने का प्रयास होता है। इनकी तरफ से आमतौर पर डी डी टी का छिडकाव होता है। डी डी टी का छिडकाव बहुत प्रभावशाली होता है क्योकि इससे मक्खी मच्छर तुरन्त मर जाते है व कुछ समय तक पुन नही पनपने पाते है। पम्पकैन और एरोसोल का प्रयोग उच्च आय वर्ग के घरों मे अधिक होता है। पम्पकैन मे प्रयुक्त होने वाले रसायन महगे होते हैं। एरोसोल का प्रयोग भी खर्चीला होता है, अत. उच्च आय वर्ग में ही इसका उपयोग किया जाता है। इनमें

प्रयुक्त रसायनो से घर मे वायु प्रदूषण भी थोडी बहुत मात्रा मे होता ही है लेकिन एरोसोल के प्रयोग से कोई महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव लोगो के स्वास्थ्य पर नही पाया जात है जबकि लम्बे समय तक पम्पकैन का प्रयोग किये जाने से उससे सम्बन्धित समस्याये पायी जा सकती है।

सर्वाधिक आमतौर पर मच्छरो से बचने के लिए मच्छरदानी का प्रयोग लोगो द्वारा किया जाता है। मध्यम आय वर्ग के 22 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 14 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 12 प्रतिशत घरो ने बताया कि वे मच्छश्रदानी का प्रयोग अवश्य करते है। बाजार मे मच्छरदानी के बढे हुए अधिक मूल्य के कारण निम्न आय वर्ग के लोग इसे नहीं खरीदते है। मच्छर अवरोधी अगरबत्ती और टिकिया का प्रयोग भी उच्च आय वर्ग के घरो मे बहुतायत से होता है। इस प्रकार की अगरबत्ती एव टिकिया निश्चित रूप से वायु प्रदूषण को बढाते है एव इससे स्वास सम्बन्धी कठिनाई भी होती देखी गयी है परन्तु लोग इस पर ध्यान नही देते है और इसका प्रयोग बहुत आमतौर पर होता है। उत्तरदाताओ ने इनसे होने वाली किसी प्रकार की कठिनाई के बारे मे नही बताया। परन्तु डाक्टरो का कहना है कि इनके प्रयोग लम्बे समय तक होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण कठिनाइया उपस्थित हो सकती है। अन्य व्यक्तिगत उपाय भी मक्खी मच्छर से बचने के लिए अपनाये जाते है जैसे प्राइवेट सस्थाओ को पैसे देकर दवाओ का छिडकाव करवाना जिससे कृमि हत्या तुरन्त हो जाती है व कुछ समय तक मच्छर नही पनपते है। उच्च आय वर्ग के भी कुछ घर (17 प्रतिशत) एव अति उच्च आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो मे भी मच्छर से बचने के लिए किसी प्रकार के उपकरण नही प्रयोग मे लाये जाते क्योकि इनके घर मे खिडकिया रोशनदान पर्याप्त मात्रा मे पाये जाते है और ये अपेक्षाकृत स्वच्छ मुहल्ले मे रहते है। जहा मक्खी मच्छर कम मात्रा मे पाये जाते है। उच्च आय वर्ग के कुछ लोग घर मे फिनायल रखते है और मक्खी भगाने के लिए फिनायल से धुलाई जगह विशेष की कर देते है। फिनायल कुछ ही मात्रा मे, पानी मे मिलाकर प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार हम देख सकते है कि उच्च आय वर्ग के घरो मे मक्खी, मच्छर भगाने के लिए किसी न किसी प्रकार के उपाय अवश्य अपनाये जाते है।

रसोईघर एवं कमरों में दवाओं का छिड़काव :-

सारणी 4.12 एवं प्लेट 4.9 में चयनित घरो के कमरों एवं रसोई घर मे

मशीन से दवाओ के छिडकाव को दिखाया गया है। यह देखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के व कम आय वर्ग के घरो मे इस प्रकार का कोई छिडकाव नहीं होता है। इसके दो कारण है पहला, कृमि हत्या करने वाले ये स्प्रे महगे होते है दूसरा ये लोग मक्खी मच्छर से होने वाली समस्याओ से अनभिज्ञ रहते है। लगभग 64 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे, 47 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे व 21 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो की रसोई व कमरे मे भी दवाओ को स्प्रे नही किया जाता, इसका मुख्य कारण उनका कम शिक्षित होना हो सकता है। जौनपुर नगर मे बेगान स्प्रे का प्रयोग बहुत होता है। 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग 53 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोग एव 79 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरों की रसोईघर व कमरो मे फिनायल से धुलाई होती है या अन्य कृमि हत्या करने वाले स्प्रे का प्रयोग होता है ये उपकरण घर के पर्यावरण को प्रदूषण भी करते है।

सारणी 4.12 जौनपुर नगर के चयनित घरो के कमरों मे रसोई में मशीन से छिडकाव (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	छिडकाव होता है	छिड़काव नही होता है	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100 00
मध्यम	35 44	64 56	100.00
उच्च	52 60	47 4	100 00
अति उच्च	78.21	21.79	100 00
योग	33 25	66 75	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न आय वर्ग के सभी घरो ने बताया कि घर में मक्खी मच्छर कीडे मकोडे कम/अधिक मात्रा मे पाये ही जाते है। ये अधिक से अधिक संख्या में कम आय वर्ग के घरो मे पाये जाते है क्योकि इन घरो मे रोशनदान खिडकियां अनुपस्थित रहते है और ये लोग कीटाणुओ से बचने के लिए कोई उपाय भी नही करते हैं। नगर पालिका

की तरफ से डी.डी.टी का छिडकाव अवश्य होता रहता है। किसी प्रकार के स्प्रे या फिनायल का प्रयोग महगा होने के कारण कम आय वर्ग के घर इसे नही प्रयोग करते है।

भोजन का रख रखाव एवं प्रदूषण :-

लगभग सभी चीजे जो हम लोग खाते है प्रदूषित होती है। क्योकि किसान भी अनाज उगाने मे विभिन्न प्रकार के रसायन का छिडकाव करते है। भोजन के प्रदूषित हो जाने की सम्भावना तब भी अधिक होती है जब इसे साफ वातावरण मे न पकाया जाय। ठीक तरह से रखा न जाय या बाजार से खरीदकर सीधे खाने मे प्रयुक्त होने वाली चीजें हो, इससे भी भोज्य प्रदूषित रहता है। दूसरी तरफ गन्दी जगह मे उगी सब्जियो के प्रयोग से भी भोजन प्रदूषित हो जाता है। बाजार मे बिकने वाली त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (फास्ट फूड) स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालते है। गन्दी जगह मे उगने वाली सब्जिया यदि कच्ची खायी जाती है तो हानिकारक होती है। कई घरो मे इस बात की अनभिज्ञता रहती है कि सब्जी को पकाने से पूर्व उसे अच्छी तरह से धोना (कई बार) आवश्यक होता है। घरो मे आमतौर पर लोग पानी के स्वच्छ होने न होने पर चिन्तित होते है परन्तु सभी चीजें जो हम खाते है प्रदूषित हो सकती है जैसे रोटी, चावल, दाल, सब्जी, मीट, फल एव यहा तक कि दूध भी जो बच्चो को भी नुकसान कर सकता है। हाल ही मे शोध से यह बात सामने आयी है कि भारतीय जिस प्रकार का भोजन करते है वह लम्बे समय के बाद उनके स्वास्थ्य पर खराब असर के रूप मे सामने आता है जिसमे लोग हृदय रोग, मस्तिष्क ज्वर, आत सम्बन्धी बीमारी लीवर का फेल होना एव कैसर हो जाने की सम्भावना व्यक्त करते है। बच्चे जो गाय भैस का दूध पीते है वह भी शुद्ध हैं इसका निश्चय नहीं किया जा सकता क्योंकि जानवर गन्दी जगहों पर घूमते हैं और पोलीथीन कागज आदि खराब चीजे भी खाते है जिससे उनका दूध शुद्ध नही रह जाता। बच्चे बाजार मे बिकने वाले पाउडर वाले दूध को ग्रहण करते है, वह भी उनके लिये ठीक नही रहता। इस प्रकार प्रदूषित भोजन करके हम लोग हल्के जहर का सेवन करते जाते है जिसका असर बाद में पड़ता है। भोजन पकाने के बाद उनका ठीक तरह से रख–रखाव एव उंचित समय पर ग्रहण करना भी आवश्यक होता है। इस अध्याय मे यह बताया गया है कि चयनित घरो मे भोजन पकने

के कितने समय बाद इसे ग्रहण किया जाता है। पके हुए भोजन को रखने का ढग क्या है। भोजन पकाने के लिए सशोधित तेल का प्रयोग होता है या असशोधित तेल का। त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों (Fast Food) का कितना प्रयोग होता है। इस प्रकार के सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित किये गये।

सारणी 4 13 सम्पूर्ण चयनित घर मे भोजन का रख–रखाव एव प्रदूषण की स्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

		प्रतिशत
1 भोजन करने का समय	1 पकने के तुरन्त बाद	66.49
	2 1–2 घटे बाद	24 67
	3 तीन घटे बाद	8 84
2 भोजन रखने का तरीका	1 खुले स्थान मे	43 44
	2 खाना रखने वाली जाली मे	24.21
	3 फ्रिज मे	32 35
3 भोजन पकाने मे प्रयुक्त तेल	1 सशोधित तेल मे	49.80
	2 असशोधित तेल मे	50 20
4 त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की खरीददारी	1 गली की दुकान से	37.24
	2 बाजार से	17 95
	3 नही खरीदते है	44 80

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4 13 एव चित्र 4 12 मे जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे भोजन के रख–रखाव की स्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षित सभी घरो में भोजन प्रतिदिन बनाया जाना बताया गया। अधिकतर घरो मे प्रतिदिन दो या तीन बार भोजन बनता है परन्तु कम आय वर्ग के अधिकतर घरो मे एक ही समय भोजन बनता है। एक ही समय भोजन पकने

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो में भोजन का रखरखाव

1999
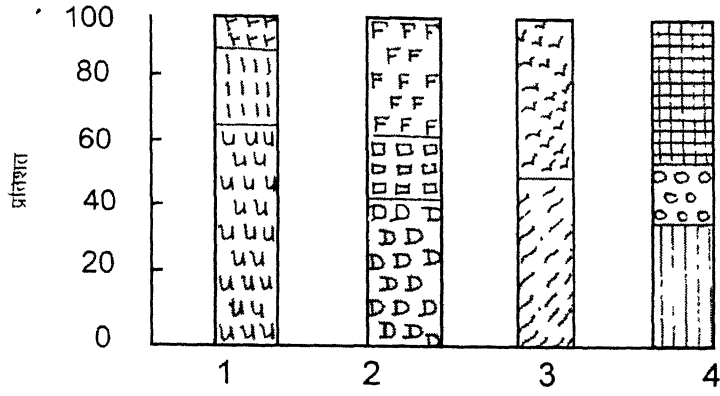
1. भोजन करनें का समय — पकने के तुरन्त बाद; एक या दो घंटे बाद; तीन घंटे बाद

2. भोजन रखने का स्थान — खुले स्थान में; खाना रखने वाली जाली में; फ्रिज में

3 भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल — शोधित तेल में; असंशोधित तेल में

4 तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थो की खरीद (Fast Food) — गली की दुकान से

बाजार से

नही खरीदते है।

स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

से बाजार से त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों का प्रयोग बढ जाता है। 66 प्रतिशत घरो ने बताया कि वे लोग खाना पकने के तुरन्त बाद इसे ग्रहण करते है। 43 प्रतिशत लोग खाना बनाने के बाद इसे खुले ये रख देते है जबकि 32 प्रतिशत लोग इसे फ्रिज मे रखते है। लगभग 50 प्रतिशत घरो मे खाना बनाने के लिए असशोधित तेल का प्रयोग होता है। 55 प्रतिशत लोग त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (Fast Food) भी खाते है जो पास की गली की दुकान मे बिकता है और खराब गुणवत्ता वाला व सक्रमित होता है। कुछ लोग घर मे ही पके हुए भोजन को पकने के तीन घटे बाद खाते है जिससे इसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।

भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने का समय :-

सारणी 4 14 एव प्लेट 4 14 मे चयनित घरो मे भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने के समय को दिखाया गया है। भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने का समय भोजन की गुणवत्ता को लेकर बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योकि बनाकर रखे गये भोजन यदि अधिक समय तक ग्रहण नही किये गये तो ये अपनी गुणवत्ता समाप्त कर लेते है और गर्मी के दिनो मे तो बीमारी फैलने के कारण भी बन जाते है।

सारणी 4.14 जौनपुर नगर के घरों के सदस्यो का भोजन पकने के बाद भोजन करने का समय (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	भोजन पकने के बाद तुरन्त	एक या दो घटे बाद	तीन घटे बाद	योग
अत्यधिक कम	72.95	13.53	13.52	100 00
कम	71.02	19 78	9 20	100 00
मध्यम	38 83	45 88	15 29	100 00
उच्च	68.49	28 77	2.74	100.00
अति उच्च	81.18	15.35	3.47	100 00
योग	66.49	24 67	8.84	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया है कि सभी आय वर्ग के अधिकतर घरो मे भोजन पकने के बाद तुरन्त ग्रहण किया जाता है क्योकि भोजन पकने के तुरन्त बाद खाया जाय तो बहुत स्वादिष्ट होता है। लेकिन 13 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 9 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो ने बताया कि वे खाना बनने के तीन घटे बाद खाना खाते है इस प्रकार वे भोजन की बहुत कम गुणवत्ता प्राप्त कर पाते है। क्योकि यदि भोजन बनाके घटो तक इसे रख दिया जाय तो इसमे कीट बैक्टीरिया उत्पन्न होने लगते है जो भोजन को खराब करने लगते है। उच्च आय वर्ग के भी 2 प्रतिशत और अति उच्च आय वर्ग के 3 प्रतिशत घरो ने बताया कि वे भोजन पकने के तीन घटे बाद उसे ग्रहण करते है लेकिन उसकी गुणवत्ता उतनी खराब नही होती क्योकि ये भोजन को थोडा ठण्डा होते ही रेफ्रिजरेटर मे रख देते है जो खाने की गुणवत्ता को बनाये रखता है।

भोजन रखने का तरीका :-

सारणी 4 15 एव प्लेट 4 13 मे चयनित घरो मे भोजन रखने के विभिन्न प्रकार के तरीके को दिखाया गया है। इसमे कच्ची सब्जिया, कच्चे मीट,पके हुए भोज्य पदार्थ एव अन्य खाने के सामान सम्मिलित है। मुख्य रूप से भोजन रखने के तीन प्रकार के तरीके अपनाये जाते है। या तो इन्हे पकाने के बाद जहा पकाते है वही ढककर रख देते है या भोजन रखने वाली जाली मे इसे पकाने के बाद रखते है अथवा कुछ लोग रेफ्रिजरेटर मे रखते है।

सारणी 4 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो के भोजन को रखने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	खुले स्थान मे	खाना रखने की जाली मे	रेफ्रिजरेटर मे	योग
अत्यधिक कम	95.91	4 09	—	100 00
कम	76 67	23.33	—	100 00
मध्यम	38 83	40 78	20 39	100 00
उच्च	5.76	47 94	46.30	100 00
अति उच्च	—	495	95.05	100 00
योग	43 44	24 21	32.35	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वे मे पता चला भोजन रखने का सर्वाधिक प्रचलित तरीका यह है कि उसे भोजन रखने वाली जाली मे रखा जाता है जबकि अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे भोजन खुले स्थान मे ही ढककर के रख देते है क्योकि वे आर्थिक रूप से इस स्थिति मे नही होते कि रेफ्रिजरेटर या खाना रखने वाली जाली ही खरीद सके। कई प्रकार कीटाणु जो खुली नाली, एकत्रित पानी मे पनपते है और मिट्टी मे रहते है भोजन को प्रदूषित करने के लिए शीघ्र आ जाते है यदि इन्हे खुले स्थान मे घटो रख दिया जाता है। इन घरो मे मीट, दूध से बनी चीजे, अडे, मछली एव कच्ची सब्जिया शीघ्र खराब हो जाते है। मध्यम आय वर्ग के 20 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के 46 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 95 प्रतिशत घरो मे उपर्युक्त चीजे रेफ्रिजरेटर मे रखी जाती है जिससे अधिक समय तक खाने की गुणवत्ता बनी रहती है।इस नगर मे रेफ्रिजरेटर रखना उच्च जीवन स्तर के रहन सहन का प्रतीक है। बडी सख्या मे मध्यम आय वर्ग के (40 प्रतिशत) और 47 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे रेफ्रिजरेटर के अभाव मे भोजन, खाना रखने वाली जाली मे रखा जाता है।

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त माध्यम :-

भोजन पकाने के लिए कौन सा तेल प्रयुक्त होता है यह बात भी भोजन की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। भोजन की गुणवत्ता कई घण्टो तक बनी रह सकती है यदि उसे अच्छे किस्म के तेल मे ही पकाया जाय। यहा पर दो प्रकार के तेल– असशोधित या सशोधित तेल का प्रयोग भोजन बनाने मे किया जाता है। बहुत सी बडी कम्पनिया सशोधित तेल को बाजार मे बद (सील) पैकेट या डिब्बे मे भेजती है। जबकि असशोधित तेल स्थानीय छोटी–मोटी मिल से आता है और बाजार मे खुला बिकता है जो सशोधित तेल से काफी सस्ता होता है।

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों में भोजन का रख रखाव 1999

भोजन करने का समय

100% 80% 60% 40% 20% 0%

अत्यधिक कम | कम | मध्यम | उच्च | अति उच्च

आय समूह

तीन घटे बाद
एक या दो घटे बाद
भोजन पकने के बाद तुरन्त

भोजन रखने का स्थान

100% 80% 60% 40% 20% 0%

अत्यधिक कम | कम | मध्यम | उच्च | अति उच्च

आय समूह

रेफ्रिजरेटर मे
खाना रखने की जाली मे
खुले स्थान मे

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल

100% 80% 60% 40% 20% 0%

अत्यधिक कम | कम | मध्यम | उच्च | अति उच्च

आय समूह

असशोधित तेल का प्रयोग
सशोधित तेल का प्रयोग

तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थो की खरीदारी

100% 80% 60% 40% 20% 0%

अत्यधिक कम | कम | मध्यम | उच्च | अति उच्च

आय समूह

खरीदते
बाजार से
गली की दुकान स
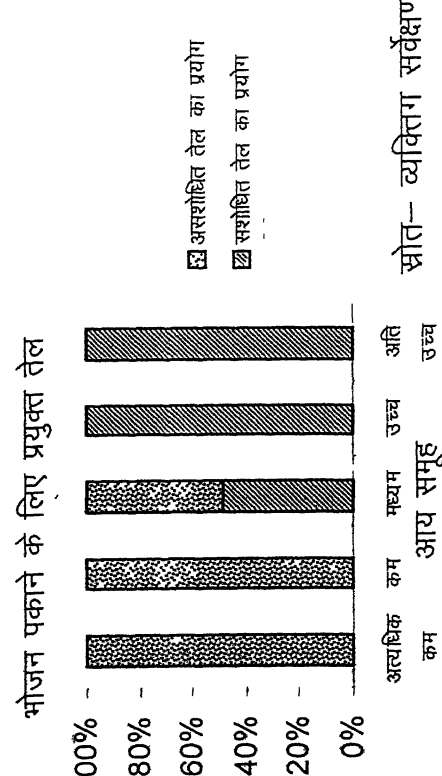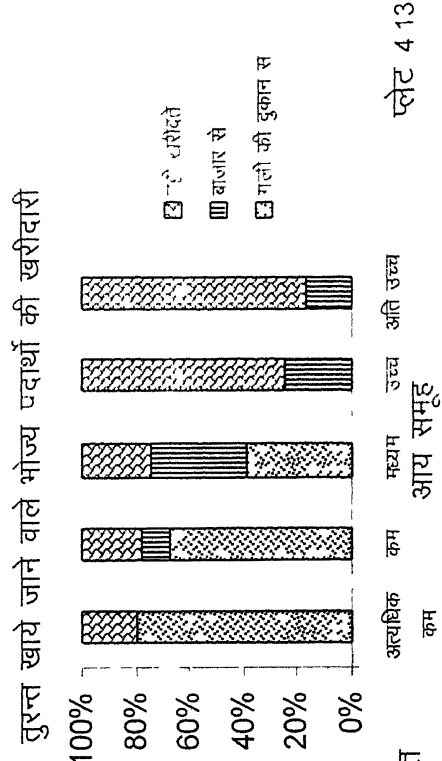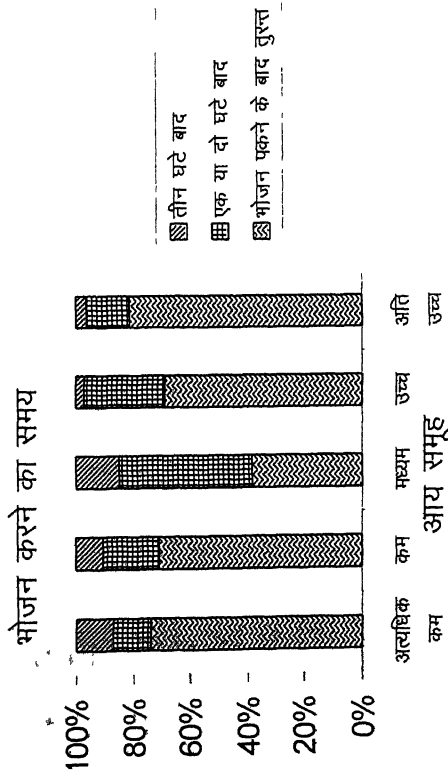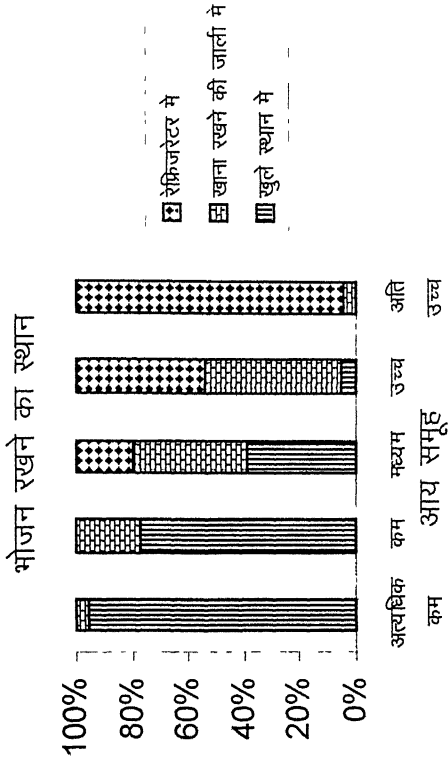
स्रोत– व्यक्तिग सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 4 13

सारणी 4 16 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत में)

आय समूह	सशोधित तेल का प्रयोग	असशोधित तेल का प्रयोग	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100.00
मध्यम	49.02	50.98	100.00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100.00
योग	49 80	50 20	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4.16 और प्लेट 4.13 मे चयनित घरो मे प्रयुक्त तेल का विवरण दिया गया है। सभी अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो में खाना पकाने के लिए असशोधित तेल का ही प्रयोग होता है क्योंकि असंशोधित तेल बाजार में सस्ता मिलता है और आसानी से उपलब्ध हो जाता है। ये तेल बाजार मे खुले बर्तन मे मिलता है। कम आय वर्ग के लोग प्रतिदिन इसे अपनी आवश्यकतानुसार भोजन पकाने के लिए पोलीथीन में या अपने घर से बर्तन ले जाकर खरीदते है। इस कच्चे असंशोधित तेल मे बना भोजन अस्वादिष्ट भी होता है एव कम आय वर्ग के घरो मे बने इस प्रकार के भोजन की गुणवत्ता भी कम होती है। इन घरों के अधिकतर सदस्य अक्सर पेचिश से परेशान रहते हैं और कुछ लोगों ने अन्य पेट सम्बन्धी समस्याओं के बारे में भी बताया, जबकि दूसरी तरफ कोई भी उच्च आय वर्ग का घर असंशोधित तेल का प्रयोग नही करता है क्योंकि ये लोग महंगे संशोधित तेल को खरीदने की स्थिति मे रहते हैं और ये पर्याप्त शिक्षित होते हैं और जानते हैं कि असंशोधित तेल के प्रयोग से कुछ समय बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाई उपस्थित हो सकती है। संशोधित तेल कोलेस्ट्राल को नियन्त्रित करता है और उन लोगो के लिये सर्वाधिक उपयुक्त भोजन पकाने का माध्यम होता है जो किसी न किसी प्रकार के हृदय रोग से पीड़ित हैं।

त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की खरीदारी :-

सारणी 4 17 और प्लेट 4 13 मे चयनित घरो मे तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की खरीदारी को दिखाया गया है (Fast Food) घरो के लोग Fast Food को लगभग दो स्रोतो से खरीदते है। घर के पास की गली की दुकान से या समीप के बाजार से सवेक्षण से पता चला कि 80 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 67 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 38 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे Fast Food समीप में स्थित गली की दुकान जो छोटी सी होती है, से खरीदते है। इन घरो में Fast Food अधिक खरीदे जाते है क्योकि सामान्यत घर में भोजन कम बनता है (एक ही समय)। सुबह ये लोग घर मे बना हुआ भोजन करते है उसके बाद भूख लगने पर घर के समीप की गली की दुकान से कुछ खरीद कर खाते है। ये गली के दुकान के विक्रेता भोज्य पदार्थों को बहुत ही असुरक्षित रूप से बनाते हैं। बनाने के स्थान पर मक्खिया घूमती देखी जा सकती हैं। तैयार खाद्य पदार्थ को पुराने गन्दे अखबार मे बांधकर ग्राहकों को देते है या जिस प्लेट मे एक ग्राहक को देते हैं उसे पानी से धुलकर दूसरे ग्राहक को भी उसी प्लेट मे प्रस्तुत करते हैं। कुछ Fast Food दुकान पर खुले हुए ही रखे होते है। जिससे उन पर धूल और मक्खिया बैठा करती हैं। ये मक्खिया उन लोगो में कालरा के सक्रमण को फैलाती है जो इन पदार्थों को अक्सर खाते हैं। इस प्रकार के खाद्य पूर्णत असुरक्षित वातावरण में बनते है। दुकान से खरीद कर भी इसे शाम को खाने के लिए रख देते है क्योकि इनके पास पैसे कम होते है और उसी में दोनों समय का भोजन निपटाना होता है। खाना बनाने के लिए लकडी की व्यवस्था करना एवं अन्य भोजन सामग्री जुटाना और भी खर्चीला पड़ता है। इसलिए इन घरो में Fast Food अधिकता से खरीदे जाते हैं। कुछ उच्च आय वर्ग के (24 प्रतिशत) एवं अति उच्च आय वर्ग के 19 प्रतिशत घरों में भी Fast Food खरीदे जाते हैं परन्तु बाजार जाकर अच्छी दुकान से खरीदते हैं। ये दुकान बेहतर गुणवत्ता वाली चीजें रखते है जो पैकेट में बद रहती है और सामान्यतः रेफ्रिजरेटर मे रखी हजोती है।। इसी मे केक की दुकान एवं जलपान गृह को भी सम्मिलत किया जाता है। लेकिन 75 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 80 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरों ने बताया कि वे Fast Food नहीं खरीदते है। इसलिए ये लोग प्रदूषित खाद्य से होने वाले जोखिम को नहीं उठाते है।

प्लेट 4.14 निम्न आय वर्ग के लोग ठेले पर बिकने वाले त्वरित उपभोग में आने वाले खाद्य पदार्थ का सेवन करते हुए प्रायः देखे जा सकते हैं। (मुहल्ला मखदूमशाह अढ़हन)

प्लेट 4.15 नगर में ठेले पर बिकने वाला गन्ने का रस जिस पर मक्खियां बैठी रहती है लोग उसे नजरअन्दाज करके भी सामान्यतया प्रयोग करते हैं।

सारणी 4.17 जौनपुर नगर के चयनित घरो का तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों को खरीदने की दृष्टि से वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	गली की दुकान से	बाजार से	नही खरीदते	योग
अत्यधिक कम	79.87	—	20.13	100 00
कम	67.5	10 60	21 90	100 00
मध्यम	38.84	35 19	25.97	100 00
उच्च	—	24.65	75.35	100 00
अति उच्च	—	19 31	80.69	100 00
योग	37 24	17 95	44 8	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यद्यपि खाद्य समस्याये तब भी उपस्थित हो जाती हैं जब पानी अशुद्ध हो, ईंधन सही न हो, कच्ची सब्जिया व खाद्य पदार्थ सही न हो। इन कम आय वर्ग के घरो के सदस्य गली मे बिकने वाले गन्ने के रस का अधिक प्रयोग करते है। सडक के किनारे बिकने वाले गन्ने का रस लोगो मे विभिन्न प्रकार की बीमारी को फैलाता है क्योकि गन्ने का रस एक ग्राहक को जिस गिलास मे प्रस्तुत किया गया थोडी देर बाद पानी से धुलकर दूसरे ग्राहक को भी प्रस्तुत कर दिया जाता है। दुकान के आसपास ढेरो मक्खिया मडराती रहती है।। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कम आय वर्ग के लोग इस प्रकार के खाद्य पदार्थों के सेवन से अक्सर बीमार रहते है। गली, दुकान के Fast Food विक्रेता आयोडीन रहित नमक का उपयोग सस्ता होने के कारण करते है ऐसे भोजन के सेवन से गला घोटू बीमारी होने की आशका रहती है।

विभिन्न आय वर्ग मे भोजन करने का समय अधिकतर घरो मे तभी होता है ज्यो ही इसे पकाया जाता है। लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग मे 75 प्रतिशत कम आय वर्ग एव 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग घर में भोजन पकाने के बाद उसे घटो, खुले स्थान पर ढककर रख देते और उसके बाद समय मिलने पर उसे ग्रहण करते है। इनके पास पके हुए भोजन को ठीक प्रकार से रखने की जाली या रेफ्रिजरेटर नहीं है। जिससे भोजन की

गुणवत्ता आशिक खराब हो जाती है। कम आय वर्ग के सभी लोग असशोधित तेल का ही प्रयोग करते है क्योकि यह सस्ता होता है। कम आय वर्ग के घरो के बच्चे Fast Food का सेवन अधिक करते है जिससे वे हल्के जहर का सेवन करते रहते है, जबकि उच्च आय वर्ग के घरो मे Fast Food खरीदकर नही आता है।

अध्याय - पाँच

जौनपुर नगर में घरों के भीतर वायु-प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण की स्थिति
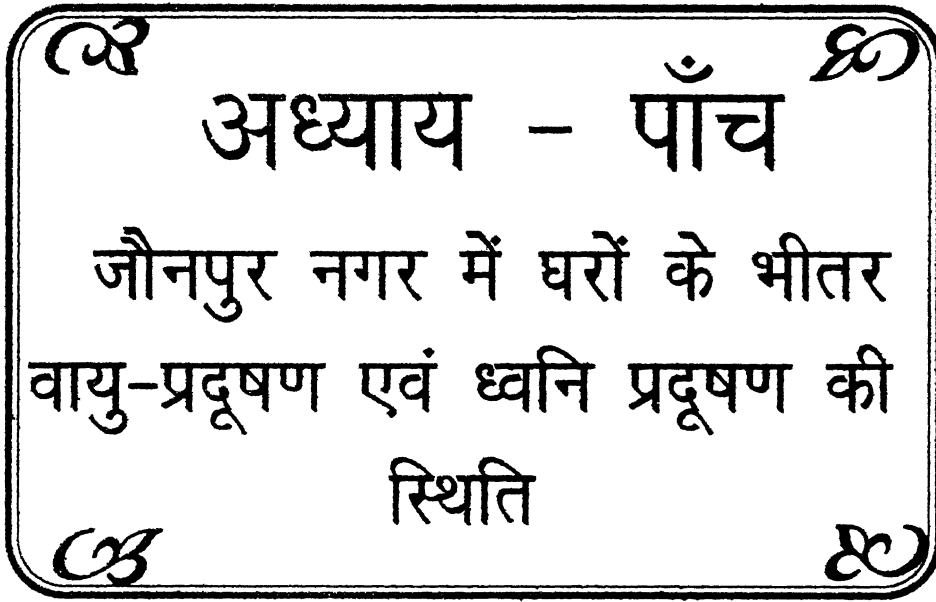
यह अध्याय पिछले अध्याय से सम्बद्ध है और उसका अगला भाग है। पिछले अध्याय मे घरो के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट का विवरण, घरो मे कीडे मकोडे मक्खी, मच्छर के प्रकोप का विवरण, भोजन के रख–रखाव का विवरण दिया गया। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि कुल 1580 चयनित घरो मे से लगभग 40 प्रतिशत घरो मे त्याज्य ठोस अपशिष्ट कूडा खुले बर्तन मे रखा जाता है दूसरे 40 प्रतिशत घरों मे कूडा बद बर्तनो मे ही रखा जाता है। बद बर्तनो का प्रयोग उच्च आय वर्ग के घरो मे होता है। लगभग 43 प्रतिशत घरो से कूडा सडक के किनारे फेका जाता है। 29 प्रतिशत घरो से कूडा, कूडा रखने के स्थान पर ही फेंका जाता है। 68 प्रतिशत घरो के लोगो ने बताया कि घर के आसपास कूडा बिखरा रहता है। इनमे विशाल मात्रा मे औद्योगिक, व्यापारिक अपशिष्ट भी सम्मिलित है। यहा पर नगर पालिका द्वारा कूडा करकट उठाये जाने की व्यवस्था नियमित नही है। 22 प्रतिशत घरों के मुहल्ले से कूडा सप्ताह मे एक बार उठाया जाता है। 23 प्रतिशत घरो के मुहल्ले से पता चला है कि कूडा प्रतिदिन उठाया जाता है। ये साफ सुथरे उच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्ले है। चयनित कुल 1580 घरो मे से अधिकाश घरो में कम अधिक मात्रा मे मक्खी मच्छर कीडे–मकोडे पाये ही जाते है। 33 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे चूहे चपडे, झीगुर, मक्खी, मच्छर एव कई प्रकार के कीडे मकोडे आदि सभी बीमारी फैलाने वाले कारण विद्यमान हैं। जबकि 32 प्रतिशत घरो ने बताया कि इनके घर मे उपर्युक्त कोई भी बीमारी फैलाने वाले कारण नही पाये जाते। केवल 34 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे उपयुक्त रोशनदान एव खिडकी विद्यमान है। मक्खी मच्छर कीट आदि से बचने के लिए अधिकाश घरो मे मच्छरदानी का प्रयोग होता है। कुल चयनित घरो मे लगभग आधे घरो की रसोईघर व कमरो मे कीटाणुओ से बचने के लिए किसी प्रकार की दवाई का छिडकाव नही होता है। कुल चयनित घरो मे से 66 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे भोजन, भोजन पकने के तुरन्त बाद किया जाता है यद्यपि नगर मे अधिकाश घरो मे रेफ्रिजरेटर पाया जाता है और इसे प्रतिष्ठा परिचायक समझा जाता है। सम्पूर्ण चयनित घरो मे से लगभग आधे घरो मे भोजन पकाने के लिए असशोधित तेल का प्रयोग होता है। धन की कमी के कारण, भोजन पकाने की चीजो की कमी के कारण व ईंधन की कमी के कारण कम आय वर्ग के घरो मे Fast Food (तुरन्त खाये जाने वाले खाद्य पदार्थ) अधिक

खरीदे जाते है।

इस अध्याय मे घर मे होने वाले वायु प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण का वर्णन किया गया है यह अध्याय दो भागो मे विभाजित है। प्रथम भाग मे इस नगर के घरो मे होने वाले वायु प्रदूषण का वर्णन किया गया है एव द्वितीय भाग मे इस नगर के घरो मे होने वाले ध्वनि प्रदूषण का वर्णन किया गया है।

घर के अन्दर होने वाला वायु प्रदूषण :-

पर्यावरण शास्त्रियो का ध्यान मुख्य रूप से वायुमण्डल के प्रदूषण पर रहता है परन्तु वर्तमान में कुछ पर्यावरण विदो का ध्यान घर के अन्दर होने वाले वायु प्रदूषण पर गया है जो मनुष्य के जीवन को सीधे प्रतिदिन प्रभावित करता है क्योकि मनुष्य 24 घण्टो मे से 16 घण्टे से अधिक समय घर मे व्यतीत करता है। प्रदूषक जो घर के बाहर के वातावरण को प्रदूषित करते है वही घर के अन्दर के वातावरण को भी प्रदूषित करते है। कुछ उदाहरणो मे ये प्रदूषण घर के बाहरी स्रोतो से ही अन्दर आते है। इस विषय मे हुए आधुनिक अध्ययन बताते है कि घर के अन्दर होने वाले वायु प्रदूषण बाहर के वायु प्रदूषण के सीमा स्तर को बताते है। नाइट्रोजन डाईऑक्साइड का सचयन घर के अन्दर बाहर के वायुमण्डल से अधिक होता है। घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले प्रदूषण उच्च प्रभावी सीमा स्तर तक पहुच जाते है, क्योकि यह थोडी ही जगह पर अधिक देर तक सकेद्रित रह जाते है जैसे कमरो मे या हाल मे जहा से वायु शीघ्र निकल नही पाती। तीन मुख्य तथ्य प्रमुख है जो घर के अन्दर के प्रदूषण के सीमा स्तर को बताते है– प्रदूषण का स्रोत कितना तीव्र है धुआ या अन्य वायु प्रदूषण घर से बाहर निकलने मे कितना समय लेता है तृतीय कोई विशेष प्रदूषक किसी विशेष बीमारी को कितनी तीव्रता से फैलाता है। वर्तमान अध्ययन घर के अन्दर होने वाले वायु प्रदूषण से होने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ पर केन्द्रित है। घर मे उत्पन्न होने वाला प्रदूषण खाना बनाने से, धुलाई करने से किसी चीज को जलाने, गर्म करने से एवं धूम्रपान करने से होता है। वर्तमान मे किये गये आधुनिक शोधो से पता चलता है कि घर के अन्दर होने वाला प्रदूषण बाहर के प्रदूषण से अधिक खतरनाक होता है। लगभग दस प्रदूषक ऐसे हैं जो मुख्यत घर के वातावरण को प्रदूषित

करते है। ये बाहर बहुत कम पाये जाते है। बच्चे घर के बूढे सदस्य, गर्भवती महिलाये जो पूरे समय घर मे ही रहती है घर के वातावरण से अधिक प्रभावित होते है। घर मे होने वाला प्रदूषण कई कारणो पर निर्भर रहता है। इन कारणो मे छोटे–छोटे धातु के कण एव धूल मिट्टी के कण भी होते है जो स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव छोडते है। बच्चे विशेष रूप से अधिक प्रभावित होते है। छोटे से घर मे अधिक सदस्यो के रहने से (अत्यधिक भीड से) भी प्रदूषण सम्बन्धी बीमारी फैलती है व अत्यधिक आद्रता से घर के सदस्य बीमार पडते है।

इस अध्याय मे घर के अन्दर होने वाले निर्जीव वायु प्रदूषण पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। सर्वाधिक मुख्य प्रदूषक किसी चीज का जलना है एवं सल्फर डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड, फारमेलडिहाइड, एवेस्टोस, जिंक एव अन्य प्लास्टिक के कण वायु प्रदूषण के कारण है जो घर एवं बाहर सभी जगह समान रूप से प्रभावी हैं। घर के अन्दर का वायु प्रदूषण स्तर मुख्य रूप से भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन, घर के वातायन, एवं धूम्रपान के स्तर पर निर्भर रहता है।

जौनपुर नगर के चयनित घरो के वायु प्रदूषण के बारे मे जानकारी लेने हेतु जिन विषयो पर ध्यान केन्द्रित किया गया वे हैं भोजन पकाने का स्थान कहा है? रसोई घर है, बरामदे मे बनता है या उसी कमरे मे बनता है जिसमे वे रहते है। भोजन पकाने के लिए कौन सा ईंधन प्रयुक्त होता है (लकडी/कोयला/गोबर के कडे से /सूखी पत्तियों से/ केरोसीन तेल से/ बिजली से या गैर (एलपीजी) से), घर मे सिगरेट, बीड़ी का कितना प्रयोग होता है (24 घण्टे मे प्रयुक्त होने वाली सिगरेट बीडी की संख्या)। बाहर के स्रोतों से घर मे धूंआ आता है अथवा नही, यदि आता है तो वह माध्यम क्या है (वाहनो से, उद्योगो से अथवा पडोस से)। घर में धूआ देर तक बना रहता है या उपुयक्त वातायन से शीघ्र निकल जाता है। उपर्युक्त स्रोतो के अतिरिक्त बहुत से घरो में मच्छरो को भगाने के लिए मच्छर अवरोधी अगरबत्ती/टिकिया का प्रयोग होता है। इसी प्रकार के प्रदूषको का वर्णन पिछले अध्याय में किया गया है।

सारणी 5 1 एव प्लेट 5 1 मे इस नगर के सम्पूर्ण चयनित 1580 घरो के अन्दर के वायु प्रदूषण की स्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 55 प्रतिशत घरों में भोजन अलग रसोई घर में बनता है जबकि बाकी घरो मे भोजन बरामदे

मे या उसी कमरे मे बनता है जिसमे वे रहते है। 44 प्रतिशत घरो मे भोजन पकाने के लिए गैस का प्रयोग होता है जबकि 37 प्रतिशत घरो मे भोजन पकाने के लिए लकडी, कोयला, सूखी पत्तिया, गोबर के कडे का प्रयोग होता है। घर मे किसी न किसी सदस्य का धूम्रपान करना आम बात है। 55 प्रतिशत से अधिक घरो मे धूम्रपान होता है। 27 प्रतिशत घरो मे 24 घण्टे मे 11 से 15 सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। लगभग 56 प्रतिशत घरो ने बताया कि घर मे धूआ बाहर से (वाहनोसे, पडोस से, उद्योगो से) अधिक आता है। 50 प्रतिशत से अधिक घरो मे उपर्युक्त वातायन (रोशनदान, खिडकी) न होने से घर में उत्पन्न होने वाला धूआ अधिक समय तक घर मे ही बना रहता है शीघ्र बाहर नही निकल पाता।

सारणी 5.1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरों के अन्दर वायु प्रदूषण की स्थिति (प्रतिशत मे)

	घर मे वायु प्रदूषण	प्रतिशत
1 भोजन पकाने का स्थान	1 रसोई घर मे	55.47
	2 बरामदे मे या अन्य किसी कमरे मे	44 53
2 भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन	1 लकडी, कोयला, गोबर के कडे, सुखी पत्तियो से	37.80
	2 केरोसीन तेल या बिजली द्वारा	17 63
	3 गैस द्वारा	44 57
3 घर मे ध्रुमपान	1 होता है	55 52
	2 नही होता है	44 48
4 24 घटे मे प्रयुक्त होने वाली सिगरेट/बीडी की संख्या	1 5 से कम	30 68
	2 6 से 10	32 45
	3 11 से 15	27 67
	4 15 से अधिक	9.20
5 बाहर से घर मे धूये का प्रवेश	1 होता है	55-50
	2 नही होता है	44.50
6. बाहर से घर मे धूआ आने का स्रोत	1 पडोस से	22 72
	2 वाहनो से	29 08
	3 अन्य सभी कारणो से	48 20
7 घर से धूआ बाहर निकलने की स्थिति	1 खिडकी दरवाजे से बाहर निकल जाता है	54 06
	2 घर मे ही बना रहता है	

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति

1999
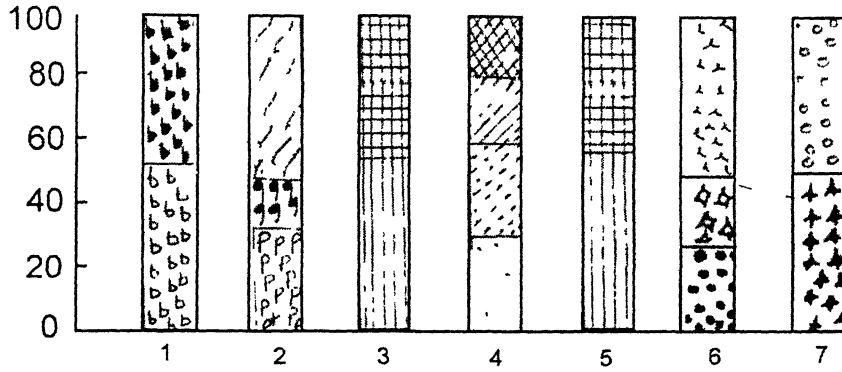
1 भोजन वनानेका स्थान — अलग रसोईघर म; बारामदग अन्य किसी कमरे म या खुले मे

2. भोजन बनाने केलिए प्रयुक्त ईंधन — कोयला, लकडी सूखी पत्तियॉं, गोबर के कन्ड; मिट्टी का तेल/बिजली; गेस

3 घर मेधुम्रपान — होता है; नहीहोता है

4 एक दिन मे एक व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त सिगरेट/बीडी की सख्या — <5; 6-10; 11-15; >15

5 बाहर से घर मे धूये का प्रवेश — होता है; नहीहोता है

6 बाहर से धूऑ आनेका स्रोत — पडोस से; वाहनों रा; सभी कारणोसे

7 धूआ बाहर निकलने की स्थिति — खिडकी दरवाजे से शीघ्र; घर मे ही बना रहता है

स्रात व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 51

भोजन पकाने का स्थान :-

यह देखा गया है कि खाना बनाने के स्थान का लोगों के स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। सारणी 5.2 एव प्लेट 5 2 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे खाना पकाने के स्थान का वर्णन किया गया है। सर्वेक्षण मे यह देखा गया कि जो अत्यधिक कम आय वर्ग के घर है उनमे किसी भी घर मे रसोई घर नही है क्योंकि ये लोग एक कमरे के घर मे ही रहते है और सभी गतिविधिया उसी एक कमरे मे ही सम्पादित करते है। कम आय वर्ग के भी 5 प्रतिशत घरो में ही रसोई का कमरा है वह भी कभी–कभी रहने के लिये ही प्रयुक्त होता है। बाकी 94 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो का भोजन बरामदे में या रहने वाले कमरे मे बनता है। मध्यम आय वर्ग के 71 प्रतिशत घरो मे, उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे अलग से रसोई का कमरा है। उपर्युक्त विवरण खाना बनाने का स्थान एवं घरों की सम्पन्नता में सम्बन्ध को दिखाता है। कम आय वर्ग के घरों में खराब आर्थिक स्थिति के कारण अलग से रसोई का कमरा नही होता अत भोजन उसी कमरे में बनता है जिसमे शयन होता है और स्नान होता है लेकिन झुग्गी झोपडी मे रहने वाले लोग भोजन खुले स्थान मे (घर के बाहर) बनाते है। कम आय वर्ग मे महिलाये बहुत छोटी उम्र से ही भोजन बनाना शुरू कर देती है इसलिए अपने जीवन के अधिक समय तक ये प्रदूषको के अधिक सम्पर्क मे रहती है। भारतीय स्त्रियों की औसत जीवन प्रत्याशा 55 वर्ष है, जो पिछले 40 वर्ष से धूए में भोजन पकाने के कारण कम है। जबकि अमेरिका जापान में महिलाओ के सामने ऐसी स्थिति नही रहती है अत. यहां महिलायें औसत पुरूषो की आयु से सात–आठ वर्ष अधिक ही जीवित रहती है। भारत मे स्त्रियों की औसत आयु पुरूषों से कम होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि वे प्रदूषको के प्रभाव मे अधिक रहती है।

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों में वायु प्रदूषण की स्थिति
1999
भोजन बनानें का स्थान
प्रतिशत
100
80
60
40
20
0
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
आय समूह
उच्च
अति उच्च
अलग रसोईघर में
बारामदे में/अन्य कि
कमरें में या खुले में
भोजन बनानें के लिए प्रयुक्त ईंधन
कोयला, लकड़ी, सूखी पत्तियाँ, गोबर के कंडे मे
मिट्टी का तेल/बिजली म
गैस
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
घर में धुम्रपान
होता है
नहीं होता है
एक दिन में व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त सिगरेट/बीड़ी की संख्या
< 5
6-10
11-15
> 15
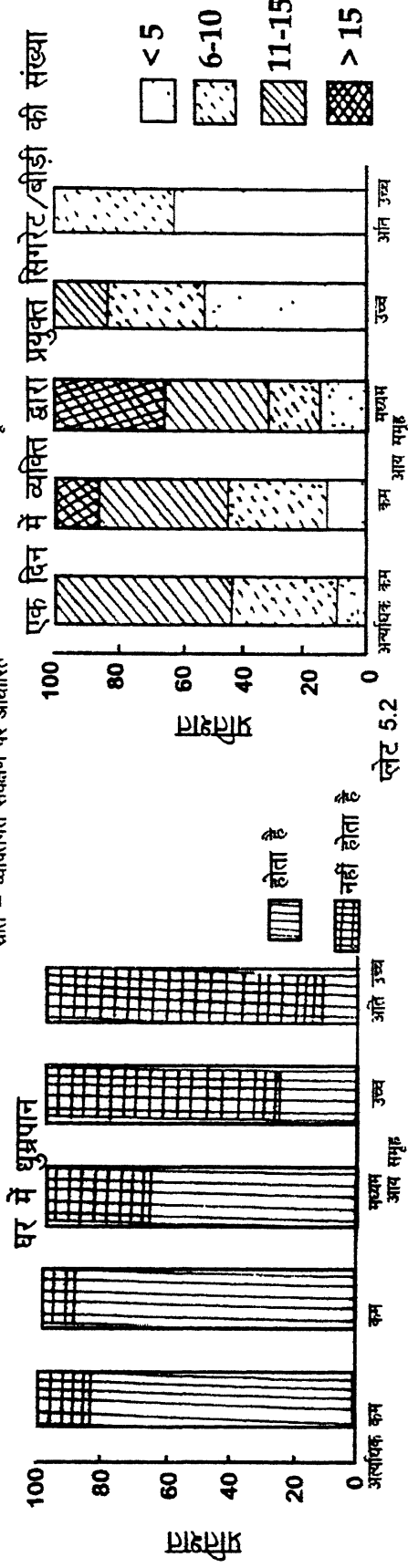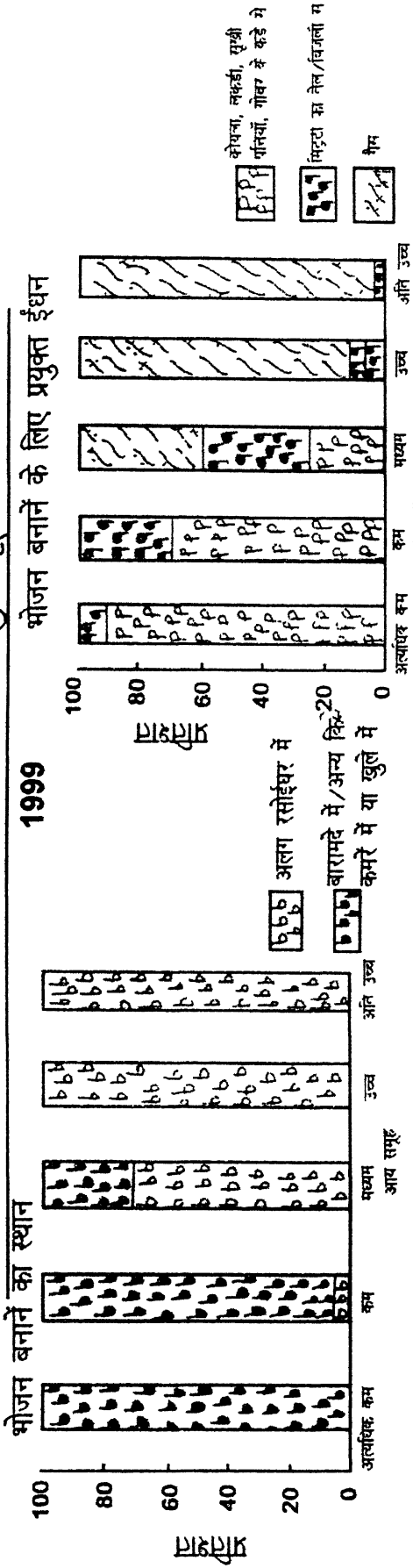
प्लेट 5.2
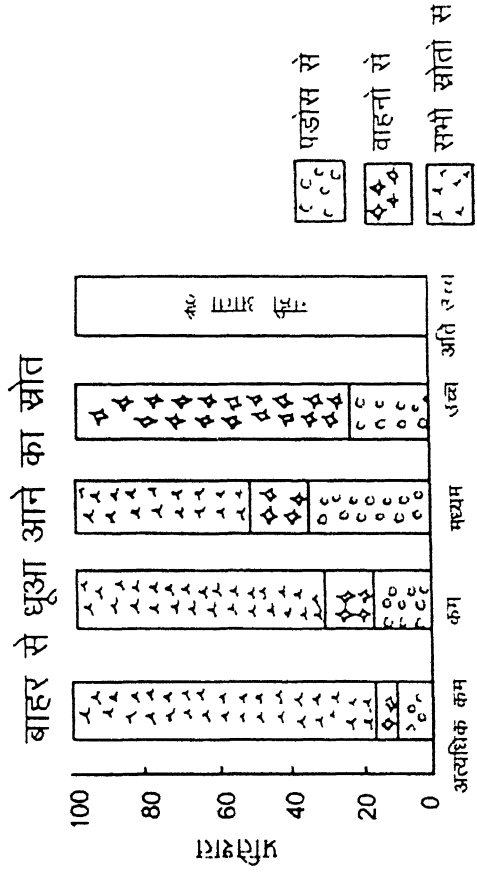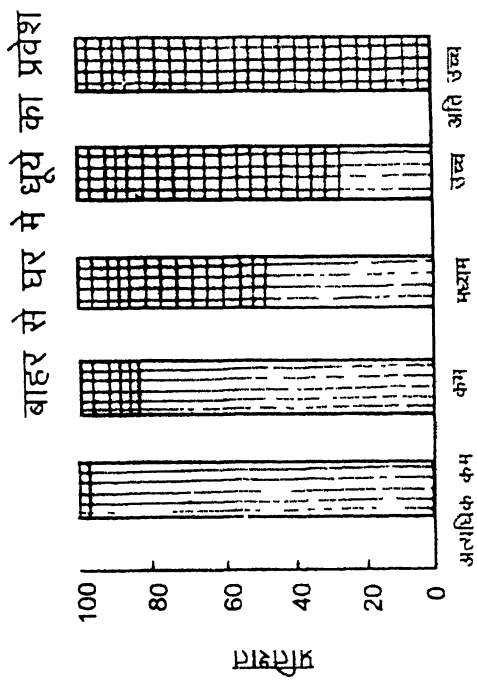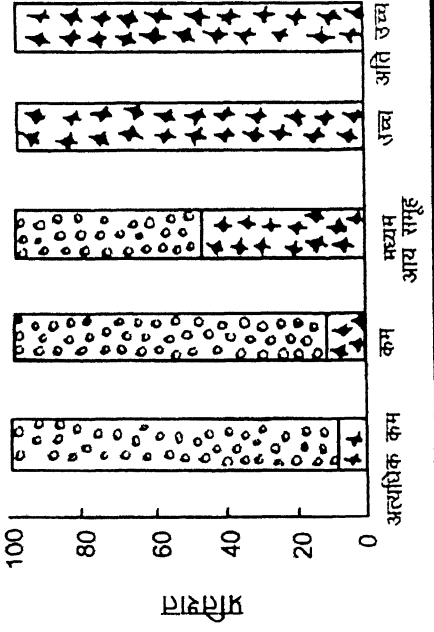
जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति
1999
बाहर से घर मे धूये का प्रवेश
प्रतिशत
100
80
60
40
20
0
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
होता है
नही होता है
बाहर से धूआ आने का स्रोत
नही आता
पडोस से
वाहनो से
सभी स्रोतो स
घर से धूआं बाहर निकलनें की स्थिति
खिडकी, दरवाजे, रोशनदान से शीघ्र बाहर निकल जाता है
घर मे ही बना रहता है
स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
प्लट 63

सारणी 5 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	अलग रसोईघर मे	बारामदे या अन्य किसी कमरे मे	योग
अत्यधिक कम	——	100 00	100 00
कम	6.00	94 00	100 00
मध्यम	71.35	28.65	100.00
उच्च	100 00	——	100 00
अति उच्च	100 00	——	100.00
योग	55.47	44 53	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन :-

अत्यधिक कम आय वर्ग से लेकर अत्यधिक उच्च आय वर्ग के घरो में भोजन पकाने के लिए सर्वथा भिन्न प्रकार के ईंधनो का प्रयोग होता है। इस नगर में भोजन पकाने के लिए सात मुख्य प्रकार के ईंधनो का प्रयोग विभिन्न घरों मे होता है– लकडी, कोयला, गोबर के कडे, सूखी पत्तिया, मिट्टी के तेल से, बिजली अथवा गैस से।

सारणी 5.2 और चित्र 5.2 में विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो में प्रयुक्त ईंधन को बताया गया है। सर्वेक्षण से पता चला है कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 88 प्रतिशत घरो मे व कम आय वर्ग के 72 प्रतिशत घरो मे भोजन, गोबर के कडे से, लकड़ी तथा सूखी पत्तिया इकट्ठा करके बनता है (लकडी, पत्तिया, गोबर, जगह–जगह से उठाकर, बीनकर ले आते है)।
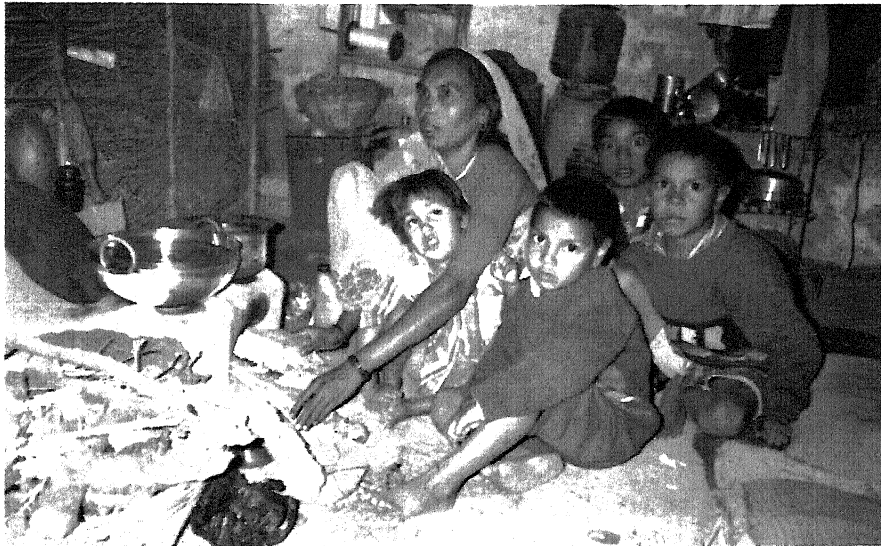
प्लेट 5.4 निम्न आय वर्ग के झोपड़ी में लकड़ी के ईंधन से खाना पकाने का दृश्य मुहल्ला गुलरचक (उमरपुर)

प्लेट 5.5 उच्च आय वर्ग का रसोईघर उपयुक्त वातायन युक्त है जिसमें गैस पर खाना बनाया जाता है।

प्लेट 5.6 निम्न आय वर्ग की आवासीय झोपड़ी जिसमें ईंधन के रूप में लकड़ी व गोबर की उपली को प्रयोग में लाने हेतु रखा गया है। मुहल्ला रामनगर, भड़सरा (मतापुर)

मध्यम आय वर्ग के 25 प्रतिशत घरों में एवं उच्च आय वर्ग के 2.[illegible] प्रतिशत घरों में भी भोजन लकड़ी अथवा कोयले पर बनता है जिसे वे बाजार से खरीदते हैं। उन घरों में जिनमें इस प्रकार के ईंधन का प्रयोग होता है वायु प्रदूषण सर्वाधिक होता है क्योंकि ये ईंधन सर्वाधिक तीव्र प्रदूषक होते हैं। मिट्टी के तेल से एवं बिजली से भोजन बनाना भी बहुत आम है परन्तु ये माध्यम भी कम आय वर्ग के घरों में ही प्रचलित है। उच्च आय वर्ग के 11[illegible] प्रतिशत घरों में एवं अति उच्च आय वर्ग के 2.[illegible] प्रतिशत घरों में भी मिट्टी के तेल का प्रयोग कभी–कभी गैस की कम आपूर्ति होने पर होता है। बहुत से कम आय वर्ग के घरों में भोजन पकाने के लिए बिजली का प्रयोग बहुत होता है परन्तु इनके पास गैर कानूनी विद्युत आपूर्ति स्रोत अधिकांशतया पाया जाता है। ये लोग कोई बिजली का बिल नहीं देते हैं जबकि बिजली का प्रयोग न केवल रोशनी करने के लिए करते हैं अपितु पूरा खाना भी बिजली से बनाते हैं। बिजली के हीटर का प्रयोग नगर के पुराने बसे घरों में अधिकांश होता है।

सारणी 5 3 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिए प्रयोग मे आने वाले ईंधन की दृष्टि से वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	लकड़ी, कोयला या गोबर की उपली द्वारा	मिट्टी के तेल या बिजली द्वारा	गैस द्वारा	योग
अत्यधिक कम	88 67	11.33	—	100 00
कम	72.43	27.57	—	100.00
मध्यम	25 73	34.47	39.80	100.00
उच्च	2.20	11.78	86.02	100 00
अति उच्च	—	2 97	97.03	100 00
योग	37 80	17.63	44 57	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

अत्यधिक कम आय वर्ग के 11 प्रतिशत घरों में, कम आय वर्ग के 27 प्रतिशत घरों मे एवं मध्यम आय वर्ग के 34 प्रतिशत घरों मे मिट्टी के तेल का प्रयोग होता है। यह घरों में तीव्र वायु प्रदूषण का कारण बनता है क्योंकि स्टोव से निकलता कार्बन मोनोऑक्साइड तीव्र वायु प्रदूषक है। परन्तु स्टोव पर खाना बनाने से या कार्बन मोनोऑक्साइड से किसी प्रकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या के बारे में किसी ने नहीं बताया। लम्बे समय तक इस प्रकार के वायु प्रदूषकों के सम्पर्क में रहने से, विशेषकर महिलाओं के जो प्रतिदिन चार घंटे ईंधन के सम्पर्क मे रहती है जीवन प्रत्याशा कम हो जाती है। गरीब घरों मे अधिकतर देखा जाता है कि भोजन पकाते समय बच्चे मा के आसपास ही रहते है जिससे उनमें भी श्वास सम्बन्धी बीमारिया पायी जाती है। उपयुक्त वातायन की सुविधा न होने पर यह समस्या और भी व्यापक तौर पर देखी जा सकती है। गैस सर्वाधिक उपयुक्त और स्वच्छ, भोजन पकाने का ईंधन होता है। इस ईंधन का प्रयोग सम्पन्न घरो मे होता है। 86 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 97 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके घर मे भोजन पकाने के लिए गैस
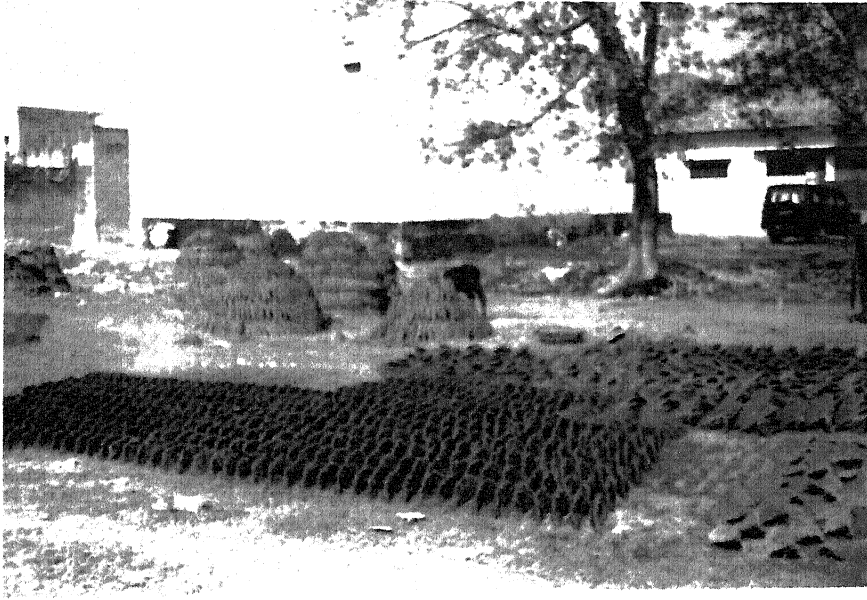
प्लेट 5.7 मुहल्ला अहमद खाँ मण्डी में ईंधन के रूप में प्रयोग करने के लिए बनाई गयी गोबर की उपली का दृश्य।

प्लेट 5.8 गुलरचक मुहल्ले के निम्न आय वर्ग के लोग ईंधन के रूप में सुखी लकड़ी को जगह–जगह से एकत्रित करके लाते हुए।

(एलपीजी) का ही प्रयोग होता है। मध्यम आय वर्ग के भी 44 प्रतिशत घरो मे गैस का प्रयोग होता है क्योकि शिक्षित महिलाये गैस पर ही भोजन बनाना पसद करती है एव उसी की माग करती है।

घर में धूम्रपान :-

धूम्रपान से होने वाला प्रदूषण अन्य पर्यावरणीय प्रदूषण से किन्ही अर्थ मे भिन्न होता है क्योकि धूम्रपान के प्रदूषण को मनुष्य अपनी इच्छा से उत्पन्न करता है और ग्रहण करता है। इस प्रकार के प्रदूषण से सर्वाधिक वह व्यक्ति प्रभावित होता है जो धूम्रपान करता है परन्तु आसपास खडे व्यक्ति भी लगभग उतना ही प्रभावित होते है। धनी घरो एव गरीब घरो मे जो धूम्रपान होता है उससे सामान्य रूप से वे लोग प्रभावित होते है। सिगरेट और बीडी पीने से तात्कालिक स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव परिलक्षित नही होता, परन्तु लम्बे समय तक इसका प्रयोग करने से मृत्यु का समय नजदीक आ जाता है। प्रत्येक चार धूम्रपान करने वालो में से एक की मृत्यु शीघ्र अपनी इस बढी हुयी आदत के कारण हो जाती है। इस विषय मे किये गये वर्तमान शोधो से पता चलता है कि धूम्रपान करने वाले लोगो मे युवावस्था व प्रौढावस्था मे होने वाली मृत्यु तीन गुना अधिक होती है। उन लोगो से जो धूम्रपान नही करते है घर मे धूम्रपान करना घर के वायु प्रदूषण को बढाने का एक और माध्यम है। सारणी 5 4 और प्लेट 5.2 में चयनित घरो के सदस्यो द्वारा धूम्रपान करने अथवा न करने का वर्णन किया गया है।

सारणी 5 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो का धूम्रपान से होने वाले प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत में)

आय समूह	धुमपान होता है	नही होता है	योग
अत्यधिक कम	81.76	18.24	100 00
कम	88.69	11.31	100.00
मध्यम	62.62	37.38	100.00
उच्च	25.75	74.25	100 00
अति उच्च	18.81	81.19	100.00
योग	55.52	44 48	100.00

यह पाया गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 81 प्रतिशत घरो मे, कम आय वर्ग के 88 प्रतिशत घरो मे व मध्यम आय वर्ग के 62 प्रतिशत घरो में एक या कई सदस्यो द्वारा धूम्रपान होता है। इनमे से अधिकाश लोगो ने बताया कि वे बीडी पीते है जो स्थानीय बीडी उद्योग मे बनती है। ये लोग बीडी का प्रयोग इसलिए करते है कि यह सिगरेट से लगभग दस गुना सस्ती होती है। बीडी सिगरेट से अधिक दुष्प्रभाव स्वास्थ्य पर डालती है और बीडी से सिगरेट की अपेक्षा अधिक धूआ निकलता है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के भी कुछ घरो ने बताया कि उनके घर मे एक या दो सदस्य धूम्रपान करते है ये लोग सिगरेट ही पीते है। धूम्रपान करने वाले लोगो के अधिक सम्पर्क में रहने वाले लोग भी धूए से उतना ही प्रभावित होते है। और उनमे भी फेफडे के कैंसर जैसी बीमारी पायी जा सकती है जो स्वय धूम्रपान नही करते है। सर्वेक्षण के दौरान यह भी पता चला कि धूम्रपान करने वाले अधिकांश लोग 20 से 30 वर्ष की उम्र के है इससे पता चलता है कि घर में धूम्रपान द्वारा वायू प्रदूषण करने वाले युवा वर्ग के लोग ही अधिक हैं।

प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीड़ी की संख्या :-

सारणी 5.5 और प्लेट 5 2 मे एक दिन मे प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की सख्या को बताया गया है। यह पाया गया कि एक दिन में किसी घर में जितनी अधिक सिगरेट बीडी की सख्या प्रयुक्त होती है श्वांस सम्बन्धी बीमारी से ग्रसित लोगों की सख्या भी उतनी अधिक होती है।

सारणी 5 5 जौनपुर नगर के चयनित घरों में एक दिन में प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की संख्या (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 5	6 — 10	11 — 15	> 15	योग
अत्यधिक कम	11 95	39 62	48 43	—	100 00
कम	14 85	32.86	41.69	10.60	100.00
मध्यम	9.46	16.75	38.35	35 44	100.00
उच्च	54 79	35.35	9 86	—	100.00
अति उच्च	62.37	37.63	—	—	100 00
योग	30 68	32 45	27 67	9 20	100.00

इस नगर के घरो के सर्वेक्षण मे पता चला कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 48 प्रतिशत घरो मे, कम आय वर्ग के 41 प्रतिशत घरो मे व मध्यम आय वर्ग के 38 प्रतिशत घरो मे एक सदस्य द्वारा प्रतिदिन 11 से 15 सिगरेट अथवा बीडी का प्रयोग होता है। सर्वेक्षण मे यह भी पता चला है कि ये लोग और सिगरेट/बीडी का प्रयोग करना चाहते है परन्तु पैसे की कमी के कारण अपनी इच्छा की पूर्ति नही कर पाते। इन लोगो ने यह भी बताया कि ये भोजन के बिना तो रह सकते है परन्तु एक भी दिन धूम्रपान किये बिना नही रह सकते। इस प्रकार इन लोगों के घर मे सिगरेट/बीडी का धूआ महक बराबर बनी रहती है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर लोगो ने बताया कि यदि वे धूम्रपान अधिक करते है तो घर से बाहर करते है या घर में एक दिन मे 5 से कम सिगरेट का प्रयोग करते हैं। इससे पता चलता है कि ये लोग शिक्षित है और धूम्रपान से होने वाले दुष्प्रभाव से परिचित हैं। मध्यम आय वर्ग के 35 प्रतिशत घरो ने व कम आय वर्ग के 10 प्रतिशत घरो ने बताया कि एक दिन मे एक सदस्य द्वारा 15 से अधिक सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। ये लोग अत्यधिक धूम्रपान से होने वाले दुष्प्रभाव की परवाह नही करते क्योकि इससे तात्कालिक प्रभाव तो पड़ता नहीं है इसलिए उन्हे पता नही चलता। बीडी जो गरीब परिवार मे अधिक प्रयुक्त होती है सिगरेट से कई गुना अधिक हानिकारक होती है एव इस पर कोई वैधानिक चेतावनी भी नही लिखी होती जो कि मनुष्य का उससे होने वाले तीव्र दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करता है।

बाहर से घर में धूंआ आने का स्रोत :-

घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण का स्रोत केवल खराब ईंधन जैसे लकडी कोयला, सूखी पत्तिया, गोबर के कडे आदि ही नही होते या धूम्रपान या कीट, मच्छरो को मारने के लिए प्रयुक्त माध्यम ही नही होते बल्कि बहुत सा धूआ बाहर के स्रोतो से भी घर मे आता है। सारणी 5 6 एवं प्लेट 5 3 मे इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है।

सारणी 5 6 जौनपुर नगर के चयनित घरों में बाहर से धूंआ आता है अथवा नहीं आता है एव इसके स्रोत (प्रतिशत मे)

आय समूह	धूआ घर मे आता है		धूआं आने के स्रोत		
	हॉ	नही	पडोस से	वाहनों से	सभी कारणो से
अत्यधिक कम	98.11	1.89	12.58	7 54	79.88
कम	85 86	14 14	16.96	11.66	71.38
मध्यम	58 42	41 58	38 60	19.90	41.50
उच्च	35 14	64 8 6	22.77	77.23	—
अति उच्च	—	100 00	—	—	—
योग	55.50	44 50	22 72	29.08	48.20

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण मे विभिन्न आय वर्ग के लगभग सभी घरों ने बताया कि घर में बाहर से धूआ आता है केवल अति उच्च आय वर्ग के कुछ घरों को छोडकर क्योकि ये लोग साफ सुथरे सम्भ्रान्त मुहल्ले मे रहते है जहा सभी उच्च आय वर्ग के ही लोग रहते हैं। ऐसी स्थिति नगर के बाहरी क्षेत्रो मे अधिक पायी जाती है। इन कालोनियों से होकर भारी वाहन नही गुजरते है। लेकिन 97 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 58 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के और 35 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरों में बताया गया कि बाहर के स्रोतो से घर मे धूआ कभी कम कभी अधिक मात्रा में आता ही है। ये घर घने बसे क्षेत्रो मे स्थित है जहा विभिन्न आय वर्ग के घर पास–पास सटे हुए बने हैं या सडक के किनारे बने है। इसलिए यदि घर मे धूआ उत्पन्न करने वाले ईंधन का प्रयोग नहीं होता है तो भी बाहर से धूआ आकर घुटन भरा वातावरण तैयार कर देता है।

सारणी 5 6 मे इस नगर के चयनित घरों में बाहर से धूआं आने के स्रोत को दिखाया गया है। तीन मुख्य प्रकार के स्रोतो को बताया गया। पडोस के घर में प्रयुक्त

ईंधन से, वाहनो से, औद्योगिक व्यापारिक गतिविधियो से। कई घरो मे ये तीनों स्रोत प्रभावी बताये गये। अत्यधिक कम आय वर्ग के 79 प्रतिशत घरो ने, कम आय वर्ग के 71 प्रतिशत घरो ने व मध्यम आय वर्ग के 41 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे धूआ उपर्युक्त सभी स्रोतो से आता है। ऐसा इसलिए है कि ये घर घने बसे क्षेत्रो मे स्थित है और मुख्य सडक के किनारे बने है जहा वाहनो का आवागमन अधिक बना रहता है। घरो के आसपास व्यापारिक दुकाने अधिक है जहा शाम से ही विद्युत आपूर्ति बाधा होने पर जनरेटर चलने लगते है जिससे विशाल मात्रा मे धूआ, महक निकलता है। गर्मी के दिनों मे, दिन मे भी जनरेटर चलते है। मध्यम आय वर्ग के 38 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे केवल पडोस से धूआ आता है एव 77 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि घर में केवल वाहनो से धूआ आता है इनमे से अधिकतर घर बनारस से होकर लखनऊ जाने वाली सडक पर और जौनपुर से गोरखपुर जाने वाली सडक पर बने हुए है। इसलिए ये घर भारी वाहनो से होने वाले प्रदूषण से नित्य प्रभावित होते है। ये सम्बन्धित मुहल्ले है– नईगज, लाइन बाजार, पालिटेक्निक चौराहा, जेसीज चौराहा, सिपाह, पचहटिया आदि। इस नगर के अधिकाश घरो में ईंधन के लिए कोयला, लकडी, गोबर के कडे का प्रयोग सस्ता होने के कारण होता है जिससे उत्पन्न धूआ पडोस के घर मे भी निश्चित रूप से जाता है। इस प्रकार इन तीनो स्रोतों से आने वाला धूआ गंभीर स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ का कारण बनता है।

घरों से धूआं बाहर निकलने की स्थिति :-

धूआ जो घर मे खाना बनाने के लिए प्रयुक्त ईंधन से, धूम्रपान से अथवा बाहर के स्रोतो से आता है वह शीघ्र घर से बाहर निकल जाये तो अधिक हानिकारक नहीं होता है। रोशनदान, खिडकी व दरवाजा तीन स्थान है जहा से धूआ निकल कर बाहर जाता है।

सारणी 5 7 और चित्र 5 3 मे चयनित घरो से धूआ बाहर निकलने की छमता को दर्शाया गया है। सार्वेक्षण मे अत्यधिक कम आय वर्ग के 90 प्रतिशत घरों ने, कम आय वर्ग के 87 प्रतिशत घरो ने व मध्यम आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर से धूआ शीघ्र निकलता नही है बल्कि लम्बे समय तक बना रहता है। क्योकि घर मे खिडकी

प्लेट 5.9 कूड़ा करकट जलाये जाने से भी उत्पन्न धूंआ आस–पास के घरों में प्रवेश करता है।
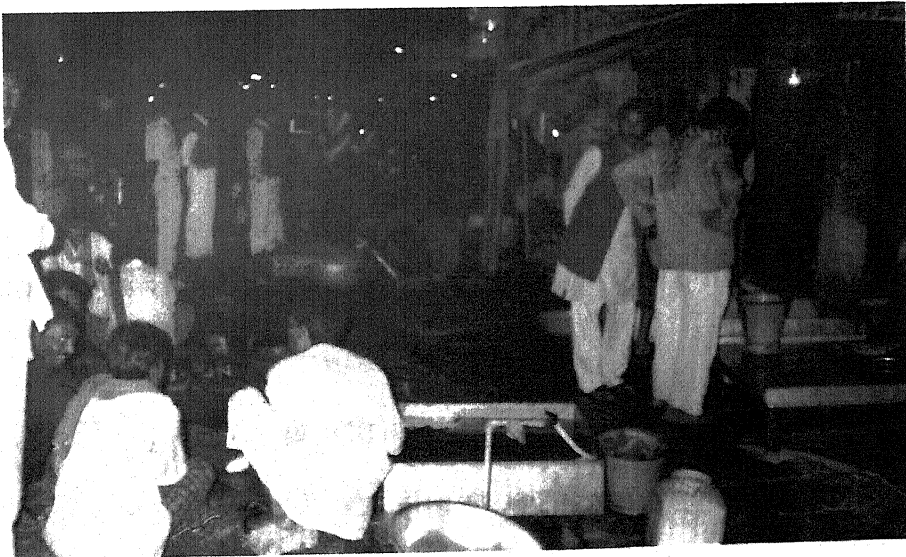
प्लेट 5.10 ओलन्दगंज से कचहरी जाने वाली अतिव्यस्त सड़क के किनारे खुले आम मछली विक्रेताओं द्वारा मछली विक्रय करने से उस क्षेत्र में सदैव दुर्गन्ध बनी रहती है।

रोशनदान नही है। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो के सदस्य उपयुक्त वातायन की सुविधा का लाभ उठाते है। इन लोगो ने बताया कि धूआ घर मे बहुत कम होता है। वह भी खिडकी दरवाजे से शीघ्र बाहर निकल जाता है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 9 प्रतिशत घरो ने व कम आय वर्ग के 12 प्रतिशत घरो ने बताया कि धूआ कमरे मे एक मात्र बने दरवाजे से बाहर जाता है इसलिए यह अधिक सम्य लेता है।

सारणी 5.7 जौनपुर नगर के चयनित घरो का धूआं बाहर निकलने की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत में)

आय समूह	धूआं खिडकी, रोशनदान, दरवाजे से बाहर चला जाता है	घर मे ही बना रहता है	योग
अत्यधिक कम	9.74	90.26	100 00
कम	12.02	87.98	100.00
मध्यम	48.54	51 46	100.00
उच्च	100.00	—	100.00
अति उच्च	100 00	—	100.00
योग	54 06	45.94	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण मे उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो ने बताया कि घर मे भोजन अलग रसोईघर मे ही बनता है और ईंधन के रूप में गैस एलपीजी का प्रयोग होता है। जबकि कम आय वर्ग के घरो मे भोजन भी उसी कमरे मे बनता है जिसमे वे रहते सोते व नहाते है और ईंधन के रूप में लकडी सूखी पत्तियां कोयला व गोबर के कंडे का प्रयोग होता है। लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम व कम आय वर्ग के घरो मे प्रतिदिन 11 से 15 सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। जबकि उच्च आय वर्ग के घरों मे (किसी–किसी घर में ही) एक दिन मे 3–4 सिगरेट का ही प्रयोग होता है वह भी खुले स्थान में।

अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के सभी घरो मे घर मे धूआ उत्पन्न तो होता ही है, बाहर से, पडोस से वाहनो से व दुकानो से भी धूआ आता है। इन घरो मे उपयुक्त वातायन की सुविधा भी नही पायी जाती है। इस प्रकार की समस्या उच्च आय वर्ग के घरो मे नही पायी जाती है।

घर में ध्वनि प्रदूषण :-

ध्वनि प्रदूषण नगरीकरण की देन है। आज भी ग्रामीण अचल इससे मुक्त है। ध्वनि प्रदूषण तब उत्पन्न होता है जब कान की सहन सीमा से अधिक तेज आवाज सुननी पडती है। जैसे लगातार वाहनो की आवाज, कारखानो और ध्वनि विस्तारक यत्रो की कर्कष आवाज आदि। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अवांच्छित तेज आवाज जो मनुष्य की श्रवण शक्ति, स्वास्थ्य और आराम को कष्टदायी बनावें उसे ध्वनि प्रदूषण कहा जायेगा। प्रधानतः दो स्रोतों से ध्वनि प्रदूषण होता है।

1– गतिशील वाहन, मोटर गाडी, रेल, हवाई जहाज

2– स्थायी स्रोत– घरेलू आवाज जैसे रेडियो, दूरदर्शन, ध्वनि विस्तारक (Loud Speaker) उद्योग के यत्र एव साइरन।

औसतन 5 डेसिबिल मान की आवाजल सहन सीमा के अन्दर मानी जाती है। दो व्यक्तियों की सामान्य बातचीत मे इतनी आवाज निकलती है। 60 डेसीबिल तक की आवाज को बरदाश्त किया जा सकता है लेकिन इसके उपर बढने पर ध्वनि प्रदूषण माना जाता है। ध्वनि प्रदूषण के तीव्र कारणो में कारखाने अग्रणी हैं। घर के पीछे गली मे या सामनें कोई कारखाना है तो वहा रहने वाले लोग ऊचा सुनने लगते हैं और कारखाने में कार्यरत श्रमिक बहरे होने लगते है क्योकि कल कारखानो मे ध्वनि भार 100 डेसीबिल से अधिक पाया जाता है। ध्वनि विस्तारक यंत्रो से भी तीव्र ध्वनि प्रदूषण होता है। प्रचार–चुनाव, पूजापाठ और उत्सव के समय इनका प्रभाव देखने लायक होता है। यदि ध्वनि प्रदूषण अधिक समय तक बना रहे तो यह किसी की श्रवण शक्ति को हमेशा के लिए खराब कर सकता है। ध्वनि प्रदूषण मानव शरीर पर अनेक प्रकार का कुप्रभाव प्रकट करता है जैसे दिल का दौरा, दिमागी परेशानी, अनिद्रा, कार्य

क्षमता मे ह्रास आदि। कुछ कारणो से नगर में रहने वाले लोग शोरगुल मे रहने के आदी है और उसी मे रहना पसद करते है। इस नगर (जौनपुर) के घरो मे ध्वनि प्रदूषण के बारे मे जानकारी लेने हेतु जिन विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया वे हैं मुहल्ले में ध्वनि प्रदूषण होता है अथवा नही, ध्वनि प्रदूषण का स्रोत क्या है (घरेलू सामानो से, वाहनो से, बाजार से, ध्वनि विस्तारक यत्रो से, रेलगाडी से, कारखानो से या इन सबसे, ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता कितनी है कम, मध्यम या उच्च) उपयुक्त बातो से सम्बन्धित सभी आंकडे क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये।

सारणी 5 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरों मे ध्वनि प्रदूषण की स्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

	घर में ध्वनि प्रदूषण	प्रतिशत
1. मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण	1. होता है	57.48
	2. नहीं होता है	42 52
2. ध्वनि प्रदूषण का स्रोत	1 घर में प्रयोग में आने वाले सामानो से	19.73
	2 वाहनों से	18.49
	3. ध्वनि विस्तारक यंत्रो से	8 37
	4 बाजार से	1.53
	5 इन सभी कारणों से	51 88
3. ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता	1 कम	27.32
	2 मध्यम	18.6
	3 उच्च	23.17
	4. अति उच्च	30.91

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 5 8 और प्लेट 5.11 में इस नगर के सम्पूर्ण 15,80 चयनित घरो के वायु प्रदूषण को दिखाया गया है। सर्वेक्षण मे केवल 58 प्रतिशत घरों ने बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण होता है उनमें 51 प्रतिशत घरों ने बताया कि ध्वनि प्रदूषण घर में प्रयोग में

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरों में ध्वनि प्रदूषण की स्थिति
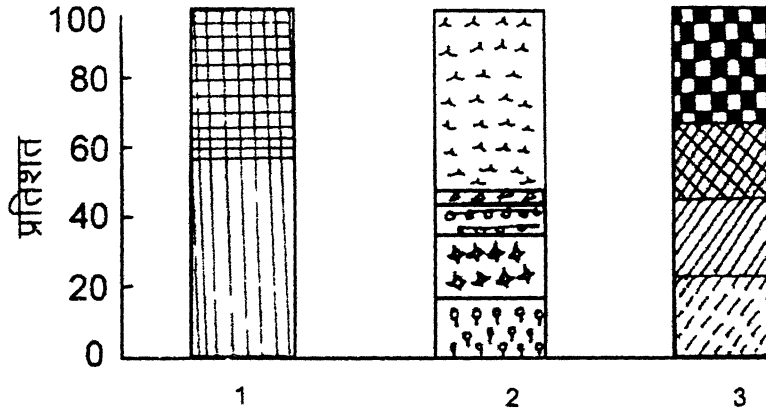
1999

1. मुहल्ले में ध्वनि प्रदूषण — होता है; नहीं होता है

2. ध्वनि प्रदूषण के स्रोत — घर-में-प्रयोग मे आने वाले सामानो से; वाहनो से; ध्वनि विस्तारक यंत्रो से; बाजार से; इन सभी स्रोतो से

3. ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता — कम; मध्यम; उच्च

अति उच्च

स्रोत - व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित 1999

प्लेट 5.11

आने वाले सामानो से, वाहनो, बाजार के शोर से ध्वनि विस्तारक आदि सभी स्रोतो से होता है। लगभग 31 प्रतिशत घरो ने उनके मुहल्ले मे अति उच्च तीव्रता वाले ध्वनि प्रदूषण के बारे मे बताया। उपयुक्त तथ्यो से प्रतीत होता है कि सर्वेक्षित घरो मे आधे से अधिक घर किसी न किसी स्रोत से ध्वनि प्रदूषण की कम/अधिक मात्रा प्राप्त करते ही है।

मुहल्ले में ध्वनि प्रदूषण :-

सारणी 5 9 और प्लेट 5 12 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण को दिखाया गया है। जैसा कि हम सभी जानते है कि ध्वनि प्रदूषण अवांछित तीव्र आवाज है जो मनुष्य की कार्य क्षमता को दुष्प्रभावित करती है इसलिए यह पता करना आवश्यक है कि कितने घर ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव में आते है।

यह देखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 95 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 91 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 73 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण तीव्र होता है।

सारणी 5 9 जौनपुर नगर के चयनित घरों का ध्वनि प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	ध्वनि प्रदूषण होता है	नहीं होता है	योग
अत्यधिक कम	9465	5.35	100.00
कम	91 51	8.49	100 00
मध्यम	72 82	27.18	100 00
उच्च	20 54	79.46	100 00
अति उच्च	7 92	92.08	100.00
योग	57 48	42 52	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
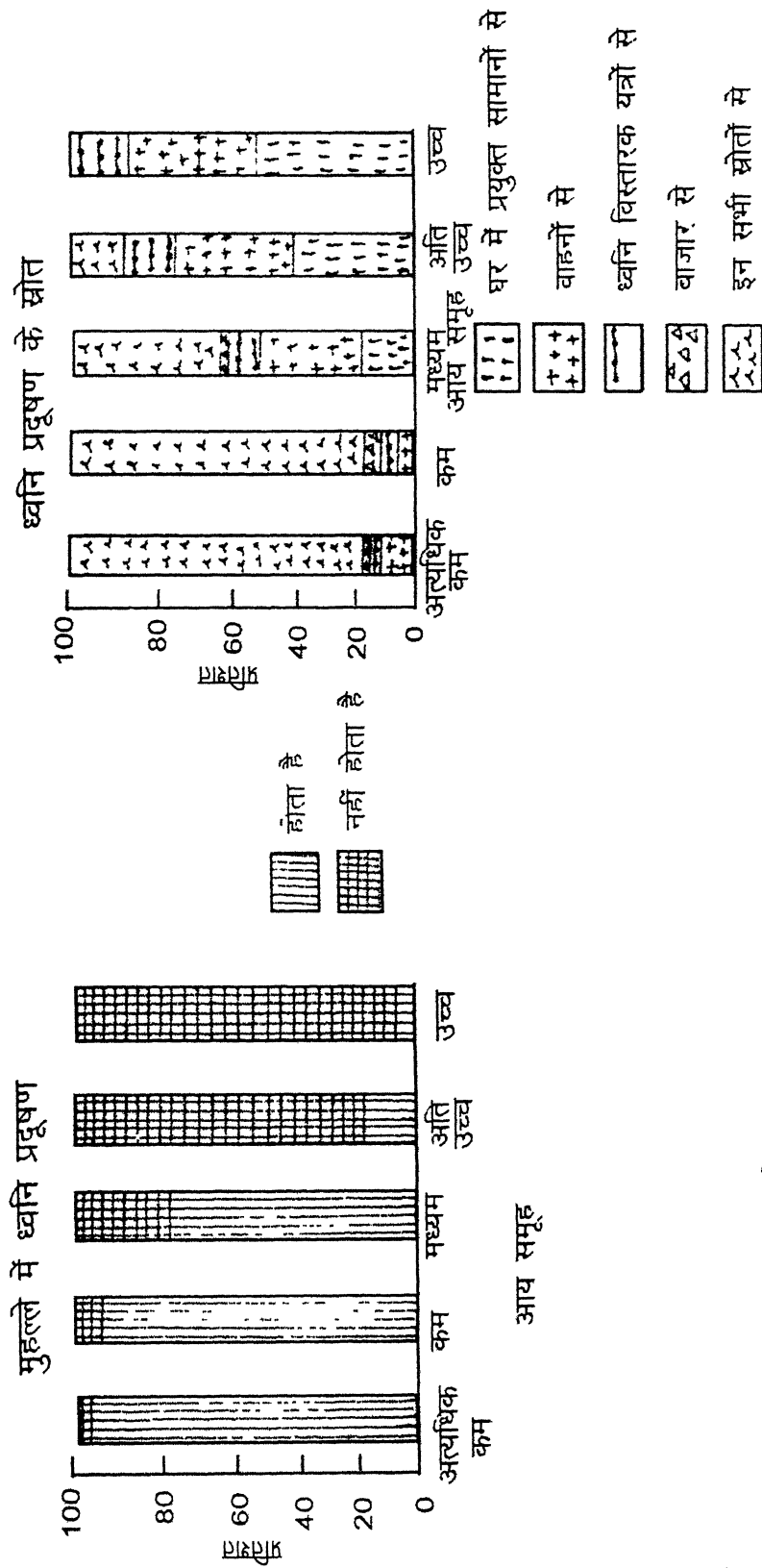
कम आय वर्ग व मध्यम आय वर्ग के अधिकाश घरो मे ध्वनि प्रदूषण इसलिए पाया जाता है क्योकि ये लोग घने बसे क्षेत्रो मे रहते है जहा घर मे व बाहर भीड की स्थिति बनी रहती है। आसपास दुकाने पायी जाती है और यातायात के लिये प्रयुक्त भारी वाहनो से प्रदूषण होता है। बहुत कम उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण होता है। दूसरी तरफ 80 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 92 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले या घर मे ध्वनि प्रदूषण जैसी कोई समस्या नही होती है। क्योकि ये लोग अच्छी आवासीय कालोनियो मे रहते है। जहा न बडी दुकाने रहती है और न ही यातायात के लिए भारी वाहन चलते है।

ध्वनि प्रदूषण के स्रोत एवं तीव्रता :-

सारणी 5 10 और प्लेट 5 12 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे होने वाले ध्वनि प्रदूषण के स्रोत को दिखाया गया है। लोगों ने पांच प्रमुख स्रोतो को बताया। घर मे प्रयोग मे आने वाले सामानो से, वाहनो से, ध्वनि विस्तारक यत्रों से , बाजार से या इन सभी कारणो से। 87 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 79 प्रतिशत कम आय वर्ग के, 50 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के व 13 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि वे उपर्युक्त सभी स्रोतो से ध्वनि प्रदूषण के शिकार होते है। दूसरी तरफ 33 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 45 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि जो ध्वनि प्रदूषण होता है वह घर के सामानों से ही होता है परन्तु इन लोगों को इसकी परवाह नही होती क्योंकि तेज ध्वनि मे संगीत चलाना, टेलीविजन, रेडियो, वीसीआर/वीसीपी चलाना उच्च जीवन स्तर का प्रतीक बन गया है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर घरों में जनरेटर भी पाया जाता है जिससे उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से आसपास के घर भी प्रभावित होते है। अत्यधिक कम आय वर्ग के व कम आय वर्ग के लोग घर मे प्रयुक्त किसी सामान से ध्वनि प्रदूषण के शिकार नही होते है। क्योकि उनके पास ऐसा कोई सामान नही है। लगभग 22 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के व 37 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोगो ने बताया कि उनका आवास मुख्य सड़क के किनारे होने के कारण वे वाहनों से निकलने वाले हार्न व तीव्र ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव मे रहते है। बस स्टेशन एवं रेलवे स्टेशन के पास बने

आवास तीव्र ध्वनि प्रदूषण का शिकार होते है एव वहां रहने वाले निवासी आपस मे ऊची आवाज मे ही बात करते है। मदिरो मे जहा शाति की अपेक्षा की जाती है वहा पर भी शायद ही कभी शाति रहती है, ध्वनि विस्तारक यत्रो से सुबह शाम कीर्तन, फिल्मी गीतो पर आधारित भजन, जागरण प्रतिदिन होता है। इस प्रकार का शोर बढी हुयी मात्रा मे हिन्दू उत्सवो मे जैसे रामलीला, नवरात्रि, दशहरा आदि मे देखा जा सकता है। इससे आसपास रहने वाले लोग मजबूरी मे प्रभावित होते रहते है। शादी विवाह के समय में विशेषकर हिन्दू शादियो मे ध्वनि विस्तारक यत्र तेज आवाज मे रातभर बजते है जिससे आसपास के घर भी प्रभावित होते हैं। बाजार के शोर से ध्वनि प्रदूषण के बारे मे बहुत कम लोगों ने बताया।

सारणी 5 10 जौनपुर नगर के चयनित घरों मे ध्वनि प्रदूषण के स्रोत (प्रतिशत में)

आय समूह	घर मे प्रयोग मे आने-वाले सामानों से	वाहनो से-	ध्वनि विस्तारक-यंत्रों से	बाजार के-शोर से	इन सभी-स्रोतो से	योग
अत्यधिककम	1.57	5.66	2.51	2.83	87.43	100 00
कम	2.82	9 20	6.71	1.41	79.86	100 00
मध्यम	15 53	22.33	8 98	2.43	50.73	100 00
उच्च	33.15	36 98	16.72	—	13.15	100.00
अति उच्च	45.55	18.31	6 93	1.00	28.21	100 00
योग	19.73	18.49	8.37	1.53	51.88	100.00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 5 11 और प्लेट 5 12 मे चयनित घरो में ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता को दिखाया गया है। चार प्रकार की तीव्रता– कम, मध्यम, उच्च अति उच्च के बारे में लोगों ने बताया।

सर्वेक्षण मे अत्यधिक कम आय वर्ग के 66 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 57 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 30 प्रतिशत लोगो ने अति उच्च तीव्रता वाले ध्वनि

प्लेट 5.13 गोमती नदी पर स्थित शाही पुल पर अत्यधिक वाहनों के दिन–रात आवागमन से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण की स्थिति।

प्लेट 5.14 नगर में ध्वनि प्रदूषण के स्रोत, मस्जिद पर लगे ध्वनि विस्तारक यंत्र जो नगर के सभी मस्जिदों पर लगे हैं।

प्लेट 5.15 नगर के मध्य क्षेत्र में बाहर से आने वाले वाहनों की भीड़ जो ध्वनि एवं वायु प्रदूषण के कारक हैं।(बदलापुर पड़ाव)

प्रदूषण के बारे मे बताया क्योकि ये लोग सडक के किनारे बने आवासो मेरहते है जहा से भारी वाहन लेकर गुजरते है एव आसपास बाजार भी है।

सारणी 5 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो का ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत में)

आय समूह	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च	योग
अत्यधिक कम	—	7.54	26.10	66.36	100 00
कम	—	12.72	29.68	57.60	100.00
मध्यम	8.49	18.20	42 48	30.83	100 00
उच्च	55.34	27 12	17.54	—	100 00
अति उच्च	72 77	27 23	—	—	100 00
योग	27 32	18 6	23.17	30.91	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी से पता चलता है जितने कम आय वर्ग के घर हैं उनमे ध्वनि प्रदूषण तीव्र है। जबकि उच्च आय वर्ग के घरो मे अपेक्षाकृत कम ध्वनि प्रदूषण हैं। ध्वनि प्रदूषण लोगो की कार्य क्षमता को दुष्प्रभावित करता है। इस बारे में वे लोग बताते है जिनके दफ्तर शोरगुल वाले स्थान पर है और छात्र जो अधिक ध्वनि प्रदूषण तीव्रता के कारण लिखने पढने मे असुविधा महसूस करते है। ध्वनि प्रदूषित क्षेत्र मे रहने वाले बच्चे बहुत धीरे–धीरे काम करते है और जल्दी थक भी जाते है। उच्च ध्वनि प्रदूषण लोगो की आयु को भी कम कर देता है। इसके निवारण के लिए राजनैतिक और सामाजिक उपाय अनिवार्य है। सरकार कानून बनाकर अधिक आवाज करने वाले वाहनो पर प्रतिबन्ध लगा सकती है। समाज में जागरूकता पैदाकर वाहन चालकों मे सद्गुण पैदा किया जा सकता है। इसी तरह नगर के मध्य यातायात प्रबन्ध से भीडभाड कम करके ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। जिससे ध्वनि प्रदूषण कम हो। साथ ही कुछ विशेष प्रकार के वाहनो के प्रवेश पर नियत्रण किया जा सकता है। ध्वनि विस्तारक यत्रो के प्रयोग को भी नियत्रित कर इस रोग से त्राण पाया जा सकता है।

भाग -तीन

जौनपुर नगर में आवासीय पर्यावरण व स्वास्थ्य एवं निष्कर्ष
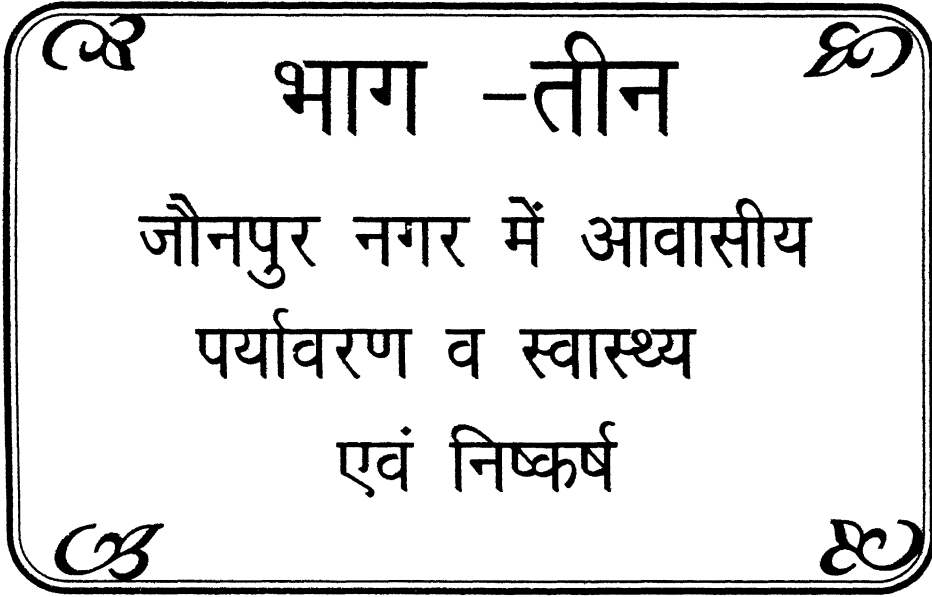
जौनपुर नगर के आवासीय सर्वेक्षण से यह पता चला कि नगर के आवासीय पर्यावरण को आर्थिक पहलू ही अधिक प्रभावित करता है। क्योकि धनाभाव के कारण व्यक्ति न तो अच्छे आवास की व्यवस्था कर पाता है न ही अच्छे पर्यावरणीय वातावरण को सृजित करने की स्थिति मे रहता है। अध्ययन से यह पता चला कि गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोग विवश होकर खाना पकाने के लिए गैस का प्रयोग करने के स्थान पर लकडी व गोबर के कडे को जलाते है जिससे सुबह शाम उनके घरो मे तो धूआ होता ही है व आसपास के लोग भी इससे प्रभावित होते है। इस प्रकार व्यक्ति के आय एव स्वास्थ्य का सम्बन्ध पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अधिक रहता है। आवासीय पर्यावरण को घरों मे, स्नानगृह एव शौचालय की स्थिति, घरो मे पेय जलापूर्ति की स्थिति, पानी की निकासी की स्थिति, घरो के कूडा करकट एव ठोस अपशिष्ट के विसर्जन की स्थिति, मक्खी मच्छर एवं कीटाणुओ से बचाव की स्थिति, भोज्य पदार्थों के रख–रखाव की स्थिति, घरो के अन्दर वायु एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति ही विशेष रूप से प्रभावित करती है और उपरोक्त यही परिस्थितियां घरो में रहने वाले व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं। यदि व्यक्ति की आय कम होगी तो स्वाभाविक रूप से अच्छे वातावरण में न रह पायेगा और न ही खानपान की समुचित व्यवस्था कर पायेगा और कीटाणु के प्रकोप से ग्रसित होने की स्थिति मे लोग डायरिया, पेचिश, मलेरिया, पीलिया, चेचक, निमोनिया, टीबी टायफाइड अनेक तरह के चर्मरोग, खासी जुखाम व अनेक तरह की पेट की बीमारियो से ग्रसित हो जाते है।

उच्च आय वर्ग के आवासीय पर्यावरण के अध्ययन से यह पता चला कि उनमें उपरोक्त बीमारियां कम होती है। ऐसे लोगों में उच्च रक्तचाप एवं हृदय रोग तथा मानसिक तनाव जैसी बीमारिया होती है। विश्लेषण से यह पता चला कि गरीबी अथवा आर्थिक अभाव मे जीने वाले व्यक्ति का स्वज्ञस्थ्य पर्यावरणीय कारणो से प्रभावित होता है क्योंकि पर्यावरण एवं गरीबी का स्वास्थ्य पर प्रभाव पडता ही है। वास्तव मे अर्थाभाव के कारण ही व्यक्ति को उपयुक्त पर्यावरणीय वातावरण एव आवास सुलभ नही हो पाता। ज्यो–ज्यों व्यक्ति को आर्थिक स्थिति मे सुधार आता है वह अपने रहन–सहन के तौर तरीके बदलता है। फलस्वरूप उसके परिवार मे होने वाली बीमारी कम होने लगती है क्योकि उस स्थिति में वह खाने–पीने

की चीजो के रख–रखाव तथा साफ–सफाई एव पेयजल आदि पर विशेष ध्यान रख पाता है। वस्तुत बीमारी का कारण बीमारी से बचने वाले उपयो पर ध्यान न देने के कारण होता है।

इस शोध कार्य मे प्रश्नोत्तरी के माध्यम से 1580 घरो का सर्वेक्षण किया गया इसमे विभिन्न आय वर्ग के (अत्यधिक कम आय वर्ग के 20 13 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 17 91 प्रतिशत, मध्यम आय वर्ग के 26 07 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 23 10 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 12 79 प्रतिशत) घरो का व्यक्तिगत सर्वेक्षण वर्ष 1999–2000 एवं 2001 में किया गया। पिछले अध्याय मे वर्णित सर्वेक्षण के माध्यम से सकलित आकडों के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि आर्थिक पहलू ही आवासीय पर्यावरण को अधिक प्रभावित करता है। पर्यावरण दृष्टिकोण से महानगरो पर बहुत से शोध कार्य किये जा चुके हैं एव किये जा रहे है परन्तु छोटे–छोटे नगरों पर इस दृष्टिकोण से कम ध्यान दिया गया है। जौनपुर नगर का चयन इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखकर किया गया। भारत के नगरो में रहने वाले 75 प्रतिशत लोग छोटे नगरों में ही निवास करते है। छोटे नगरो में बडी–बड़ी समस्यायें हैं इन समस्याओं का अध्ययन गहनता से किया जाना आवश्यक है। इसलिए जौनपुर नगर के आवासीय पर्यावरण का अध्ययन करना उचित समझा गया।

सामान्यतया इस अध्ययन मे निम्नलिखित बाते उद्घाटित होती है।

जौनपुर नगर मे जनसख्या की वृद्धि अधिक है। सडकों की चौड़ाई कम होने के कारण नगर में प्रायः यातायात अवरूद्ध होता रहता है। वार्ड नं. 14 ओलन्दगंज, 15 नखास, 18 मण्डी नसीब खां, 20 मुफ्ती मुहल्ला, 21 ताडतला, 22 अबीरगढ़ टोला, 23 उर्दू, 24 ख्वाजगी टोला, 25 ढालगर टोला, 26 मीरमस्त वार्ड अत्यधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र नगर के मध्य भाग मे स्थित पुराने बसे हुए क्षेत्र है। ज्यो–ज्यो शहर के मध्य भाग से हम दूर हो जाते है जनसख्या का घनत्व कम पाया जाता है।

जौनपुर नगर के सर्वेक्षण मे यह पता चला कि औसत रूप से एक मकान मे एक से अधिक परिवार रहता है। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकडे से पता चलता है कि एक मकान मे 1 1 से 1.87 परिवार निवास करता है। मुस्लिम बाहुल्य आबादी क्षेत्र वार्ड नं. 20 (मुफ्ती

मोहल्ला) मे एक मकान मे औसत 3 से 4 परिवार रहता है। इस तरह के परिवार मे मकान मालिक व किरायेदार दोनो रहते है। इस वार्ड मे प्रतिदिन मजदूरी करने वाले और छोटा व्यापार करने वाले लोग रहते है। नगर के वार्ड न 8, 20, 21 मे एक मकान मे औसत रूप से सर्वाधिक लोग निवास करते है। वार्ड न 8 हुसेनाबाद मे किरायेदार के रूप मे नौकरीपेशा कर्मचारी व मजदूर परिवार रहते है। इस वार्ड मे हिन्दुओ की सख्या ही अधिक है। वार्ड न 20, 21 मुफ्ती मुहल्ला व ताडतला मे अधिकाश नुसलमान रहते है। इस क्षेत्र के मकानो मे किरायेदार के रूप मे छोटे व्यापारी, दुकानदार, बीडी मजदूर, सिलाई का काम करने वाले, जूता व कपडे का कारोबार करने वाले लोग निवास करते है। गोमती नदी नगर को दो भागो में बाटती है जिसमे हुसेनाबाद मुहल्ला नदी के पूर्वी भाग मे पडता है और ताडतला व मुफ्ती मुहल्ला नदी के पश्चिमी भाग मे पडता है।

साक्षरता की दृष्टि से वार्ड न 3, 6, 8, 14, 15 मे 75 प्रतिशत से अधिक शिक्षित लोग निवास करते है। वार्ड न 6 और 8 मे (वाजिदपुर, हुसेनाबाद) अधिकाश शिक्षक व शिक्षण सस्थाओ से जुडे हुए लोग रहते है। इसी वार्ड मे (हुसेनाबाद) नगर का लब्ध प्रतिष्ठित तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिलकधारी इण्टर कालेज, महिला महाविद्यालय, मुक्तेश्वर प्रसाद महाविद्यालय, बीआरपी इण्टर कालेज, मुक्तेश्वर प्रसाद बालिका इण्टर कालेज, जनक कुमारी माध्यमिक विद्यालय, नेहरू बालोद्यान, सन्त प्रसाद प्राइमरी पाठशाला सहित कई अन्य नर्सरी स्कूल स्थित है।

सर्वेक्षण मे विभिन्न घरो की आय मे अधिक अन्तर पाया गया।38 प्रतिशत घरो मे 1500 से कम या 1500 से 3000 रूपये प्रतिमाह की दर से आय वर्ग वाले व्यक्ति पाये गये। 26 प्रतिशत मकानों में रहने वाले व्यक्तियो की आय 3000–5000 रू0 तक है जबकि 36 प्रतिशत मकानो मे रहने वाले व्यक्तियो की आय 5000 से अधिक है। इस प्रकार नगर मे 64 प्रतिशत मकानो मे रहने वाले लोग कम आय वर्ग या मध्यम आय वर्ग के हैं।

पूर्व में दिये गये विश्लेषण से निम्नलिखित सामान्य निष्कर्ष निकाले गये :-

सर्वाधिक तीव्र पर्यावरणीय समस्याओ को गरीब घरो के लोग झेलते है जिसका उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पडता है। इन लोगो के पास पर्याप्त आकार का बडा घर नही है एव उसमे वातायन की व्यवस्था भी नही पायी जाती। इन घरो मे एक कमरे मे ही अधिक सख्या मे लोग रहते है। घर मे शौचालय नही है और घर के अनुपयोगी पानी को निकालने के लिए नाली भी नही बनी हुई है। पानी एकत्रित होने से एव गन्दगी होने से मक्खी मच्छर का प्रकोप बना रहता है। कम आय वर्ग वाले घरो मे मुख्य रूप से यह देखा जाता है कि उपलब्ध किसी ससाधन का अधिक से अधिक लोग उपयोग करते है जैसे कमरे का, शौचालय का, रसोई का आदि जबकि उच्च एवं अति उच्च आय वर्ग के घरो मे प्रत्येक सदस्य का अपना अलग कमरा होता है। प्रत्येक घर का पानी का कनेक्शन अलग होता है। एक घर मे एक से अधिक निजी शौचालय होता है, पानी व कूडा करकट फैला नहीं होता है।

कई प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें आपस में सम्बन्धित हैं। इन्हें अलग–अलग नही बाटा जा सकता। कभी–कभी किसी एक पर्यावरणीय समस्या से बचाव के लिए जो उपाय अपनाये जाते है वह दूसरी पर्यावरणीय समस्या के कारण होते है। जैसे मक्खी, मच्छर से बचाव के लिए डीडीटी का छिडकाव किया जाता है। एव मच्छर अवरोधी अगरबत्ती या टिकिया को जलाया जाता है जो श्वास सम्बन्धी बीमारी का कारण बन सकता है। कम आय वर्ग वाले लोग कम पैसे खर्च करके तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (Fast Food) खरीदते हैं जो कि डायरिया, पेचिश का कारण बनता है और कभी–कभी शरीर पर जहरीला प्रभाव छोड़ता है। निम्न आय वर्ग के लोग भोजन पकाने के लिए लकड़ी, गोबर के कडे व सूखी पत्तियो का प्रयोग ईंधन के रूप मे करते है जिससे उनके घरो मे अधिक धूंआ तो होता ही है साथ ही आसपास स्थित घरो मे भी इसका प्रभाव बहुत खराब पडता है।

धनी घरों मे उन सुविधाओ का अभाव नहीं होता जिनकी कमी से घर मे पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न हो सकती है परन्तु ये घर भी खराब पर्यावरण से प्रभावित हो सकते है। यदि इनके घर के आसपास के घरो का पर्यावरण ठीक न हो। इस नगर के मुहल्लो में उच्च आय वर्ग एवं कम आय वर्ग के घर अलग–अलग (दूरी पर) नही बसे हुए हैं। अधिकांश मुहल्लो

मे विभिन्न आय वर्ग के घर सटे हुए पाये जाते है। गरीब घरों के लोग जिनका पर्यावरण को प्रदूषित करने मे हाथ बडा होता है। अपने घरो के कूडा करकट को घर के सामने फेक देते है। इनके घरो का अनुपयोगी पानी घर के सामने या पीछे इकट्ठा होता है। इन सब कारणो से मुहल्ले के सभी घरो मे मक्खी–मच्छर का प्रकोप बढ जाता है। सडक पर फैले कूडे से घृणित गध आती है जिससे सभी लोग कुप्रभावित होते है।

घरो के पर्यावरण से महिलाये, बच्चे व बूढे पुरूष सबसे अधिक प्रभावित होते है क्योकि ये अपना अधिक समय घर मे ही बिताते है। जबकि 65 प्रतिशत पुरूष वर्ग अपना 8 से 10 घण्टा घर से बाहर बिताते है। कम आय वर्ग के घरो की महिलायें विशेष रूप से खाना बनाने से उत्पन्न धूए से कुप्रभावित होती है।

घरो की आय, घरो का पर्यावरण एव घर के लोगो का स्वास्थ्य मे गहरा सम्बन्ध है। निम्न आय वर्ग के घरो मे पर्यावरणीय स्थिति अच्छी नही होती फलस्वरूप ऐसे घरो के लोग अतिसार, पेचिश, मलेरिया, चेचक विभिन्न प्रकार के चर्मरोग तपेदिक, पीलिया, टाइफाइड व अन्य कई तरह की बीमारियो से ग्रसित रहते हैं। जबकि उच्च आय वर्ग के लोगों के घरो की पर्यावरणीय स्थिति उत्तम होने से ये लोग उपरोक्त बीमारी से ग्रसित नहीं होते इन घरो के सदस्य उच्च रक्तचाप हृदयरोग व मानसिक तनाव जैसी बीमारी से ग्रसित होते है।

घरो मे पेयजलापूर्ति एव साफ सफाई का अन्योन्याश्र सम्बन्ध डायरिया एव पेचिश व अतिसार जैसे रोगों से है। इसके अतिरिक्त घरो मे शुद्ध हवा के न होने व पानी के निकासी का समुचित प्रबन्ध न होने तथा घरो के कूडा करकट एवं ठोस अपशिष्ट तथा जूठन के विसर्जन की समुचित व्यवस्था न होने तथा कीटाणु नाशक उपाय के न होने के कारण भी लोग मलेरिया, पीलिया व श्वास सम्बन्धी बीमारी से ग्रसित होते पाये गये। उच्च आय वर्ग के घरो मे पर्यावरणीय स्थिति अच्छी होने के कारण उपरोक्त बीमारियां नही के बराबर पायी जाती है। सरकार को ऐसे मुहल्लो मे जहा पर्यावरणीय स्थिति पानी की समुचित निकासी न होने सडक व गली कच्ची होने, पक्की नाली न होने, धूम्रयुक्त रसोई घर एव शौचालय की समुचित व्यवस्था न होने व कूडे के रख–रखाव द उनके हटाये जाने की व्यवस्था न होने के कारण अत्यन्त खराब है उनमे सुधार लाने की आवश्यकता है और लोगो मे पर्यावरण के प्रति जागरूक

होने के लिये समय–समय पर बीमारियो से बचने का सुझाव देने की आवश्यकता है। शासन से मिलने वाली सुविधा जैसे धूम्र रहित चूल्हा का उपयोग करने, शौचालय निर्माण के लिए मिलने वाली सहायता का उपयोग करने, शुद्ध जल पीने के लिए सुझाव देने तथा रोग निरोधक टीके लगवाने के लिए सरकारी कर्मचारियो द्वारा ऐसे मुहल्लो मे जाकर व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है। गरीब एव आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियो मे जागरूकता का अभाव रहता है और वे शासन स्तर से मिलने वाली उपरोक्त सुविधाओ से वचित रह जाते है। साथ ही साथ अपेक्षाकृत अधिक आय वाले व्यक्तियों को भी अपने आसपास के गरीब लोगों को उनके पर्यावरणीय स्थिति मे सुधार लाने हेतु सुझाव देने एवं यथाशक्ति सहयोग देने की आवश्यकता है।

नगर में विभिन्न स्तर के आवास :-

जौनपुर नगर के निम्न आय वर्ग के लोगों के आवास की समस्या जटिल है। उच्च एवं अति उच्च आय वर्ग के लोगो के मकान के सामने वृक्षारोपण तथा मकान के पीछे फलदार वृक्षों के बाग लगे हुए पाये गये। ऐसे मकानों में रहने वाले सदस्यों के अपने निजी उपयोग मे लाने वाले शयनकक्ष व शौचालय अलग–अलग है। मकानों के फर्श पर मुजैक लगा हुआ है तथा शौचालयो मे सगमरमर या टाइल्स बिछी हुयी रहती है। पेयजल को छानकर पीने के लिए नल मे यंत्र लगा हुआ मिला। पूरा मकान ईंट व कक्रीट से बना हुआ व अच्छी तरह से प्लास्टर किया हुआ एवं अत्यन्त आकर्षक ढग से सुसज्जित व हवादार मिला। केवल 42 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के एवं 41 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के लोग ही अपने निजी मकान मे रहते हैं। मध्यम आय वर्ग के घर छोटे हैं जिनमें कुछ कमरे है एव कुछ घरो मे निजी शौचालय भी नहीं है। अत्यन्त न्यून आय वर्ग के लोगो के आवास अनाधिकृत रूप से सडकों के किनारे खाली जमीन पर बने हुए पाये गये कुछ रेल की पटरियों के आसपास भी बने हुए देखे गये। ऐसे आवासों के बनने से झुग्गी झोपडी बहुल मुहल्लो का निर्माण हो जाता है। इन झुग्गी झोपडी मे केवल एक कमरा होता है और उसमे रहने वाले लोगों की सख्या अधिक होती है। कमरा हवादार नही होता है एवं घर में शौचालय होता ही नहीं है।

कमरे का उपयोग खाना बनाने सोने एव स्नान करने के लिए होता है। परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याये ऐसे आवासो मे रहने वाले व्यक्तियो के समक्ष आये दिन उत्पन्न होती है। सरकार को नगर क्षेत्र मे रहने वाले ऐसे गरीब तबको के व्यक्तियो की आवास समस्या को हल करने के लिए उपाय करना चाहिए। शोधकर्ता ने नगर के ऐसे गरीब तबको के आवास समस्या को हल करने के लिए निम्न सुझाव दिया है।

1– सरकार की तरफ से अन्य नगरो की भाति जौनपुर मे भी अत्यन्त गरीब तबको के लिए जो झुग्गी झोपडियो मे रह रहे है।, सरकारी खर्चे पर आवास बनाकर दिया जाय और ऐसे आवासो के आसपास पानी निकासी का साधन, स्वच्छपेय जलापूर्ति की व्यवस्था तथा रोशनी की व्यवस्था करायी जाय। निश्चित रूप से ऐसे गरीब तबको द्वारा स्वय प्रयास करके पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त आवास बना पाना सभव नही है।

2– परिवार नियोजन सम्बन्धी बातो का प्रचार–प्रसार शासन स्तर से निश्चित ही प्रभावकारी ढग से किया गया और इसका प्रभाव उच्च वर्ग व मध्यम आय वर्ग के लोगों मे शत–प्रतिशत हुआ है यह कहना अतिश्योक्ति न होगा किन्तु गरीब तबके के परिवारो को देखने से यह पता चला कि परिवार नियोजन सम्बन्धी बातो का प्रभाव इन परिवारों में नही है। इस सम्बन्ध में कठोर कानून न बनने से भी जनसख्या वृद्धि पर रोक नही लग पा रही है। अशिक्षित मुसलमान परिवारो मे इस दिशा मे उदासीनता ज्यादा पायी गयी है। इस सम्बन्ध मे बातचीत से यह भी ज्ञात हुआ कि मुस्लिम परिवार सरकार द्वारा चलायी गयी परिवार नियोजन की योजना को मजहब के खिलाफ मानते है। मुस्लिम धर्मावलम्बी मौलवी व मुल्लाओ को इस दिशा मे अपने स्वजातीय को जागरूक करने के लिए आगे आने की जरूरत है।

3– देश के बडे पूजीपतियों व उद्योगपतियों को झुग्गी झोपडियों मे रहने वाले गरीब तबके के लोगों के लिए पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त आवास बनाकर देने के लिए आगे आने की आवश्यकता है क्योकि सरकार ही अकेले इन समस्याओं का समाधान नही निकाल सकती।

4– शासन की तरफ से आवास के लिए उपयुक्त भूमि को अधिग्रहण कर आवास निर्माण की समस्या का निराकरण करना चाहिए।

5– जौनपुर नगर मे सीवर लाइन का बनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव में सड़क

के किनारे खुली गन्दी नाली का पानी बहता रहता है।

6– सिटी बोर्ड को यह अधिकार शासन द्वारा मिलना चाहिए कि वह नगर क्षेत्र मे आवश्यकतानुसार जमीन का अधिग्रहण कर सुलभ शौचालय का निर्माण कर सके जिससे उन लोगो को जिनके घर शौचालय नही है शौचालय की सुविधा मिल सके।

जौनपुर नगर में शौचालय एवं सफाई की स्थिति :-

जौनपुर नगर के मध्य भाग के अलावा बहुत से वार्ड ऐसे हैं जिनकी स्थिति पर्यावरणीय दृष्टि से काफी दयनीय है। आज भी इन वार्डो मे रहने वाले लोग खुले मैदान मे शौच करने जाते हैं और सूर्योदय के पहले व रात्रि में सडक के किनारे शौच करने के कारण इतनी गन्दगी हो जाती है कि उधर से गुजरना मुश्किल हो जाता है। ये वार्ड है– मतापुर (रामनगर भडसरा मुहल्ला), कटघरा, उमरपुर वार्ड के नईगज मुहल्ले का कुछ क्षेत्र चाचकपुर के कुछ क्षेत्र, उर्दू के कुछ क्षेत्र, हरखपुर वार्ड के चितरसारी व बेसहूपुर मुहल्ले मे, ईसापुर वार्ड के सुल्तानपुर हाथ व आराजीगुर्जी खानी व सुक्खीपुर मुहल्ले में, भण्डारी वार्ड के कुछ क्षेत्रों में, पानदरीबा वार्ड के प्रेमराजपुर मुहल्ले मे, मुफ्ती मुहल्ला वार्ड के कुछ क्षेत्रों में। उच्च आय वर्ग के लोगो के मकानो मे बने हुए स्वच्छ शौचालय सेप्टिक टैंक से जुडे हुए है। मध्यम आय वर्ग 51 प्रतिशत लोगो ने बताया कि उनके घर मे निजी शौचालय की व्यवस्था नहीं है। कम आय वर्ग के लगभग सभी घरों मे शौचालय की सुविधा नही है ऐसी स्थिति में ये लोग या तो सुलभ शौचालय का प्रयोग करते हैं या खाली पडे मैदान में जाते हैं। छोटे–छोटे बच्चे सडक के किनारे शौच करते हुए पाये गये। सरकार को एव अन्य समाज सेवी सस्थाओं को शौचालय की समस्या के समाधान के लिए अधिक सख्या मे सुलभ शौचालय बनाना चाहिए। सार्वजनिक शौचालय की सफाई के लिए सिटी बोर्ड को ध्यान देना चाहिए।

जौनपुर नगर में सुलभ शौचालय की स्थिति :-

इस नगर मे कुल सोलह सुलभ शौचालय है जो भिन्न–भिन्न वार्डो में है। इस प्रकार नगर के 26 वार्डों मे औसत प्रति वार्ड एक सुलभ शौचालय भी नही है। सर्वेक्षण मे

सिपाह (चाचकपुर वार्ड मे) मुहल्ले मे एक, हुसेनाबाद वार्ड के कलेक्ट्री चौराहे पर एक, कलेक्ट्री कचहरी मे एक, पुलिस लाइन के गेट पर एक, दीवानी कचहरी मे एक, पालिटेक्निक चौराहा (उमरपुर वार्ड) पर एक, रोडवेज चौराहे पर एक, भण्डारी स्टेशन पर एक, मरदानपुर मुहल्ला में एक, कोतवाली चौराहे पर एक, खासनपुर मे (अहियापुर वार्ड मे) एक, केरारकोट मुहल्ला मे एक, मुफ्ती मुहल्ला वार्ड मे एक, ईशापुर वार्ड मे एक, रौजा अर्जन मे एक व सब्जीमडी मे एक सुलभ शौचालय स्थित है। इनमे से 50 प्रतिशत शौचालयो मे उचित ढग से साफ–सफाई की व्यवस्था नही है।

जौनपुर नगर में नाली की स्थिति एवं अनुपयोगी पानी का अपवाह :-

इस नगर के उच्च आय वर्ग के मकानो मे अनुपयोगी पानी कि निकास के लिये सिमेन्ट से बनी नालियां है जो सीधे सडक के किनारे बनी खुली नाली से मिलती है। यह स्थिति प्राय· नगर के मध्य भाग मे स्थित सभी वार्डों में है। नगर के बाहरी छोर पर स्थित वार्ड मे पानी की निकासी नाली मे न होकर खेतो मे हो जाती है या तालाबनुमा गड्ढों में भी पानी जमा होता है जिससे एकत्रित गड्ढे मे जमा पानी से मच्छर व कीटाणु तथा दुर्गन्ध उस क्षेत्र के पर्यावरण को प्रभावित करते है। यह स्थिति नगर के कई वार्डों में देखी गयी जैसे उमरपुर में बाईपास के किनारे नाला, मतापुर मे मुहल्ला हिन्दी पट्टी मे गड्ढा, जगदीशपट्टी मे गड्ढा, हरखुपर वार्ड के चितरसारी मुहल्ले मे, तालाबनुमा गड्ढा, ईसापुर वार्ड में मुहल्ला बोदकरपुर, आराजीगुर्जी खानी व सुल्तानपुर हाय मे गन्दा पानी, एकत्रित पाया गया। चाचकपुर वार्ड के सिपाह मुहल्ले, ओलन्दगंज के कालीकुत्ती मुहल्ले में व जोगियापुर मे, रासमण्डल वार्ड के बलुआघाट मुहल्ले मे, पान दरीबा वार्ड के प्रेमराजपुर मुहल्ले में व बाजार भुवा मे गड्ढेनुमा स्थान पर गन्दा पानी एकत्रित मिला। उच्च आय वर्ग के आवास के सामने या आसपास जल जमाव की स्थिति नही पायी गयी। न्यून आय वर्ग के आवासीय क्षेत्र मे कूडे करकट का विसर्जन उपयुक्त स्थान पर न किये जाने के कारण नालियो मे कूडा करकट जमा हो जाता है और गन्दा पानी सडक पर आने लगता है।

जौनपुर नगर मे सीवर लाइन न होने के कारण गन्दे पानी के अपवाह के

लिए नालियो की सफाई व आवश्यकतानुसार पक्की नाली के निर्माण की आवश्यकता है। नगर के आवासीय पर्यावरण मे सुधार लाने के लिए विकास कार्यों मे प्रथम वरीयता उपयुक्त नाली निर्माण को ही दिया जाना चाहिए। इस नगर के पानी निकासी के लिए बनी नाली की व्यवस्था त्रुटिपूर्ण है जिससे बरसात के दिनो मे जहा का नीचा उच्चावच्च है पानी भर जाता है। यह स्थिति नगर के अधिकाश भागो को हो जाती है। इस स्थिति से निजात पाने के लिए इस नगर मे सीवर लाइन के निर्माण पर विशेष रूप से ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।

घरों के कूड़ा करकट के विसर्जन की स्थिति :-

कूडा करकट एकत्रित किये जाने वाले स्थान से भी उस क्षेत्र के आसपास रहने वाले लोगों को परेशानी का सामना करना पडता है, क्योकि कूडा सिटी बोर्ड की तरफ से प्रतिदिन नही उठाया जाता है। अति उच्च व उच्च आय वर्ग के घरों को छोडकर प्राय. सभी घरों मे बताया गया कि कूडा खुले बर्तन मे रखा जाता है एवं उसे सड़क के किनारे विसर्जित किया जाता है। इसके कारण ऐसे क्षेत्रो मे स्थित घरों में मक्खी मच्छर अधिक संख्या में पाये जाते है ऐसा बताया गया। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग वाले घरो में कूड़ा बद बरतन मे रखा जाता है एव उसका विसर्जन कूडा रखने के स्थान पर होता है न कि सडक के किनारे कही भी। कम आय वर्ग वाले घरो के सामने विशाल मात्रा में कूडा करकट बिखरा हुआ पाया गया। पूछने पर पता चला कि नगर पालिका के स्वच्छकारो द्वारा यहा से कूडा महीने मे एक बार उठाया जाता है एव यहा रहने वाले लोग निजी स्वच्छकारो द्वारा (अलग से पैसा देकर) क्षेत्र की सफाई नही करवाते है। उच्च आय वर्ग के घरों ने बताया कि उनके घर से व मुहल्ले से कूडा लगभग प्रतिदिन निजी स्वच्छकारो द्वारा हटवा दिया जाता है। नगर के सर्वेक्षण से यह पता चला कि नगर पालिका द्वारा सप्ताह मे एक दिन ही जगह–जगह से एकत्रित कूडत्रा को ट्रैक्टर द्वारा उठाये जाने के कारण एकत्रित कूड़ा कई दिनों तक पडे रहने के कारण जानवर उसे और फैला देते है। व हवा से कूडा यत्र तत्र बिखर जाता है। बरसात के दिनों में इसका और विकृत रूप हो जाता है। अत. पर्यावरण सही रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि कूडा रखने वाले स्थान गड्ढानुमा हो और उस स्थान को ईंट की दीवार से घिरा होना चाहिए

अथवा इस नगर में जगह–जगह कन्टेनर रखने की व्यवस्था होनी चाहिए जो इस नगर मे बिल्कुल नही है।

घरों में कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव :-

कीट पतग, मक्खी मच्छर की उपस्थिति से घर के आवासीय पर्यावरण की व्याख्या स्वय हो जाती है। क्योकि ये विभिन्न प्रकार की बीमारियो के कारण (जनक) होते है। इस नगर मे उपयुक्त नाली की व्यवस्था न होने के कारण व जगह–जगह कूडा एकत्रित रहने के कारण कीटाणु व मक्खी मच्छर के उत्पन्न होने व पनपने की आदर्श दशाये पायी जाती है। अधिकाश घरो मे चूहे, चपडे, मलेरिया फैलाने वाले एनाफिलीज मच्छर, मक्खिया, छोटे–छोटे कीटाणु, सभी कम/अधिक मात्रा मे पाये जाते हैं। मक्खिंया विशेषकर उन घरों मे पायी जाती है जहां आस–पास कूडे के साथ मल भी पडा रहता है। कम आय वर्ग वाले घरो मे कीट व मक्खी मच्छर से बचाव के लिये कोई उपाय नहीं अपनाये जाते हैं एवं इनके घर में रोशनदान व खिडकी का भी अभाव पाया जाता है। इस कारण इन घरों में मक्खी मच्छर कीट आदि अधिक पाये जाते हैं। मध्यम व उच्च आय वर्ग के घरो में कीटाणु व मक्खी मच्छर से बचाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाये जाते हैं। सिटी बोर्ड की तरफ से कम आय वर्ग वाले घरों के आसपास मक्खी मच्छररोधी दवाओ का छिडकाव समय–समय पर करवाना प्रभावकारी हो सकता है साथ ही साथ अधिक से अधिक लोगों को मच्छर से बचाव के लिए मच्दरदानी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे मलेरिया जो कि यहा बहुत फैलता है से निजात पाया जा सकता है। सुलभ शौचालय प्रत्येक वार्ड में पर्याप्त संख्या में बनवाये जाने चाहिए जिससे वे लोग जिनके घर शौचालय नहीं है सड़क के किनारे या खेत में मल त्याग के लिये न बैठे।

जौनपुर नगर के घरों में वायु प्रदूषण एवं उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव :-

घर मे शुद्ध वायु का होना स्वस्थ्य जीवन के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि औसत रूप से व्यक्ति सोलह घटे घर मे ही व्यतीत करता है। घर की वायु की गुणवत्ता इस

बात पर निर्भर करती है कि भोजन पकाने के लिए किस प्रकार के ईधन का प्रयोग किया जाता है एव भोजन कहा पकाया जाता है, घर मे धूम्रपान होता है अथवा नही होता, बाहर के स्रोतो से घर मे धूआ आता है अथवा नही, कमरे हवादार है? रोशनदान खिडकी है अथवा नही।

जौनपुर नगर मे उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे भोजन पकाने के लिए अलग से रसोई के कमरे का उपयोग किया जाता है। भोजन पकाने के लिए गैस का ही उपयोग किया जाता है। घर मे धूम्रपान बहुत कम घरों मे सीमित मात्रा मे ही किया जाता है। घर के कमरे हवादार है जिससे बाहर के स्रोतो से आया धूआ शीघ्र ही निकल जाता है। मध्यम आय वर्ग के भी 71 प्रतिशत घरो मे रसोई का कमरा है, परन्तु इस आय वर्ग के 40 प्रतिशत घरो मे ही भोजन पकाने के लिए गैस का प्रयोग होता है बाकी लोग मिट्टी के तेल का प्रयोग ईंधन के रूप मे करते है। निम्न आय वर्ग के सभी घरो मे रसोई का कमरा बना नही पाया गया ये लोग जिस कमरे मे रहते सोते है उसी मे खाना भी बनाते हैं एवं सस्ते ईंधन का प्रयोग जैसे कोयला, लकडी, गोबर के कडे का प्रयोग किया जाता है। घर मे धूम्रपान अधिक होता है। घर मे उचित वातायन की सुविधा नही है अत धूआं घर मे देर तक बना रहता है। परिणाम स्वरूप इन घरो के बच्चो व स्त्रियो मे श्वास सम्बन्धी बीमारी होने की सभावना अधिक रहती है। सरकार को ऐसे गरीब व्यक्तियो के लिए कम दाम में खाना पकाने वाली गैस मुहैया करानी चाहिए। इस समय मिट्टी का तेल भी प्रत्येक परिवार मे आवश्यकतानुसार उपलब्ध नही हो पा रहा है क्योकि सरकारी दुकानो की अपेक्षा खुले बाजार में मिट्टी का तेल इतने अधिक दाम मे मिलता है कि गरीब व्यक्ति उसे खरीदने की स्थिति मे नहीं रहता है। इसलिए सरकार को कम मूल्य मे छोटे गैस के सिलेण्डर की व्यवस्था करनी चाहिए एवं सरकारी दुकानो से मिट्टी का तेल पर्याप्त मात्रा मे मिलना चाहिए। गरीब को कम मूल्य में धूम्र रहित चूल्हा सरकार की तरफ से वितरित किये जाने की आवश्यकता है।

उत्तरदाताओं द्वारा घरों की पर्यावरणीय स्थिति में सुधार लाने के लिए दिये गये सुझाव :-

नगर के सभी आय वर्ग के लोगो ने यह सुझाव दिया कि अनुपयोगी जल

की निकासी खुली नाली से न होकर के बडे नगरो की भांति जमीन के अन्दर सीवर लाइन का निर्माण करके होनी चाहिए तथा प्रत्येक घरो के शौचालय से निकला गन्दा पानी सीवर लाइन से जोडा जाना चाहिए। अत्यन्त कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के 95 प्रतिशत लोगो ने जिनके घर शौचालय नही है सरकारी सुलभ शौचालय व प्रसाधन केन्द्र बनाये जाने की आवश्यकता को प्रथम वरीयता पर रखा है। मध्यम आय वर्ग के लोगो ने सिटी बोर्ड के सफाई कर्मियो द्वारा नालियो, सडको व गलियों की सफाई नियमित व ठीक ढंग से न किये जाने की शिकायत की। कई मुहल्लो मे महीनो तक एकत्रित कूडा को सिटी बोर्ड द्वारा न उठवाये जाने की शिकायत की गयी। निम्न आय वर्ग के 90 प्रतिशत लोगो ने सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा मे न किये जाने की शिकायत की और यह बताया कि पर्याप्त पानी न मिलने से ये लोग विवश होकर येन–केन–प्रकारेण दूषित जल का प्रयोग करते हैं। अत्यधिक उच्च आय वर्ग के कुछ घरो मे रहने वाले लोगों ने आवासीय पर्यावरण के खराब रहने जैसी कोई समस्या को नही बताया परन्तु सभी ने ध्वनि प्रदूषण को एक समस्या के रूप में अवश्य बताया।

शोधकर्त्री के सूझाव_नगर मे कूडा करकट एव ठोस अपशिष्ट विसर्जन के लिए सिटी बोर्ड द्वारा जगह–जगह कन्टेनर रखा जाना चाहिए जिसे लोग सड़क पर यत्र–तत्र कूडे का विसर्जन न करे। इस सम्बन्ध मे लोगो को जागरूकता पैदा किये जाने की आवश्यकता है। निम्न आय वर्ग के जिन व्यक्तियो के लोग ईंधन के रूप मे लकडी, गोबर के कडे, सुखी पत्तियों का उपयोग करते है उनके लिए सस्ते मुल्य पर सरकार की तरफ से गैस मुहैया कराया जाना चाहिए यदि यह सम्भव न हो तो धुम्ररहित चूल्हे का उपयोग करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। निम्न आय वर्ग के लोगों को केरोसीन उनकी आवश्यकतानुसार कम मूल्य पर दिये जाने की आवश्यकता है। बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीब व निम्न आय वर्ग के लोगो के लिए मूलभूत सुविधाए जैसे शुद्ध पेयजल, पक्की नाली, विद्युत, पक्की गली, पक्के आवास की सुविधा प्रदान किये जाने की आवश्यकता है। नगर मे सर्वत्र सीवर लाइन का जाल बिछाकर घरों के गन्दे पानी व नालियो के पानी को सीवर लाइन के माध्यम से निष्कासित किये जाने की आवश्यकता है। स्वच्छकारो की संख्या बढ़ाकर सफाई कार्यों में गुणात्मक सुधार लाने की

आवश्यकता है। नगरवासियो मे सफाई से रहने आसपास गन्दगी न होने आदि बातो की समझ विकसित कराई जाने की आवश्यकता है।

नगर मे सभी वार्डों मे आवश्यकतानुसार शुलभ शौचालय बनाये जाने की आवश्यकता है क्योकि इस नगर मे प्रति वार्ड औसत एक सुलभ शौचालय की व्यवस्था नही है। नगर मे पेयजल की समस्या के समाधान के लिए सरकार की तरफ से इण्डिया मार्क टू चापाकल आवश्यकतानुसार मोहल्लो मे लगाये जाने की आवश्यकता है। आर्थिक दृष्टि से स्वालम्बी बनाये एव रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठाने के लिए उद्योग लगाये जाने की लिए आवश्यकता है जो इस शहर मे नही के बराबर है।

जौनपुर नगर के 26 वार्डों मे स्थित निम्न आय वर्ग के व्यक्तियो के आवासो का सर्वेक्षण करने से पता चला कि इन व्यक्तियो के पास पर्यावरण से सम्बन्धित मूलभूत सुविधाये जैसे पक्की नाली, शौचालय, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था और विद्युत की सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसको (ऐसे परिवार वाले व्यक्तियों) को मुहैया कराया जाना आवश्यक है। ऐसे प्रत्येक मुहल्लो मे रहने वाले अति निम्न आय वर्ग की श्रेणी में आने वाले सदस्यों की संख्या निम्नलिखित है।

क्र स	अति निम्न आय वर्ग के मुहल्ले व मलिन बस्ती का नाम	निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या
1	तूतीपुर	150
2	मकदूमशाह अढन	200
3	ताडतला	300
4	कोठियावीर	275
5.	दतासर	50
6.	प्रेमराजपुर	245
7	सराय मुहामिद	225
8	अर्जन	175
9	गदर अरजानी	165

10	चितरसारी	235
11	जियनीपुर	100
12	कायमपट्टी (हरखपुर)	50
13	पान दरीबा	250
14	जगदीशपुर	45
15	समोधपुर	65
16	मैनीपुर	65
17	बसेहूपुर	45
18	मिश्रपुर	135
19	आलमगज	180
20	मीरमस्त	300
21	हमाम दरवाजा	260
22	मुहालगाजी	75
23	खालिजपुर	90
24	मुफ्ती मोहल्ला	195
25	शेख मुहामिद	180
26	सुक्खीपुर	125
27	मुल्ला टोला	150
28	मकदूमशाह बडे	45
29	रासमण्डल	225
30.	चाचकपुर	125
31.	सिपाह	165
32.	बलुआघाट	225
33.	केरारकोट	65
34	मछरहट्टा	55

35	ख्वाजादोस्त	150
36	खासनपुर	225
37	वाजिदपुर (उत्तरी)	75
38	ढालगर टोला	150
39	ख्वाजगी टोला	125
40	अहियापुर (बासकोट बस्ती दक्षिण)	75
41	शहाबुद्दीनपुर	45
42	धरनीधरपुर	45
43	बल्लोच टोला	85
44	रिजवी खा	65
45.	अलफस्टीनगज	165
46.	शेखपुर (सूरजघाट)	25
47	तारापुर	30
48	भौराजीपुर	45
49	उर्दूबाजार	275
50	फिरोजशाहपुर	225
51	मण्डी नसीब खां	90
52.	आरजी गुरजी खाना	125
53	रसूलाबाद	175
54	खुरचनपुर	100
55	ख्वाजगी टोला	125
56	आदमपुर	45
57	भण्डारी	140
58	जोगियापुर	
59.	जीतापट्टी	40

60	बोधकरपुर	50
61	शकरमण्डी सुल्तानपुर	140
62	आदम अकबरपुर	15
63	मरदानपुर	80
64	नक्खास	200
65	जहांगीराबाद	85
66	मालीपुर	60
67	वाजिदपुर धोबियान	175
68	मतापुर	275
69	उमरपुर	150
70.	परमानतपुर	300
71	नईगज	300
72.	मियापुर	250
73	शेषपुर	60
74	कटघरा	175
75	तारापुर कालोनी	150
76.	तारापुर तकिया	70
77	हुसेनाबाद	225
78	अहमद खा मण्डी	50
79.	हरिबन्धनपुर	50
80	किशुन	125
81	कालीकुत्ती	150
82	कन्हईपुर	60
83	सराय	50
84	ताडतला हरि0 बस्ती	50
85	दरीबा	75

इस सम्बन्ध मे मेरे द्वारा निम्न आय के मुहल्ले व मलिन बस्ती मे निवास करने वाले व्यक्तियो के आवास के पर्यावरण को सुधारने के लिए किये गये प्रयास के बारे में प्रोजेक्ट आफिसर 'जिला नगरीय विकास अभिकरण' (DUDA) जौनपुर से जानकारी प्राप्त की गयी तो उन्होने बताया कि जिन व्यक्तियो के पास उपयुक्त आवास नही है ऐसे व्यक्तियो की सूची विभागीय स्तर से बनवायी जा रही है व भविष्य मे वाल्मिकी अम्बेडकर योजना के तहत नगर क्षेत्र के अन्तर्गत जमीन खरीदकर 40 हजार रूपये प्रति आवस की दर से व्यय करके आवास निर्माण किये जाने की योजना है। इस योजना मे 20 हजार रूपये अनुदान के रूप में दिये जाने की योजना है। लेकिन इस नगर मे निवास करने वाले निम्न आय वर्ग के लोगों की सूची से यह प्रतीत होता है कि निकट भविष्य मे ऐसे व्यक्तियो के आवासीय पर्यावरण में सुधार होने की सभावना कम है क्योकि अब तक ऐसे मुहल्लों में निवास करने वाले व्यक्तियों को मूलभूत सुविधाये प्रदान करने के लिये सरकार की तरफ से जो धन आवंटित किये गये वह आवश्यकतानुसार बहुत कम है। पिछले कुछ वर्षों मे उपरोक्त कार्य के लिए जौनपुर नगर में सरकार की तरफ से जिला नगरीय विकास अभिकरण को दिया गया धन इस प्रकार है–

वर्ष 1999–2000– 20,46000

वर्ष 2000–2001– 47,39000

वर्ष 2001–2002– 36,57000

यह विभाग उपरोक्त धन से नाली का निर्माण, खडन्जा का निर्माण, सार्वजनिक चापाकल लगाने का काम व सडक निर्माण का काम बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत मलिन बस्तियों मे कराता है। यह विभाग 1984 से कार्यरत है परन्तु मलिन बस्तियों मे आज तक अपेक्षित सुधार नही हो सका है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण के दौरान मलिन बस्तियों में निवास करने वाले आम लोगो की शोधकत्री से शिकायत थी कि उन्हें सरकार द्वारा उनकी आवश्यकतानुसार मिट्टी के तेल की मात्रा तक नही मिलती है और जो पक्की नालियां बनायी गयी वह जगह–जगह टूट गयी हैं उनकी मरम्मत का काम भी नही किया गया जिससे नाली का पानी घर के आसपास बिखरा रहता है।

इस सम्बन्ध मे विशेष रूप से उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यदि सरकार द्वारा आवटित धन का ही सदुपयोग होता रहे तो धीरे–धीरे मलिन बस्तियों की सख्या घट जायेगी और उनके आवासीय पर्यावरण मे सुधार हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

(BIBLIOGRAPHY)

Altaf, A. Jamal, H., Whittington, D., 1992 'Willingness to Pay for water in Rural Punjab, Pakistan', water and Sanitation, Report 4 UNP- World Bank, Washington, D.C.

Ahmad, A.M. 1989, ' Housing Submarkets for the Urban Poor the case of greater Khartoum, the Sudan,' Enviroment and Urbanization, Vol. 1, No. 2, Nottinghum London, pp. 50-59.

Atkinson, S.J., 1993 'Urban Health in the Third World : A guide to the literature', Environment and Urbanization, Vol. 5, No. 2, Nottinghum, London, pp.146-151.

APHA. 1985, ' Standard Methods for the Examination of water and waste water' American public Health Association, Washington, D.C.

Aina, T.A. 1989, 'Many Routes Enter the Market place, Housing submarkets for the urban poor in metropolition, Logos, Nigeria, Environment and Urbanization, Vol. 1, No. 2, Nottinghum, London, pp. 38-49.

Audinarayan, N., October 1987, 'Environmental Santitation : A Study in a Village of Andhara Pradesh, Swasth Hindi, Vol. XXXI, No. 10, New Delhi, pp. 248-249.

Ahmad. M.S. Khan, T.A. 1993, Water Quality of Shallow Aquifers in Karwan-Sangar Sub Basin, District Aligarh, 'Chemical and Environmental Research, Aligarh, pp. 251-259.

Atiqur Rahman's research work, 1995. Topic Household environmental in Aligarh city.

Bhattacharya, et. al. 1978, Environmental Aspect of Human Settlements in Asia, Jaipur.

Bagchi, S.N., Dec. 1977, 'Environmental Healthe and pollution', 'Environmental pollution and Urban Administration, New Delhi, pp. 33-41.

Bourne, L.S., 1981. The Geography of Housing, London.

Bhattacharya, M., Dec. 1977, 'Role of Municipal Government in Pollution Control,' Environmental Pollution and Urban Administration, New Delhi, 62-65.

Brain Heenan, L.D., 1982 'Cigaratte Smoking among Newzelanders : evidence from the Census', Geogrphical Aspect of Health, London.

Biswas, D., Dutta, S.A., 1994. Combating the Smog and Noise in Cities, The Hindu Survey of the Environment, Madaras.

Bradley, D., et. al. 1991. 'A Review of Environmental health Impacts in Development Country Cities'. Discussion Paper. Urban Management Programme, World Bank. UNDAUNCHS.

Brady, J.E., 1986. 'Impact of Clean Air Legislation on Dublin Households', Irish Geography, Belfast, Vol. 19, pp. 41-52.

Basu, R. October, 1992. ' Poisoned Waters', Nation and the world, New Delhi, pp. 5-10.

Benneh, G., et. al. 1993, Environmental Problems and the Urban Households in the Greater Accra Metropolitan Area (GAMA) Ghana, Stockholm Environment Institute, Stockholm.

Bhargava, G.,1981 Urban Problems and Perspectives, New Delhi.

Bawsin, J.A. Doornkamp, J.C., 1973. Evaluting human Environment, Great Britain.

Chand, D., June 1987, 'Planning for a Sound Housing', Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 6, N. Delhi, pp. 152-156.

Chandra, D., Shukla, M., June 1987. 'Adverse Health Effects of Environmental Pollutants', Swasth Hind Vol. XXXI, No. 6, New Delhi, pp. 136-140.

Chohan, S.K., 1988, Impact of Urban Traffic on Urban Environment', Institute of Town planners India Journal, Vol. 6, No. 3, New Delhi, pp. 11-13.

Chengappa, R. Rajghatta, C. June 15, 1989. ' Poison in Your Food', India Today, New Delhi, pp. 74-83.

Cairneros, S. et. al. (eds.) 1990. The Poor Die Young, Housing and Health in the Third World, Earthsean, London.

CSE., 1989. ' The Environmental Problems Associated with India's Major Cities' Environmental and Urbanization, Vol. 1, No. 1, Nottinghum, London, pp. 7-15.

Casteneda, F.C., 1988, The Risk of Environmental Degradation in Bagota, Columbia, Environment and Urbanziation, Vol. 1, No.1, Nottinghum, London, pp. 16-21.

Chapman, C.P., 1977, Human and Environmental system, London.

Cunniff, P.F., 1977. The Environmental Noise Pollution, New York.

Cervemy.R.S., 1989, ' Shadowing of Non-Polluted locations by urban polulation', Annals of Association of American Geographers, Vol. 79, No. 2. Washington pp. 242-253.

Chen, B.H. et. al. 1990. 'Indoor Air Pollution in Developing Countries'. WHO Statistics Quarterly, 43, pp. 127-138.

Chaturvedi, A.C., Dec. 1977. ' Environmental Health Problems in Urban Areas', Environmental Pollution and Urban Administration, Seminor Proceedings, New Delhi, pp. 28-32.

Detwyler, T. R., 1971. Man's Impact on Environment, McGraw Hill, NewYork.

Davis, A., 1971. 'Let us Eat Right to Keep Fit, London.

England, R., Ahnwick, D., 1982, ' What Low Income Families Afford for Housing' HABITAT International, Vol. 6, No. 4, Oxford, pp. 441-457.

Ellegard, A., Egneus, H. 1992, Health Effects of Charcoal and Wood Fuel Use in Low Income Households in Lusaka, Stockholm Environment Institute, Stockholm.

Essey, S.A. Feachem, R.G., 1985. Interventions for the control of Diarrhoeal Diseases Amomg Yong Children. Improving water supplies and excreta disposal facilities bulletin of the World Health Organization, pp. 757-772.

Emery, J., 1982. 'Environmental Education through Geography'. Phillipine Geographical Journal, Vol. XXVI, No. 4, Manila, pp. 53-57.

Franke, R. G., Franke, D.N., 1975. Man and Changing Enironment, NewYork.

Fazal, S., 1993, 'Influence of Changing Prices on cropping pattern in the District of Upper Ganga Yamuna Doab, U.P.' Unpublished Thesis, A.M.U., Aligarh.

Ghos, S., Oct. 1987, 'Acute Respirtory infection', Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 6 New Delhi, pp. 241-242.

Grove, N., 1988, 'An Air of Uncetainty', Span, New Delhi, pp. 42-48.

Ghazali, F. A. 1992, 'Poisoned Water', Nature and the World, New Delhi, pp. 28-29.

Hoque, B. et. al., 1994' Sanitation in a Poor settlement in Bangladesh: A Challenge for the 1990s'. Environment and Urbanisation, Vol. 6, No. 2, Nottinghum, London, pp. 79-85.

Hasan, A. Ali, A.A., 1992. 'Environmental Problems in Pakistan : their origins and development and the threats that they pose to sustainable development', Environment and Urbanization, Vol. 4, No. 1, Nottinghum, London, pp. 8-21.

Hamza, A., 1989, 'An Apprasal of Environmental Consequences of Urban Development in Alexandria, Egypt' Environment and Urbanization, Vol. 1, No. 1, Nottinghum, London, pp. 22-30.

Hyma, B., et. al. 1989. ' A Review of Urban Malaria Control Situation and Related Environmental Issues in Tamil Nadu, India. In G. Salam, and E. Jeanec (eds.) urbanization of Sante dans letiers monde. Transition epidemidogique changement social it soins de sante primaries, pp. 159-177.

Hinkle, Jr. L.E., Loring, W.C., 1979. 'The Effects of the Man Made Environment on Health Behaviour, London.

Harris, A., et. al. 1975. Man's Environment, Italy.

Hussey, A., 1994. 'Urban Air Pollution in Mega Cities of the World. Joint Report by (WHO) and (UNEP) Geographical Review, Vol. 84, No. 1, Kansas , pp. 177-119

Izeogu, C.V., 1989. 'Urban Development and the Environment in Port Hardcourt'. Environment and Urbanization. Vol.1, No.1, Nottinghum, London, pp. 59-68.

Jacobi, P.R., 1994. "Households and Environment in the city of Sao Paulo, Problems Perceptions and Solution.' Environment and Urbanizaion. Vol. 6, No. 2, Nottinghum, London, pp.87-110.

Jain, M.P., Lakshmipathi, N., Oct. 1987. ' Environmental Radio Activity and Health', Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 10, New Delhi, pp. 237-240.

Jimenez, R.D., Velasquer S.A., 1989. 'Metropolition Manila : A frame work for its Sustained Development, Environment and Urbanization, Vol. 1, No. 1, Nottinghum, London, pp. 51-58.

Jalees. K., 1986. 'Pollution beings at home', Times of India, 13th Nov.

Jones, K., Moon, G., 1987. 'Health Disease and Society', A Critical Medical Geography, London.

Jacobi, P.R., 1995, Environmental Problems Facing Urban Households in the City of Sao Paulo Brazil, Stockholm Environment Institute, Stockholm, 10.

Kamal, S.A. 1975, Rainy Season Disease and their Prevention,' Bombay Civic Journal of India, Vol. 22, No. 4. Bombay.

Koopman, J.S., et. al. 1981.'Food Sanitation and the socio-economic determinents of child growth in Columbia'. American Journal of Public Health, Vol. 71, No. 1, pp.31-37.

Kowata. K. 1963. Environmental Sanitation in India, Ludhiana.

Kapur. M.L., June 1987. 'Water Supply for Villages', Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 6, New Delhi, pp. 146-147.

Kumar, R., 1987. Environmental Pollution and Health Hazards in India, New Delhi.

Kotpal, R.L., Bali, N.P.1988. Concept of Ecology, Jalandhar.

Kumar V., June 1989,' Indoor Air Pollution', Science Reporter, New Delhi.

Kundu, A., 1993, 'In the Name of Urban Poor-Access to Basic Amenties, New Delhi.

Landis, P.H., 1954, Man in Environment-An Inroduction to Sociology, New York.

Larsely, S., 1979, Housing and Public Policy, London.

Lyapunor, B., 1966, Man and Hits Environment, Moscow.

Laconte, P., 1979, The Environement of Human Settlements, (Human Well Being in Cities), Vol. 2, Oxford.

Larkin, R.P. et. al., 1980, People, Environment and place : An Introduction to Human Geography, Ohio, U.S.A.

Lee, D.O., 1985, 'Britains Imported Air Pollution', Journal of Geographical Association Vol. 70, No. 308, London, pp. 257-263.

Loung, T.V., June 1987, 'Women, Water and Sanitation', Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 6, New Delhi, pp. 142-145.

Mehta, J.C., 1977, Habitat : Human Settlements and Environmental Health, New Asian Publisher.

Melting, J. (ed.), 1980. Housing, Social Policy and the State, London.

Molbak. K. et. al. 1981. 'Bacterial of Stored water and Stored Food : A potential Source of diarroes disease in West Africa', Edidemological inpematio, Vol. 102, pp. 309-316.

Maurya, S.D. 1989, Urbanization and Environmental Problems, Allahabad.

Mc Granahan, G. 1991, Environmental Problems and the Urban Households in Third World Countries, Stockholm Environment Institute, Stockholm.

Mehta, D., 1995, Urban Waste Managements : Future Portents.

Mueiler C.C., 1995, ' Environmental Problems inherent to a development Style : Degradation and poverty in Brazil, Environmental and Urbanisation, Nottinghum, London, Vol. 1, No. 2, pp. 67-84.

Mann, E.A. 1992, 'Boundaries and Identities - Muslims, Work and Status in Aligarh' New Delhi.

Mathur, A., 'Assessement of Air Pollution in Kota City', National Geographer, Vol. XXV, No. 1, Allahabad, pp. 63-67.

Park. C.C. 1980, Ecology and Environmental Management, London.

Pandey, M.R. et. al., 1987. 'Domestic smoke pollution and Acute Respiratory infection in Nepal'. In Shiefet. B., (eds.) Fourth International Conference on Indoor Air Quality and climate, Vol. 4, Berlin : Institute of Water, Soil and Air Hygiene, pp. 25-29.

Phillips, D.R., 1992. Health and Health Care in the Third World.

Pirkko, et. al. 1989,' Residential Heating : Choice of finish households', Economic Geography, Vol. 65, No. 2, Warester, pp. 130-142.

Peorbo, H., 1991. 'Urban Solid Waste Management in Bandung :towards and integrated resource recovery system,' Environment and Urbanization, Vol. 3, No. 1, Nottinghum, London, pp. 60-69.

Rajan, S., Azariah, J., 1989. 'A Survey on the Quality of Drinking Water of Madras City and Public Health Implications',

The Indian Geographical Journal, Vol. 64, No. 1, Madras.

Reddy, U.B., 1989, 'Impact of Urbanization on Cities' Environment in India, Maurya, S.D. (ed.), Urbanization and Environmental Problems, Allahabad.

Raval, J.P., Dec. 1977, 'Industries Involvement in Environmental Problems' Environmental Problems and Urban Administration, New Delhi, pp. 23-27.

Rai. S., 1992, Housing and Health in Varanasi Urban Agglomeration', Population Geography, Vol. 14, No. 1 & 2, Chandigarh.

Reddy, A.K.N., 1995, Environmental Actions : 'First Act locally then globally', The Hindu Survey of the Environment, Madras.

Strahler, A.H., Strahler, A.N., 1977, Geography of Man's Environment, New York.

Seth, G. K. 1988, Know your Environment, New Delhi.

Singh, R.B., 1988. Studies in Environment and Development, New Delhi.

Singh, J. Singh. D.N., 1988, An Introduction to Our Earth and Environment, Varanasi.

Singh, I.P., Tewari, S.C., 1980. Man and his Environment, New Delhi.

Sharma, R.D., June 1987. 'The man made Environment and Health Behaviour, Swasth Hind, Vol. XXXI, No. 6, New Delhi, pp. 141.

Singh, A.L., Fazal, S., Azam, F.; Rahman A., 1996. Income, Environment and Health A Household Level Study of Aligarh City-India HABITAT International, Vol. 20, No. 1, Oxford, pp. 77-91.

Swaminathan, M.1995, Slums in Bombay : Deprivation and the Environment', The Hindu Survey of the Environment, Madras.

Swaminathan, M., 1995. 'Aspect of Urban Poverty in Bombay', Environment and Urbanization, Vol. 7, No. 1, Nottinghum, London, pp. 133-144.

Sengupta, J., April 1994, A Doubtful Destination, Sunday, New Delhi, pp.40-41.

Sharma, J., 1995, 'Ill Effects of Noise', Woman's Era, Gaziabad, pp. 32-33.

Suryjadi, C., 1993, ' Respiratory diseases of mother and children and environmental factors among households in Jakarta', Environment and Urbanization, Vol. 5, No. 2, Nottinghum, London, pp. 78-86.

Songsere, J., McGranahan, G., 1993,'Environment, Wealth and Health : towards an analysis of intra-urban differentials within the Greater Accra Metroplition Area Ghana, Environmental and Urbanization, Vol. 5, No. 2, Nottinghum, London.

Satterthwaite, D., 1993. 'The impact on Health of Urban Environments.' Environment and Urbanization, Vol.5, No.2, Nottinghum, London, pp. 87-111.

Singh, S. 1991. Environmental Geography, Allahabad.

Sehteingart, M., 1989, 'The Environmental Problems Associated with Urban Development in Mexico City', Environment and Urbanization, Vol. 1, No. 1, Nottinghum, London, pp. 40-50.

Turk, J., Turk, A., 1983, Environmental Science , (Third Edition), NewYork.

UNFSCO, 1975, Water for the affluent Cholera for the Poor, Paris.

Vijayan, M., March 1988. 'Micro-algae in Waste Water pollution Control', Science Reporter, New Delhi, pp. 176-178.

WHO, 1984, Guidelines for Drinking Water Quality, World Health Oraganization, Geneva.

Whilelogy, J., 1992, Transport and the Environment Geography, Sheffield, Vol. 77, Part 1, pp. 91-93.

Wilson, B.R., 1968. Environmental Problems, U.S.A.

WHO, 1988a. 'Urban Vector Pest Control', Technical Report, Series No. 767, WHO, Geneva.

परिशिष्ट-1

प्रश्नावली

जौनपुर नगर में आवासीय पर्यावरणीय समस्यायें

1– वार्ड न   तारीख.

2– मुहल्ला/कालोनी.   समय ..

1– उत्तर देने वाले की सामान्य विशेषताये

1. लिग   (क) स्त्री   (ख) पुरूष

2. आयु (वर्ष में)

3. धर्म–   (क) हिन्दू   (ख) मुसलमान   (ग) सिख   (घ) क्रिश्चियन

प्रतिमाह कुल आय (रूपयों मे)

(क) <1.500   (ख) 1500–2 999   (ग) 3 000–4999   (घ) 5 000–9 000

(ङ) < 9.000

2– सामान्य पारिवारिक विशेषताये

1– परिवार का मुखिया कौन है?

(क) पिता   (ख) माता   (ग) अर्थाजनकर्ता पुरूष सदस्य   (घ) अन्य

2– एक मकान में निवास करने वाले परिवारो की सख्या

(क) एक   (ख) दो   (ग) तीन   (घ) तीन

3– एक मकान में रहने वाले सदस्यो की संख्या

(क)<5 या 5   (ख) 6–10   (ग) 11–15   (घ) 15

4– साक्षात्कृत परिवार के सदस्यो की सख्या

(क)<3 या 3   (ख) 4–6   (ग) 7–9   (घ) <9

3– पारिवारिक स्वामित्व

1– उपकरणोंके स्वामी

(क) पंखा   (ख) आयरन (प्रेस)   (ग) खाना पकाने की गैस   (घ) रेफ्रीजरेटर

(ङ.) श्याम श्वेत टीवी   (च) कूलर   (छ) रगीन टीवी   (ज) टेलीफोन

(झ) वीसीआर/वीसीपी (ञ) जनरेटर (ट) धुलाई की मशीन (ठ) गीजर

(ड) एअर कडीशनर (ण) कोई नही

2– वाहन का स्वामित्व

(क) साइकिल (ख) मोपेड (ग) मोटर साइकिल (घ) कार/जीप

4– शैक्षिक व्यावसायिक एव स्थानान्तरणीय स्तर

1– शैक्षिक स्तर

(क) शिक्षित (ख) अशिक्षित

2– यदि शिक्षित तो शिक्षा का स्तर

(क) प्राथमिक/मीडिल (ख) अशिक्षित (ग) स्नातक (घ) स्नातकोत्तर

(ड) डाक्टरेट(शोध उपाधियुक्त) (च) अन्य

3– व्यवसाय

(क) मैकेनिक/श्रमिक (ख) व्यापारी (ग) छात्र (घ) विश्वविद्यालय के अध्यापक

4– स्थानान्तरणीय स्तर

(क) स्थानान्तरण (ख) स्थानान्तरण नही

5– स्थानान्तरण का कारण

(क) उत्तम आवास (ख) उत्तम पर्यावरण (ग) रोजगार (घ) धर्म (ड) अन्य

5– आवासीय दशा

1– मकान का स्तर

(क) अपना मकान (ख) किराये का मकान (ग) सरकारी मकान

2– मकान का उपयोग

(क) केवल आवास (ख) आवास एव उद्योग (घ) आवास एवं व्यवसाय

3– मकान का प्रकार

(क) ईंट एव कक्रीट (ख) मिट्टी एवं फूस (घ) लकडी/झुग्गी झोपडी

4– मकान का तलीय क्षेत्र (वर्गफीट)

(क) <300 (ख) 300–1000 (ग) 1 001–2000 (घ) 2000

5— मकान के कुल कमरो की सख्या

(क) 1 (ख) 2—3 (ग) 4—5 (घ) <5

6— कमरो का औसत क्षेत्रफल (वर्गफीट मे)

(क) <100 (ख) 100—200 (ग) 201—300 (घ) <300

7— शयनकक्षो मे प्रति व्यक्ति तलीय क्षेत्र (वर्गफीट)

(क) <10 (ख) 10—20 (ग) 21—30 (घ) <30

8— क्या मकान मे उपयुक्त सवातन है?

उपयुक्त अनुपयुक्त

8— स्नानगृह एवं स्वच्छता दशाये

1— मकान मे स्नानगृह एव प्रसाधन सुविधा—

(क) है (ख) अनुपयुक्त

2— शौचालय का प्रकार

(क) व्यक्तिगत (ख) सार्वजनिक (ग) सडक के किनारे (घ) खेत मे

3— फ्लश शौचालय का प्रकार

(क) सेप्टिक टैंक/नगर पालिका सीवर (ख) खुली नाली

5— हस्त चालित शौचालय मे मल उठाने की व्यवस्था

(क) व्यक्तिगत सेवा (ख) नगर पालिका द्वारा

6— हस्त चालित शौचालय मे मल विसर्जन का साधन

(क) कूडे के साथ (ख) खुली नाली (ग) खेत मे (घ) ज्ञात नही

7— एक शौचालय का उपयोग करने वालो की संख्या

(क) एक (ख) 1—5 (ग) 6—10 (घ) <10

7— आवासीय जलापूर्ति

1— जलापूर्ति का स्रोत

(क) वैयक्तिगत अपना हैंण्डपम्प पाइप द्वारा अपना ट्यूबवेल

(ख) सार्वजनिक सडक के किनारे स्थित हैण्डपम्प सड़क के किनारे स्थित पाइप नल

खुला कूप

2– जलापूर्ति का स्तर–

(क) नियमित (ख) अनियमित

3– जलापूर्ति की गुणवत्ता

(क) सतोषजनक (ख) असतोषजनक

4– जलापूर्ति की मात्रा

(क) पर्याप्त (ख) अपर्याप्त

5– जल सग्रह का प्रकार खुले डिब्बो मे, बद डिब्बो मे (बर्तन में)

8– मलिन जल का अपवाह

1– मकान के मलिन जल का विसर्जन

(क) नाली मे (ख) मकान के चतुर्दिक (ग) मकान में ही

2– मकान के चतुर्दिक नाली

(क) है(ख) नहीं है

3– यदि है तो नाली का प्रकार

(क) खुली (ख) बंद

4– मकान के चतुर्दिक जल लगता है

(क) हा (ख) नही

5– जल एकत्तीकरण का प्रकार

(क) वर्षा का जल (ख) मलिन जल केवल (ग) दोनो ही

9– मकान का कूडा एवं ठोस अपशिष्ट

1– मकान के अन्दर अपशिष्ट का स्वरूप

(क) खुले डिब्बों में (ख) बद डिब्बो मे (ग) सग्रह नहीं करते हैं

2– मकान के कूडे के निस्तारण का स्वरूप

(क) सरकारी कूडे का ढेर (ख) सडक के किनारे (ग) जलाना

(क) चारो तरफ फैला हुआ (ख) नही दिखता

4– यदि सर्वत्र फैला है

(क) अधिक मात्राये (ख) लघु मात्रा मे (ग) नगण्य

5– मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट

(क) हा (ख) नही

6– नगर पालिका द्वारा कूडे का निस्तारण

(क) निस्तारण होता है (ख) नही होता है

7– कूडा निस्तारण की बारम्बारता

(क) दैनिक (ख) सप्ताह मे दो बार (ग) साप्ताहिक (ग) मासिक

10– मकान में रोगाणु एव जीवाणु

1– मकान मे कीटाणु एव जीव

(क) मक्खी (ख) मच्छर (ग) चूहा (घ) काक्रोच

(ङं) सभी (च) कोई नहीं

2– जीवाणु रोधक दरवाजो एव खिडकियो का उपयोग

(क) हा (ख) नही

3– मकान के अन्दर जीवाणु एव जीवो के प्रतिरोध के उपाय

(क) पपकैन (ख) मच्छररोधी अगरबत्ती (ग) मच्छरदानी (घ) प्राइवेट सेवा

(ङ.) सरकारी सेवा (च) कोई नही

4– क्या आप कमरे मे छिडकाव करते हैं

(क) छिडकाव करते हैं (ख) नही करते हैं

11– खाद्य प्रदूषण

1– खाना पकाने के उपरान्त खाने का समय

(क) तुरंत (ख) 1–2 घण्टे के बाद (ग) 3 घण्टे के बाद

3– खाना पकाने का माध्यम

(क) सशोधित तेल मे (ख) बिना सशोधित तेल में

12– मकान के अन्दर वायु प्रदूषण

1– खाना पकाने का स्थान

(क) अलग भोजनालय मे (ख) बरामदा मे (ग) बहुउद्देशीय कमरो मे

2– खाना पकाने मे प्रयुक्त ईंधन

(क) लकडी/कोयला (ख) मिट्टी के तेल से (ग) खाना पकाने की गैस

3– क्या आप मकान के अन्दर बीडी या सिगरेट पीते हैं?

(क) हा (ख) नही

4– यदि हां तो प्रतिदिन कितनी

(क) < 5 (ख) 6–10 (ग) 11–15 (घ) <15

5– क्या मकान में बाहर से धूआ आता है?

(क) हा (ख) नही

6– यदि हा तो वाह्य घूम का स्रोत

(क) पडोसी (ख) वाहन (ग) उद्योग (घ) सभी तीन

7– आतरिक धूए की विसर्जन क्षमता

(क) वातन द्वारा तुरत बाहर जाना है

(ख) मकान के अन्दर ही बना रहता है

13– मकान के अन्दर ध्वनि प्रदूषण

1– मकान मे ध्वनि प्रदूषण

(क) हा (ख) नही

2– यदि हां तो ध्वनि प्रदूषण का स्रोत

(क) घरेलू सामानो से (ख) वाहनो एव उद्योगो से (ग) लाउडस्पीकर से

(घ) बाजार/रेलवे (ड) सभी

परिशिष्ट – 2

नगर के विभिन्न वार्डो में आय के अनुसार चयनित घरों का वर्गीकरण 1999

वार्ड न0	आय के अनुसार वर्गीकरण					वार्ड मे चयनित कुल मकानो की सख्या	वार्ड न0	आय के अनुसार वर्गीकरण					वार्ड मे चयनित कुल मकाना की सख्या
	अत्यधिक कम	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च			अत्यधिक कम	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च	
1	5	8	8	7	8	36	14	7	8	2	11	7	35
2	14	10	37	15	9	85	15	8	5	13	20	20	66
3	12	23	3	23	16	77	16	20	9	9	21	13	64
4	14	18	8	14	12	66	17	10	8	25	20	6	69
5	5	6	7	10	6	34	18	7	12	3	16	4	42
6	36	17	48	6	6	113	19	8	5	11	22	5	51
7	17	15	14	10	6	62	20	6	10	12	6	9	43
8	18	15	22	18	15	88	21	15	18	28	6	4	71
9	10	8	20	24	8	70	22	7	8	22	9	4	50
10	13	7	26	31	5	82	23	20	9	26	8	3	66
11	14	10	8	13	7	52	24	12	8	6	23	4	53
12	18	12	10	13	7	60	25	6	18	20	9	6	59
13	13	10	21	9	7	60	26	11	6	3	1	5	26

योग – अत्यधिक कम आय वर्ग के 318, कम आय वर्ग के 283, मध्यम आय वर्ग के 412, उच्च आय वर्ग के 365 अति उच्च आय वर्ग के 202 मकान कुल 1580 मकान।

परिशिष्ट–3

जौनपुर नगर के वार्ड एवं उसमें स्थित मुहल्लों के नाम

वार्ड न	वार्ड का नाम	सम्मिलित मुहल्लो के नाम
1–	मतापुर	जगदीश पट्टी
		गंगा पट्टी
		हिन्दी पट्टी
		रामनगर भडसरा
		किसुनपुर
		मतापुर
2–	हरखपुर	समोपुर
		जगदीशपुर
		बेसहूपुर
		हरखपुर
		बाजार शाहगंज
		चितरसारी
		अबीपुर
		धन्नोपुर
		चकनाथूपुर
		जियनीपुर
		बेगमगज
3–	उमरपुर	रूहट्टा
		अहमद खां मण्डी
		गूलरचक
4–	जहागीराबाद	उमरपुर द्वितीय
5–	अहियापुर	अहियापुर
		धरनीधरपुर

		खासनपुर
		भौराजीपुर
		वाजिदपुर उत्तर
6—	वाजिदपुर	वाजिदपुर
		कन्हईपुर
7—	ईसापुर	बोदकरपुर
		आराजी गुर्जी खानी
		सुल्तानपुर हाय
		सुक्खीपुर
8—	हुसैनाबाद	तहसील सदर
		शेखपुर
9—	मियापुर	
10—	भण्डारी	भण्डारी
		बगीचा शाह मुहम्मदपुर
		जोतापट्टी
		कुरचनपुर
		अकबर आदमपुर
		रसूलाबाद
11—	कटघरा	कटघरस
		तारापुर
		नईगज
		नईबाजार
12—	चाचकपुर	चाचकपुर
		सिपाह
		जमीन सिपाह
		वाग हंसन

		गदन अरजानी
		गोपालपुर
		अर्जन
		मैनपुर
		शेख वहाउद्दीनपुर
		मकदूमशाह बडे
14—	ओलन्दगज	ओलन्दगंज
		अबीरगढ टोला
		जोगियापुर
		कालीकुत्ती
15—	नक्खास	नक्खास
		दिलाजाकपुर
		मालीपुर
16—	रासमण्डल	रासमण्डल
		केरारकोट
		कसेरी बाजार
		बलुआघाट
17—	मछरहट्टा	मछरहट्टा
		ख्वाजादोस्त
		बल्लोचटोला
18—	मण्डी नसीब खा	मण्डी नसीब खां
		मरदानपुर
		शहाबुद्दीनपुर
19—	पानदरीबा	प्रेमराजपुर, पानदरीबा
		सराय मुजाहिद
		मोहाल गाजी
		बाजार तोल्हा
		मिसिरपुर

		शाहइस्माइल
		खालिसपुर
		बाजारभुआ
20—	मुफ्ती मुहल्ला	मुल्ला टोला
		मोहाल गाजी
		हमाम दरवाजा
		मुफ्ती मुहल्ला
		कोठियावीर
		छत्तात्तर
21—	ताडतला	मखदूम शाह अढन
22—	अबीरगढ टोला	अजमेरी
		बाग हाशिम
		अबीरगढ टोला
23—	उर्दू	फिरोशेपुर
		बगीचा उमर खा
		उर्दू
24—	ख्वाजगी टोला	आलमगंज
		अलफस्टीनगज
		ख्वाजगी टोला प्रथम
25—	ढालगर टोला	रिजवी खां
		आलम खा
		ढालगर टोला
26—	मीरमस्त	मीरमस्त
		शेख मुहामिद।